आनन्द ज्योति

दिव्यजीवन परिक्रमा

30 अप्रैल, 1896 खेओड़ा	पूर्वबंगाल त्रिपुराजिलान्तर्गत दादी के पितृ गृह में आविर्भाव, निर्मलासुन्दरी नाम ।
1897 विद्याकूट	पिता विपिनविहारी भट्टाचार्य के पैतृक आवास में नौ-दस महीने के अल्पवय में ज्योतिर्मयपुरुष द्वारा माँ की अर्चना ।
1898 सुलतानपुर	मामा के घर माता मोक्षदासुन्दरी देवी की गोद में बैठकर दो वर्ष की उम्र में कीर्तन सुनकर भाव । वाल्यकाल से ही विशेष अवसर व परिस्थितियों में भाव परिवर्तन ।
1903 खेओड़ा, सुलतानपुर	आठ नौ वर्ष की अवस्था में दोनों ग्रामों के विद्यालयों में विद्याध्ययन ।
फरवरी 1909, खेओड़ा	बारह वर्ष दस माह की अवस्था में ढाका विक्रमपुर निवासी श्री रमणीमोहन चक्रवर्ती के साथ विवाह । (कालान्तर में बाबा भोलानाथ)
1911 श्रीपुर व नरुन्दी	जेठ श्री रेवतीमोहन चक्रवर्ती के कर्मस्थल में । कर्मरता माँ की समय-समय पर भावावस्था ।
1914 अष्टग्राम	18 वर्ष की अवस्था में भोलानाथ जी के कर्मस्थल अष्टग्राम आना, जयशंकर सेन की स्त्री द्वारा 'खुशी की माँ' नामकरण, श्री हर कुमार की भविष्यवाणी, "एक दिन विश्व जगत् आपको माँ सम्बोधन से पुकारेगा ।" क्षेत्र बाबू द्वारा देवीरूप में दर्शन व प्रणाम, कीर्तन सुनकर भावावस्था, शरीर में आसनादि का प्रकाश ।
1914-1918 विद्याकूट	कटाक्ष करने वाले दो युवकों पर तीव्र दृष्टिपात व चरित्र परिवर्तन, धर्मनिष्ठ व्यक्तियों का माँ के प्रति विशुद्ध आकर्षण ।
1918-1924 बाजितपुर	22 वर्ष की उम्र में काली पूजा के समय पद्मासनादि का प्रकाश । समय-समय पर स्वतःस्फूर्त विभिन्न आसन व यौगिक क्रियाएँ ।
1922	झूलन पूर्णिमा (श्रावणी) तिथि दीक्षा का खेल । ममेरे भाई की जिज्ञासा "आप कौन हैं" माँ का उत्तर "पूर्णब्रह्म नारायण" । माँ के स्पर्श से बाबा भोलानाथ की समाधि । शैव, शाक्त, वैष्णव आदि विभिन्न साधनमार्ग की क्रियायें, षट्चक्र ग्रन्थिचक्रादि तथा देव देवियों का स्वतः प्रकाश, अरवदेशीय महापुरुष की चर्चा, बाबा भोलानाथ की दीक्षा । श्रीमुख से स्वतः संस्कृत भाषा में प्रश्नोत्तर । निरंतर कंठ में बीजमन्त्र । संस्कृत मंत्रों का उच्चारण । कुण्डली देकर बात करना ।
अप्रैल, 1924 शाहबाग (ढाका)	नवाब स्टेट शाहबाग में बाबा भोलानाथ की नौकरी । "शाहबाग की माँ" नाम से परिचित । आहार में परिवर्तन, स्पर्श द्वारा बालक स्वस्थ । सिद्धेश्वरी का सन्धान, सिद्धेश्वरी में सात दिन, वहाँ विविध अलौकिक घटनाएँ । श्री ज्योतिषचन्द्र राय का प्रथम मातृदर्शन वर्ष का अंत ।

1925	रमना काली बाड़ी में यातायात, अरबदेशीय फकीर को सशिष्य सूक्ष्म में देखना । प्राणगोपाल बाबू द्वारा माँ का पहला चित्र । पक्षाघात-ग्रस्त बालिका की रोग-मुक्ति । फलाहार करने का ख्याल, बृहस्पति एवं सोमवार किञ्चित् अन्नग्रहण, बाउल बाबू के आग्रह पर काली पूजा । बलि देने पर बकरे के शरीर से रक्तपात न होना । कालीप्रसन्न कुशारी की धर्मपत्नी द्वारा खीर भोग । परिमाणाधिक मात्रा में माँ का खीर ग्रहण । माँ की परीक्षा लेने पर विपरीत फल । भाईजी द्वारा सिद्धेश्वरी में "श्री श्री माँ आनन्दमयी" नामकरण ।
जनवरी, 1926 शाहबाग	डा. शशांक मोहन मुखर्जी का अपनी कन्या आदरिणी के साथ मातृ-सान्निध्य-लाभ । ढाका मेडिकल कालेज के प्रांगण में दरिद्र-नारायण सेवा के अवसर पर परोसना एवं प्रेम से कुष्ठरोगी को खिलाना । सबके साथ बैठकर प्रसाद पाना । सिद्धेश्वरी में प्रथम गृह-निर्माण का निर्देश । चैत्र नवरात्रि पर वासन्ती पूजा, योगेश दादा का मातृ दर्शन ।
1926 देवघर	प्राणगोपाल बाबू के अनुरोध पर सिद्ध पुरुष बालानन्द स्वामी से साक्षात्कार, मार्ग में कलकत्ते में पहली बार पदार्पण ।
1926 शाहबाग	फकीर की कब्र पर कुरान के शब्दों का उच्चारण नमाज की क्रिया । शून्य में काली मूर्ति दर्शन । दीपावली पर माँ के द्वारा विशेष काली पूजा, काली भाव, बाबा भोलानाथ द्वारा माँ की पूजा । यज्ञाग्नि को सुरक्षित रखने का निर्देश । काली मूर्ति विसर्जित नहीं अपितु संरक्षित । कमलाकान्त ब्रह्मचारी काली सेवा में ।
1927 कलकत्ता	शाहबाग से हरिद्वार कुम्भ मेले में जाने के समय कुछ दिन कलकत्ते में । नवाबजादी प्यारी बानो के घर कीर्तन, राजा जानकीनाथ एवं सम्भ्रान्त व्यक्तियों का मातृ दर्शन ।
1927 वाराणसी	कुंजमोहन बाबू के घर पर "नेपाल दा" (नारायण स्वामी) का प्रथम मातृ दर्शन । जितेन्द्र ठाकुर से साक्षात्कार । गृहस्वामी कुंजबाबू द्वारा देवीरूप में दर्शन व पूजन ।
1927 हरिद्वार	धर्मशाला में सात दिन । ब्रह्मकुण्ड में स्नान, हृषीकेश कालीकमली धर्मशाला में, लछमनझूला दर्शन, वृंदावन, मथुरा होते हुये ढाका, शाहबाग । प्रथम तेरह दिन पुनः 23 दिनों तक जल त्याग ।
1927	बाबा भोलानाथ के साथ विन्ध्याचल चुनार जयपुर, भरतपुर आदि विविध स्थानों पर भ्रमण । शाहबाग में माँ का जन्म- दिन ।
1928 वाराणसी	पं. गोपीनाथ कविराज का प्रथम मातृ दर्शन । पहली बार सबके सामने बैठकर सत्प्रसंग आलोचना । विन्ध्याचल आश्रम ।
1928 सिद्धेश्वरी	बाबा भोलानाथ को काली मंदिर के पास छोटी कुटिया में रहकर क्रिया आदि करने का निर्देश ।
1928 तारापीठ	बाबा भोलानाथ को साधना हेतु भेजना, साथ में यज्ञाग्नि लेकर योगेश दा ।
1928 सिद्धेश्वरी	बड़ा गृह निर्माण, आदि आश्रम । गह्वर के स्थान पर वेदी का निर्माण, प्रथम जन्मोत्सव, बाबा भोलानाथ द्वारा माँ की पूजा । किसी भक्त गृह में श्रीराम ठाकुर का मातृ दर्शन, भगवती सम्बोधन, साष्टाङ्ग प्रणाम ।

13 अप्रैल, 1929 रमना (ढाका)	आश्रम की जमीन पर पदार्पण, सिद्धेश्वरी में जन्मोत्सव, उत्सव के अंतिम दिन रमना के नवीन आश्रम में बाउल बाबू द्वारा फूलों का शृंगार । श्री मुख से स्तोत्रादि । दादा महाशय के साथ एकाकी ढाका त्याग, भोलानाथ के आदेश से भाई जी भी साथ । चट्टग्राम, काक्स बाजार, आदिनाथ, चन्द्रनाथ होते हुए हरिद्वार देहरादून की ओर । सहस्रधारा दर्शन । हरिद्वार में भोलागिरि आश्रम में ।
1929 सिद्धेश्वरी	आमिषत्याग, 100 घड़े जल से सिर धोना, भावाल सैन्यासी का मातृ दर्शन व पुनः राज्य प्राप्ति की प्रार्थना । अतुल दा अन्नपूर्णा की सेवा में ।
1930 सिद्धेश्वरी	सिद्धेश्वरी आश्रम में रहने का निर्देश बाबा भोलानाथ को ।
1930 सिद्धेश्वरी	बाबा भोलानाथ द्वारा दीक्षा देना प्रारम्भ ।
मई, 1930 रमना (ढाका)	आश्रम में जन्मोत्सव । दक्षिण यात्रा, द्वारका, विन्ध्याचल, गया, आदिनाथ चन्द्रनाथ आदि होते हुये ढाका प्रत्यावर्तन ।
1931 सिद्धेश्वरी	रमना आश्रम में मंदिर-निर्माण, साधन-समर आश्रम के श्री अतुल ठाकुर द्वारा माँ की पूजा, महेन्द्रनाथ सरकार आदि दार्शनिकों की सभा में प्रश्नोत्तर, श्रीमुख से आत्मपरिचय, जन्मोत्सव के समय अन्नपूर्णा, शिव, काली, आदि मूर्तियों की स्थापना । स्त्रियों को लेकर रात्रि कीर्तन का शुभारम्भ । सिद्धेश्वरी तालाब में स्नान व बालभोग । अन्नपूर्णा मंदिर के भोग के नियम । खुकुनी दीदी (गुरुप्रिया) का गृहत्याग, बाजितपुर पूर्वनिवास स्थान पर सबके साथ जाना, साधना-स्थल से मृत्तिका लाकर पंचवटी में रखना, खुकुनी दीदी के लिए दंड व ब्रह्मचारी वेष, ज्योतिष दादा को जनेऊ । सिद्धि माँ से साक्षात्कार ।
1932 रमना	अन्नपूर्णा मंदिर की मूर्तियों का परिवर्तन । माँ के गहनों से मूर्ति के अलंकार आदि का निर्माण । सिद्धेश्वरी आश्रम में वेदी पर शिव-स्थापना । बाबा भोलानाथ द्वारा प्रतिष्ठा । माँ का जन्मोत्सव । ज्योतिषदादा व बाबा भोलानाथ के साथ अज्ञात पथ की ओर रवाना ।
जून, 1932 देहरादून	देहरादून से अनतिदूर रायपुर गाँव के जीर्ण शिवालय में । वाराणसी में गंगास्नान करते हुए ज्योतिषबाबू का डूबना, किसी अपरिचित व्यक्ति द्वारा रक्षा, रायपुर में माँ के वस्त्रों का गीला होना ।
मार्च, 1933 देहरादून	रायपुर में हरिराम जोशी का मातृ दर्शन, मसूरी पधारना ।
मई, 1933 देहरादून	ब्र. कमलाकान्त के साथ बाबा भोलानाथ को बद्रीनाथ भेजना। भाईजी के साथ उत्तरकाशी पदार्पण ।
जुलाई, 1933 देहरादून	आनन्द चौक मंदिर देहरादून में श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू व कमला नेहरू माँ के सान्निध्य में ।
14 जनवरी, 1934 देहरादून	मनोरमा दीदी व खुकुनी दीदी का नामकरण क्रमशः कृष्णप्रिया एवं गुरुप्रिया तथा पीत वस्त्र धारण ।
मार्च, 1934 सोलन	भाईजी के साथ सोलोगरा मंदिर की गुफा में दो या तीन रात्रि वास । शोगीबाबा से भेंट । बाघाट नरेश दुर्गा सिंह जी का मातृ दर्शन ।

1934 कनखल	गुरुप्रिया दीदी के पिता डा. शशांक मोहन मुखर्जी का स्वामी मंगल गिरि से संन्यास ग्रहण, अखण्डानन्द गिरि नामकरण । मंगलगिरि आश्रम में माँ ।
जून, 1934 मसूरी	श्रीमती कमला नेहरू का माँ के पास रात्रिवास, माँ द्वारा सोने का कंगन प्रदान । बाबा भोलानाथ द्वारा मन्दिर निर्माण कार्य उत्तरकाशी में ।
1935 देहरादून	डूँगा में चौ. शेरसिंह के आह्वान पर माँ का पदार्पण ।
	किशनपुर आश्रम हेतु क्रीत भूमि पर जन्मोत्सव, योगेन्द्रनगर के निकट तारानन्द आश्रम में पधारना ।
अगस्त, 1935 उत्तरकाशी	कालीमंदिर प्रतिष्ठा ।
अक्तूबर, 1935 अलमोड़ा	भाईजी के साथ अलमोड़ा, भुवाली में आते जाते कमला नेहरू को देखने अस्पताल में ।
नवम्बर, 1935 वाराणसी	इटावा, फैजाबाद, अयोध्या होते हुए वाराणसी पाण्डे धर्मशाला में । श्रीमद् विशुद्धानन्द परमहंस से साक्षात्कार, बाबू भगवान दास का मातृ दर्शन ।
दिसम्बर, 1935 तारापीठ	श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ ठाकुर की पत्नी संज्ञादेवी माँ के पास, मौलवी का प्रेमगोपाल नामकरण ।
दिसम्बर, 1935 कलकत्ता	स्वामी योगानन्द परमहंस माँ की सन्निधि में ।
जनवरी, 1936 तारापीठ	विमला माँ, आनन्द भाई माँ की सन्निधि में । गुरुप्रिया दीदी व मरणी का जनेऊ ।
	श्री अवनी मोहन शर्मा के आह्वान पर बहरमपुर व मुर्शिदाबाद में । वृन्दावन वर्धमान कुंज में ।
मई, 1936 देहरादून	नवीन आश्रम में जन्मोत्सव । प्रसिद्ध पहलवान राममूर्ति का मातृ दर्शन ।
जून, 1936 सोलन	बाघाट नरेश दुर्गा सिंहजी का योगी भाई नाम । शिमला काली बाड़ी में माँ, बंगाली भक्तों का आकर्षण ।
अगस्त 1936	श्री रामपुर से विराज मोहिनी दीदी एवं कमलदा (विरजानन्द) के साथ एक वस्त्र लोटा कम्बल लेकर अज्ञातवास में । पुरी में हरिदास मठ के वैष्णव श्यामदास बाबा से भेंट । आगरा, मथुरा, वृन्दावन सुलतानपुर अयोध्या, लखनऊ, होते हुए इटावा । विभिन्न घटनाओं का प्रकाश । नैमिषारण्य, लखनऊ बरेली होते हुए नैनीताल में । आगरा, दिल्ली, अमृतसर, लाहौर, भ्रमण । तारापीठ से बाबा भोलानाथ के साथ आसाम मुक्तानन्दस्वामी के आश्रम में । शिलांग, राजशाही होकर नवद्वीप में ।
जनवरी, 1937 नवद्वीपं	सेवादासी नामक वैष्णव साधिका एवं वंशी दास बाबा की माँ से मुलाकात । सुरधुनी के तट पर संकीर्तन ।
जनवरी, 1937 कलकत्ता	श्री शचीकान्त घोष द्वारा स्टूडियो में, सुरेन्द्र बनर्जी द्वारा फिल्म लेना ।
फरवरी, 1937 चट्टग्राम	राजराजेश्वर मंदिर में कीर्तन, सीताकुण्ड गमन, शंकर मठ में । भाईजी (ज्योतिषचन्द्र राय) के गृह प्रांगण में । हिन्दू मुसलमान सभी का मातृ दर्शन ।
	काक्स बाजार में हाथी द्वारा माँ का स्वागत । समुद्र किनारे चित्र । रामकूट बौद्ध मन्दिर व विष्णु मंदिर में । रामू में धोपाबाड़ी मोहल्ला तथा मेहतर पट्टी में कीर्तन ।
अप्रैल, 1937 नैनीताल	अमेरिकन महिला के साथ अलमोड़ा । मार्ग में महिला का माँ को संतरा खिलाना ।

अप्रैल, 1937 अलमोड़ा	कैलास यात्रा का निमन्त्रण पर्वतीय कन्याओं द्वारा । बरेली के एक उपवन में कृष्ण रूप में सजाकर भक्तों द्वारा विभिन्न प्रकार से चित्र लेना ।
मई, 1937 कलकत्ता	श्री दिलीप राय का मातृ दर्शन ।
1937 खेओड़ा	जन्मस्थान पधारना, रमना आश्रम में जन्मोत्सव में माँ को पाकर भक्तों का आह्लाद, आनन्दाश्रम की कर्त्री चारुशीला देवी द्वारा मातृ वन्दना ।
जून, 1937 अलमोड़ा	बाबा भोलानाथ, अखण्डानन्द गिरि, भाईजी (श्रीज्योतिषचन्द्र राय) गुरुप्रिया दीदी कतिपय भक्तों के साथ कैलास यात्रा । मार्ग में अस्कोट राजमहल में । गार्बियांग में शारदा माँ की शिष्या रूमादेवी तथा मैसूर के नारायण स्वामी से परिचय । मानसरोवर के तट पर भाईजी का संन्यासभाव, श्रीमुख से संन्यास मन्त्रोच्चारण । जुगोमको में लामाओं का मन्दिर दर्शन । धानकेना में कैलास परिक्रमा पाँच काषाय वस्त्रधारी साधुओं का सूक्ष्मदेह में माँ के साथ परिक्रमा, गौरी कुण्ड में पूजा क्रियादि, लौटते हुए राक्षस तालाब में घोड़े पर माँ । मार्ग में (ज्योतिष दादा) भाईजी अस्वस्थ ।
अगस्त, 1937 अलमोड़ा	कैलास यात्रा समाप्त । भाईजी की अस्वस्थता में वृद्धि ।
17 अगस्त, 1937	भाईजी का महाप्रयाण । पाताल देवी में भाईजी की समाधि । कन्यापीठ विद्यापीठ की सूचना । माँ की भावावस्था, शरीर में यौगिक क्रियादि ।
सितम्बर, 1937 गुजरात	स्वामी असीमानन्द के साथ नर्मदा की ओर । गुजराती भक्तों का माँ के प्रति तीव्र आकर्षण, अम्बाशंकर वैद्यराज, कान्तिलाल, रतिलाल आदि का मातृ दर्शन ।
नवम्बर, 1937 तारापीठ	अखण्डानन्दजी, बाबा भोलानाथ व रूमादेवी के साथ तारापीठ में, "कृष्णकन्हैया वंशी बजैया ... पद का प्रकाश ।
दिसम्बर, 1937	कलकत्ते में ७१ वर्षीय पिता श्री विपिन विहारी भट्टाचार्य का देहावसान । अंत समय संन्यास मन्त्र ।
जनवरी, 1938 हरिद्वार	डॉ. पंत द्वारा निजवासभवन का नामकरण "आनन्दमयी सेवासदन" । हरिद्वार कुम्भ मेला । किरणचांद दरवेश का माँ से साक्षात्कार एवं वार्तालाप । बाबा भोलानाथ द्वारा विलास (उदास जी) का जनेऊ ।
अप्रैल, 1938 देहरादून	पं. श्री गोविन्दवल्लभ पंत का मातृ दर्शन । किशनपुर आश्रम में भोलानाथ जी की संकटपूर्ण अवस्था ।
मई, 1938 रमना (ढाका)	गुरुप्रिया दीदी की उपस्थिति में भक्तों द्वारा माँ का जन्मोत्सव मनाना ।
6 मई, 1938	बाबा भोलानाथ का शरीर त्याग, व उनके पवित्र देह की हरिद्वार में सलिल समाधि, सोलहवें दिन साधु भण्डारा ।
सितम्बर, 1938 मसूरी	दलाईलामा द्वारा माँ को भजन सुनाना ।
25 सितम्बर, 1938 हरिद्वार	हरिद्वार में कन्याश्रम प्रतिष्ठा, आशुतोष वन्द्योपाध्याय की पत्नी द्वारा कृष्णरूप में माँ का श्रृंगार ।
6 अक्तूबर, 1938 खेओड़ा	लक्ष्मीचरण भट्टाचार्य की पत्नी द्वारा आश्रम के लिए भूमिदान । शारदी पूर्णिमा की रात्रि में जन्मस्थान पर कीर्तन ।

12 अक्तूबर, 1938 इलाहाबाद	शिवप्रसाद बाबू के घर विशिष्ट व्यक्तियों का मातृ दर्शन । सर तेजबहादुर सप्रू, डॉ. पन्नालाल आई. सी. एस, सी. वाई. चिन्तामणि जस्टिस मुल्ला, खान बहादुर सैयद, एन. पी. अस्थाना, पी. एन. सप्रू, एल. डी. जोशी, डॉ. ताराचन्द आदि ।
20, अक्तूबर, 1938, कलकत्ता	दक्षिणेश्वर में नेताजी सुभाषचन्द्र वसु का माँ के साथ वार्तालाप ।
अक्तूबर 1938, रमना	आश्रम में कुमारी, सधवा, विधवा एवं पुरुषों के द्वारा स्वेच्छा से दिये गये केशों से तकिया बनाना ।
नवम्बर, 1938 देवघर	बालानन्द ब्रह्मचारी के आश्रम में मोहनानन्द ब्रह्मचारी द्वारा माँ को नामावली पहनाकर वैरागी सजाना ।
जनवरी, 1939 गुजरात	चांदोद, व्यास, अनसूया आदि नर्मदा तट के विभिन्न स्थान एवं मन्दिरादि दर्शन । बड़ोदा,रतलाम मथुरा होते हुए नवद्वीप के खेयाघाट में एक टूटी फूटी नौका पर १३ दिनों तक एकाकिनी रूमादेवी के साथ अज्ञातवास में रहना ।
अप्रैल, 1939 हरिद्वार	चैत्र संक्रान्ति पर माता मोक्षदासुन्दरी देवी का मंगल गिरि (निर्वाणी अखाड़ा) से संन्यास-ग्रहण, स्वामी मुक्तानन्द गिरि नामकरण । महन्त गिरिधर नारायण पुरी जी का मातृ दर्शन ।
मई, 1939 उत्तरकाशी	मसूरी से पैदल उत्तरकाशी जाते हुए धरासू चट्टी में गुरुप्रिया दीदी द्वारा जन्मदिन की पूजा । तिथि पूजा आश्रम में । गंगोत्री रवाना, गंगनानी में कृष्णानन्द जी का मातृ दर्शन । गंगोत्री में कृष्णाश्रम जी से साक्षात्कार, मंदिर दर्शन । स्वामी परमानन्द जी द्वारा व्यवस्था ।
अगस्त, 1939	शिमला, कलकत्ता, बहरमपुर होते हुये रमना आश्रम पहुँचना । झूलन पूर्णिमा खेओड़ा में । सुलतानपुर, विद्याकूट, चट्टग्राम आदि स्थानों पर पधारना । सर्वत्र आनन्दोत्सव ।
अक्तूबर, 1939	ढाका से कलकत्ता, जमशेदपुर, वाराणसी, शिमला होते हुए नवरात्र में माँ का सुकेत राज्य में पदार्पण, राजकीय अभ्यर्थना । तारानन्द स्वामी के मंदिर की प्रतिष्ठा के उपरान्त बैजनाथ, ज्वालामुखी, कांगड़ा पीठ, अमृतसर स्वर्णमन्दिर दर्शन ।
फरवरी, 1940 पुरी	आश्रम भवनों का निर्माण ।
अगस्त, 1940	झूलन पूर्णिमा में जन्मस्थान पर शिव प्रतिष्ठा ।
अक्टूबर, 1940	रायपुर आश्रम, प्राचीन शिवमंदिर व संलग्न भूमि विधिवत् माँ को अर्पण ।
मई 1941 रायपुर	जन्मोत्सव । किशनपुर आश्रम में विद्यापीठ प्रतिष्ठा । लोकनाथ ब्रह्मचारी को सूक्ष्म में देखना ।
अगस्त 1941, रायपुर	जमुनालाल बजाज का माँ के प्रति आकर्षण, मातृ सान्निध्य में नौ दिन ।
सितम्बर 1941	वाराणसी में चूड़ामणि योग पर सबके साथ गंगा स्नान । दो महीने वाराणसी में ।
फरवरी, 1942 वर्धा	गोपुरी में माँ । सेवाग्राम महात्मागांधी के पास रात्रियापन एवं बापू से मधुर वार्तालाप । विनोबाभावे, बाबू राजेन्द्र प्रसाद एवं कस्तूरबा का मातृ दर्शन ।
मार्च, 1942 सागर	चितोरा धर्मशाला में ।
मई, 1942 देहरादून	रायुपर में जन्मोत्सव ।
अक्तूबर, 1942	शारदीय दुर्गोत्सव रायपुर आश्रम ।
मार्च 1943, विन्ध्याचल	प्रभुदत्त ब्रह्मचारी का मातृ दर्शन ।

मई, 1943 अलमोड़ा	भाईजी का समाधिमन्दिर, माँ की कुटिया का निर्माण । उदयशंकर जी द्वारा माँ को अपने निवास पर ले जाना । जन्मोत्सव की पूजा, अस्ट्रियन महिला मिस ब्लैंका का मातृ दर्शन । प्रभुदत्तजी के आह्वान पर मुजफ्फरपुर के संत सम्मेलन एवं देहरादून सहस्रधारा में अनुष्ठित भागवत सप्ताह में साधुसमाज में माँ की प्रथम उपस्थिति । हरिबाबा का प्रथम मातृ दर्शन ।
अक्तूबर,1943 अलमोड़ा	मीरतोला में साधिका यशोदा माँ से साक्षात्कार । शारदीय दुर्गोत्सव ।
जनवरी, 1944 इलाहाबाद	प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी के आश्रम में । प्रभुदत्तजी के साथ हवाई जहाज से दिल्ली आना । करपात्रीजी के यज्ञ में उपस्थिति । वृन्दावन में श्री उड़िया बाबाजी के आश्रम में माँ ।
1944 फरवरी,	इलाहाबाद में पण्डित मदन मोहन मालवीय से साक्षात्कार ।
मार्च, 1944 वाराणसी	आश्रम हेतु क्रीत भूमि पर पदार्पण । चैत्र नवरात्र पर आश्रम के नवीन भूखंड पर प्रभुदत्तजी, चक्रपाणिजी, आदि महात्माओं की उपस्थिति में वासन्ती पूजा ।
अप्रैल, 1944 देहरादून	कल्याण वन नये आश्रम की नींव ।
मई, 1944 अलमोड़ा	आश्रम भवन-प्रतिष्ठा एवं जन्मोत्सव ।
जुलाई, 1944, कलकत्ता	बालिगञ्ज एकडालिया रोड स्थित कलकत्ता में प्रथम आश्रम । माँ की उपस्थिति ।
8 सितम्बर, 1944	वाराणसी में स्वामी अखण्डानन्द गिरि का देहावसान ।
अक्टूबर, 1944, इलाहाबाद	कृष्ण कुंज में दुर्गापूजा, गोपाल ठाकुर से भेंट ।
नंवम्बर 1944 वाराणसी	अस्सी घाट पर करपात्रीजी द्वारा आयोजित यज्ञ में ।
दिसम्बंर, 1944 विन्ध्याचल	गोपाल ठाकुर द्वारा माँ के आश्रम में पहली बार गीता जयंती ।
जनवरी 1945 द्वारका	शारदा मठ के शंकराचार्य के सान्निध्य में ।
1945 सारनाथ	बुद्धमन्दिर में भक्तों के साथ आध्यात्मिक आलोचना । डॉ. महेन्द्र सरकार माँ के पास ।
अप्रैल, 1945	वाराणसी के नवीन आश्रम में वांसन्तीपूजा, स्मृति मन्दिर-प्रतिष्ठा ।
मई, 1946 रमना, ढाका	रमना में बाबा भोलानाथ के मन्दिर की प्रतिष्ठा ।
मई, 1946 (कलकत्ता)	बालिगंज के नये आश्रम में जन्मोत्सव, १०८ वर्षीय रसिक मोहन विद्याभूषण से साक्षात्कार । जन्मोत्सव के पूर्व हरिबाबा के साथ ढाका गमन ।
अक्टूबर,1946	योगीभाई के आग्रह से सोलन में दुर्गापूजा । दिल्ली में गाँधीजी की प्रार्थना-सभा में ।
जनवरी, 1947	मकर संक्रान्ति पर वाराणसी आश्रम में तीन वर्ष-व्यापी अखण्ड सावित्री महायज्ञ प्रारम्भ ।
मई, 1947 वाराणसी	माँ का जन्मोत्सव ।
मई, 1947 देहरादून	पंडित जवाहरलाल नेहरू, व सरदार पटेल माँ के पास । रामलाल की जीवन-रक्षा । उसके अन्तिम समय यमदूत का आगमन एवं माँ के कहने पर यमदूत का लौट जाना ।
जुलाई, 1947 देहरादून	कल्याणवन में पंचवटी स्थापन ।
अक्टूबर, 1947 जलापाईगुड़ी	बोदा में शारदीय दुर्गोत्सव ।
नबम्बर, 1947 दार्जिलिंग	दार्जिलिंग धीर धाम में माँ ।
मई, 1948	दिल्ली में जे. के. सेन के घर पर जन्मोत्सव । हरिबाबा, शरणानन्द जी, चक्रपाणि जी, ग्वालियर के रामदास बाबा, रामकिंकर जी आदि उत्सव में सम्मिलित ।

जून, 1948	अलमोड़े से महात्माओं के साथ धवलछिना, वारछिना, जागेश्वर पधारना ।
जनवरी, 1949	अम्बाला में साधु सन्तों द्वारा पुष्पवृष्टि करते हुए माँ का स्वागत । त्रिवेणीपुरी जी (खन्ना बाबा) से साक्षात्कार ।
अप्रैल, 1949 देहरादून	उत्तरकाशी के देवीगिरिजी महाराज किशनपुर आश्रम में । विख्यात गायक पं. ओंकारनाथ ठाकुर माँ के पास ।
मई, 1949	माँ के जन्मोत्सव पर, त्रिवेणी पुरी जी, कृष्णानन्द अवधूत, अखण्डानन्द सरस्वती, बम्बई के कृष्णानन्द जी का आगमन । रायपुर में भक्त परशुराम जी द्वारा सेठ जमुनालाल बजाज द्वारा क्रीत भूमि पर तपालय नामक निर्मित भवन में साधुओं के साथ माँ का प्रवेश । कल्याण वन में नवनिर्मित कुटिया का उद्घाटन ।
सितम्बर, 1949	किशनपुर आश्रम देहरादून में दुर्गोत्सव ।
14 जनवरी, 1950	मकर संक्रान्ति पर तीन वर्ष-व्यापी सावित्री महायज्ञ की पूर्णाहुति । दसहजार ब्राह्मण भोजन पूर्ण, विविध महात्माओं का समागम । शोभायात्रा ।
अप्रैल, 1950	हरिद्वार में पूर्ण कुम्भ स्नान ।
जुलाई,1950	वाराणसी विरजा मन्दिर में माँ का प्रवेश ।
अक्टूबर 1950	बहरमपुर में शारदीय दुर्गोत्सव । वाराणसी में नवीन अन्नपूर्णा मन्दिर-प्रतिष्ठा दीपावली, अन्नकूट ।
जनवरी, 1951 वाराणसी	स्काटलैण्ड के कॉलिन टर्नवुल का प्रेमानन्द नाम । अमेरिकन युवक जैक का मातृ दर्शन ।
अप्रैल, 1951	आनन्दकाशी में चैत्र नवरात्र पर पूजा, शिव स्थापना, टिहरी राजमाता की व्यवस्था ।
मई, 1951	जलन्धर, दोराहा आदि स्थानों पर जन्मोत्सव, अम्बाला में तिथि पूजा । मण्डी राजा के आमन्त्रण पर मण्डी में राजकीय अभ्यर्थना, कुलु , मनाली व योगेन्द्र नगर में ।
अक्टूबर, 1951	वाराणसी में दुर्गापूजा, महाष्टमी को कन्यापीठ के शिल्पप्रतिष्ठान भवन का गृहप्रवेश । दातव्य औषधालय शिशुकल्याण की प्रतिष्ठा । टिहिरी राजमाता का अनुदान ।
जनवरी, 1952 कलकत्ता	अस्पताल में रोगियों को देखना । अस्वस्थ डा. राधाकृष्णन के पास ।
फरवरी, 1952	हरिद्वार बाघाट हाउस में शिव प्रतिष्ठा ।
मई, 1952	माँ का जन्मोत्सव ।
6 अगस्त, 1952 वाराणसी	झूलन पूर्णिमा के दूसरे दिन (योगी भाई के आग्रह पर) प्रथम संयम सप्ताह प्रारम्भ । प्रसिद्ध महात्मा शंकर भारती जी माँ की सन्निधि में ।
अक्टूबर, 1952	इलाहाबाद में बालेश्वर प्रसाद के आवास पर शारदीय दुर्गोत्सव ।
20 अक्टूबर, 1952	पुरी से श्री हरिबाबा, पू. अवधूत जी के साथ माँ की दक्षिण यात्रा प्रारम्भ । मद्रास में विशेष अभ्यर्थना, पाण्डिचेरी अरविन्द आश्रम में मदर से भेंट, तिरुवनमलाई महर्षि रमण के आश्रम में । रामेश्वरम् में सूक्ष्म देहधारी साधक की माँ के साथ रामेश्वर दर्शन की इच्छा पूर्ण । बंगलोर में नागरिक अभिनन्दन ।
26 जनवरी, 1953	वाल्टेयर, कुम्भकोणम्, त्रिचनापल्ली, रामेश्वरम्, मदुरै, कन्याकुमारी, बंगलोर, पण्ढरपुर, पूना, बम्बई, अहमदाबाद जूनागढ़, प्रभास, पोरबन्दर, द्वारका, राजकोट, मोर्वी, भावनगर, अहमदाबाद, चान्दोद, बड़ोदा, होकर माँ का विन्ध्याचल पदार्पण ।

30 जनवरी से 7 फरवरी, 1953	विन्ध्याचल में द्वितीय संयम सप्ताह ।
26 फरवरी, 1953	वृन्दावन आश्रम की नवनिर्मित कुटिया में हरिबाबा, अवधूतजी, सनातन देव आदि महात्माओं के साथ प्रवेश, स्वामी शरणानन्दजी के नवनिर्मित मानव सेवासंघ के उदघाटन में ।
2 से 31 मई, 1953 हरिद्वार	माँ का जन्मोत्सव ।
जुलाई, 1953	अलमोड़ा आश्रमस्थित तूण वृक्ष में महात्मा का निवास प्रमाणित-माँ के स्पर्श द्वारा ।
14 से 28 नवम्बर, 1953	कलकत्ता बालिगंज आश्रम में तीसरा संयम सप्ताह एवं भागवत सप्ताह ।
फरवरी, 1954	प्रयाग में पूर्ण कुम्भ मेला । हजारों लोगों का भीड़ में पिसना, दुर्घटना का पूर्णरूप माँ की दिव्य दृष्टि में प्रतिभासित ।
16 अप्रैल, 1954	अलमोड़े में भाईजी की समाधि पर शिव प्रतिष्ठा ।
मई, 1954 अलमोड़ा	माँ का जन्मोत्सव ।
9 अगस्त, 1954	वाराणसी में गोपालजी के विग्रह का पधारना ।
19 अगस्त, 1954	चुनार में भाईजी को फोर्ट के नीचे जहाँ माला पड़ी मिली थी, वहाँ पंचवटी-स्थापना– सरकारी वन विभाग की ओर से माँ की उपस्थिति में ।
26 अगस्त, 1954	दिल्ली में कालकाजी स्थित नये आश्रम का उद्घाटन । पाकिस्तान के हाईकमिश्नर गजनफर अली खाँ माँ के दर्शन से अभिभूत
22 सितम्बर, 1954	राँची में दुर्गा पूजा ।
13 अक्टूबर,1954	अवधूत जी के आग्रह पर माँ खन्ना में । पाकिस्तान डिप्टी हाईकमिश्नर का मातृ दर्शन ।
18 से 24 नवम्बर, 1954	बम्बई में चौथा संयम सप्ताह । श्री वी. के. शाह माँ की सन्निधि में ।
10 दिसम्बर, 1954	अहमदाबाद में श्री कान्तिभाई मुनशा के विशाल उद्यानपरिसर में श्रीमद्भागवत् सप्ताह ।
22 दिसम्बर, 1954	आई. जी. पी. श्री सुरन्दरनाथ आगा के आह्वान पर भोपाल में । वरिष्ठ पदाधिकारियों का मातृ दर्शन ।
5 जनवरी, 1955	राजगीर के नवीन आश्रम उद्घाटन में ।
6 मार्च, 1955 वृन्दावन	निताईगौर मंदिर प्रतिष्ठा, संत महात्माओं की उपस्थिति में ।
31 मार्च, 1955	माँ के श्रीचरणों में चोट ।
मई, 1955	सोलन में माँ का जन्मोत्सव, साधु संतों का समागम, हिमाचल के राज्यपाल, मुख्य सचिव, विभिन्न राज्यों के राजपरिवार माँ के चरणों में । स्वामी चेतनदेव जी का माँ से वार्तालाप । ब्रह्मचारियों का नामकरण ।
14 अगस्त, 1955	ग्वालियर में महारानी विजयाराजे सिन्धिया के आह्वान पर ।
19 अक्टूबर, 1955	कलकत्ते में लेकरोड पर दुर्गापूजा । दिनाजपुर के महाराज श्री जगदीशनाथ राय का मातृ दर्शन ।
13 नवम्बर, 1955	राँची में काली पूजा व काली विग्रह प्रतिष्ठा ।
22 से 28 नवम्बर, 1955	दिल्ली काली बाड़ी में पाँचवा संयम व्रत अनुष्ठित ।
7 दिसम्बर,1955	दिल्ली में डा. राधाकृष्णन के गृहप्रांगण में ।

२

18 दिसम्बर, 1955	अमृतसर से अस्वस्थ हरिबाबा को लेकर वायुयान से दिल्ली आना ।
13 फरवरी, 1956	वाराणसी में स्वीस अध्यापक डा. बॉस, प्रसिद्ध गायक एवं भाषाविद् डा. आरनोल्ड बेक, फारसी लेखक जीन हर्बर्ट, एवं मिस वायलेट सिडनी का मातृदर्शन ।
10 मार्च, 1956	वृंदावन में नवनिर्मित शिवमंदिर में पंचशिव प्रतिष्ठा ।
13 अप्रैल, 1956 वाराणसी	वाराणसी में भक्तों के.आग्रह से स्वामी मुक्तानन्द गिरि (दीदी माँ) का सन्यासोत्सव पहली बार अनुष्ठित ।
18 अप्रैल 1956	आनन्दमयी करुणा व शिशुकल्याण केन्द्र का उद्घाटन । हरिजनों को आदर सहित भोजन करवाना ।
2 से 24 मई 1956	माँ के षष्टिवर्ष पूर्ति उपलक्ष में हीरक जयन्ती उत्सव । देश के सब भागों से विभिन्न साधु महात्माओं का पदार्पण, कोने-कोने से सभी धर्म व वर्ग के लोगों का समागम । उच्चस्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम । माँ का अविस्मरणीय तुलादान, माँ की पूजा के लिए अवधूत जी के आग्रह से विशाल अष्टधातु का सिंह निर्माण ।
22 जून, 1956	ऋषीकेश परमार्थ निकेतन में स्वामी सदानन्द के आह्वान पर पदार्पण । 300 आश्रमवासी सहित शुकदेवानन्द, पू. हरिबाबा एवं अवधूत जी द्वारा स्वागत करते हुए माँ को परमार्थ निकेतन लाना । शिवानन्द आश्रम (ऋषीकेश) में शिवानन्द सरस्वती से भेंट । शिवानन्द जी का कीर्तन ।
जून,1956	आनन्दकाशी में माँ ।
1 अक्टूबर, 1956	गया के विष्णुपादपद्म मंदिर में रात्रि की श्रृंगार आरती में । बोधगया में गन्ध रूप भगवान् की उपस्थिति का प्रमाण
12 से 18 नवम्बर, 1956	हरिद्वार सप्तर्षि आश्रम में छठा संयम महाव्रत ।
15 फरवरी, 1957	राजा प्रताप सिंह के आह्वान पर कूचामन में । तोपध्वनि द्वारा भव्य स्वागत ।
27 फरवरी, 1957	वृन्दावन में चारखारी राजमाता द्वारा प्रतिष्ठित गीता भवन एवं श्री मद्भागवत् भवन का शिवरात्रि के दिन उद्घाटन ।
17 मार्च, 1957 मोदीनगर	रायबहादुर गूजरमल मोदी के निमन्त्रण पर सप्ताहव्यापी नामयज्ञ में हरिबाबा एवं अवधूत जी के साथ पधारना ।
2 से 10 मई, 1957	अहमदाबाद में श्री मुकुन्द भाई ठाकोर के निमन्त्रण पर जन्मोत्सव का आयोजन ।
2 अगस्त, 1957	देहरादून में माँ का शरीर अस्वस्थ । विश्व के भक्तों द्वारा माँ के स्वस्थ होने की प्रार्थना में योगदान हेतु अशरीरी महात्माओं द्वारा माँ की परिक्रमा ।
14 नवम्बर, 1957 दिल्ली	अमेरिकन अभिनेत्री जेनीफार जोन्स का मातृ दर्शन ।
20 नवम्बर, 1957	दिल्ली नवनिर्मित आश्रम में सातवां संयम सप्ताह । नाम ब्रह्ममन्दिर में पहली बार नाम यज्ञ ।
29 नवम्बर, 1957 दिल्ली	जगजीवनराम का सपरिवार अपने निवास पर माँ की पूजा ।
14 अप्रैल, 1958	कलकत्ता के आगर पाड़ा आश्रम का उद्घाटन, दीदी माँ का संन्यासोत्सव ।
2 से 7 मई, 1958	माँ का जन्मोत्सव नवनिर्मित आगरपाड़ा आश्रम में ।
15 जून, 1958	वाराणसी में शंकर भारती का देहावसान, माँ सोलन में ।
14 सितम्बर, 1958	वाराणसी में डॉ. गोपाल दास गुप्त द्वारा बाल गोपाल उत्सव, बच्चों को वस्त्र एवं मिठाई के साथ बालकृष्ण की पीतल की छोटी-छोटी मूर्ति देना, माँ की उपस्थिति में ।

20 अक्टूबर, 1958	इलाहाबाद में श्री बालेश्वर प्रसाद जी के घर पर अनुष्ठित दुर्गापूजा में।
13 नवम्बर, 1958	सीताराम जयपुरिया के आयोजन पर स्वदेशी हाउस कानपुर में ८वाँ संयम महाव्रत।
7 जनवरी, 1959	श्री आनन्द मोहन लाल के आग्रह पर माँ का झालावार पदार्पण, राज्य सीमा पर तोप-ध्वनि द्वारा राजसी अभिनन्दन।
13 अप्रैल, 1959	सप्तर्षि आश्रम के निमन्त्रण पर माँ का पधारना। पं. जवाहरलाल नेहरू का विराट् सम्मेलन को सम्बोधन।
15 से 22 अप्रैल, 1959	ऋषीकेश रामनगर में काली कमली ट्रस्ट के अन्तर्गत आत्मविज्ञान भवन में विशेष 9 वाँ संयम सप्ताह। अगणित साधु उपस्थित। स्वामी योगानन्द परमहंस की प्रधान शिष्या श्री दयामाता का तीन संन्यासियों सहित योगदान।
3 से 25 मई, 1959	किशनपुर (देहरादून) में पू. हरिबाबा जी के सत्संग, रासलीला आदि विविध अनुष्ठानों सहित माँ का जन्मोत्सव।
24 अगस्त, 1959	नई दिल्ली में प्रधानमंत्री पं. नेहरू माँ के पास।
15 सितम्बर, 1959 वाराणसी	दयामाता का कलकत्ते से आना।
3 अक्टूबर, 1959	मण्डी रानी द्वारा शारदीय नवरात्र पर राजसी दुर्गोत्सव।
7 अक्तूबर, 1959	उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री वी. वी. गिरि माँ की उपस्थिति में।
24 से 30 अक्टूबर, 1959	विन्ध्याचल में व्यक्तिगत साधना की दृष्टि से मातृ सप्ताह, माँ की उपस्थिति में।
8 से 14 नवम्बर	कलकत्ते में 10 वाँ संयम सप्ताह।
14 जनवरी, 1960	अर्द्ध कुम्भ मेले के अवसर पर प्रयाग त्रिवेणी तट पर उपस्थिति एवं मुख्य तीन विशेष कुम्भ योग पर संगम स्नान।
10 मार्च,1960	हरिद्वार गणेशदत्त गोस्वामी के आश्रम में। स्पीकर श्री गोपाल स्वामी अय्यर सपरिवार माँ के पास।
13 अप्रैल, 1960	आनन्दकाशी में दीदीमाँ का संन्यासोत्सव तीन सप्ताह वास। मसूरी में टिहिरी राजमाता के नवीन गृह उद्‌घाटन में।
2 से 14 मई, 1960	बम्बई में श्री. वी. के. शाह के विले पार्ले स्थित गृह परिसर में माँ का जन्मोत्सव।
15 मई, 1960	पूना में दिलीपकुमार राय एवं हीराबाई बडोदकर का माँ को भजन सुनाना। श्री के. एन. काटजू म. प्र. मुख्यमंत्री, एवं गृहमंत्री गुलजारीलाल नन्दा माँ की उपस्थिति में।
9-11 जुलाई, 1960 दिल्ली	'गुरुपूर्णिमा में माँ की उपस्थिति के समय श्री. सी. पी. एन. सिंह, श्री सुविमल दत्त भारत सरकार के विदेश सचिव, दिल्ली के चीफ कमिश्नर श्री भगवान सहाय एवं जे. के. बिड़ला का मातृ दर्शन।
26-30 सितम्बर, 1960	आगरपाड़ा आश्रम में दुर्गापूजा।
21 से 27, अक्टूबर 1960	नैमिषारण्य संयममहाव्रत के अनुष्ठान में अभूतपूर्व आनन्द। १०८ श्रीमद्‌भागवत सप्ताह। जमादारिन द्वारा माँ की दी हुई बनारसी साड़ी पहन कर माँ की आरती।
25 दिसम्बर, 1960	आगरपाड़ा आश्रम में हाईकमिश्नर कनाडा, मि. जेम्स जार्ज का सपरिवार मातृ दर्शन।
5 फरवरी, 1961	वाघाट हाउस हरिद्वार में आश्रम के तीन ब्रह्मचारियों का नैष्ठिक ब्रह्मचर्य ग्रहण।

28 फरवरी, 1961	दिल्ली आश्रम में राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद, स्विट्जरलैण्ड राजदूत डॉ. कुटा तथा पाकिस्तान राजदूत मि. ब्रोहो का मातृ दर्शन । रैहाना तैयब के निमन्त्रण पर कस्तूरबा गांधी स्मृति सभा में ।
3 अप्रैल,1961 कनखल	निताईचन्द्र वसु मल्लिक के भवन शांतिनिकेतन में ।
17 अप्रैल, 1961	ग्वालियर राजमाता के आमन्त्रण पर मन्दिर प्रतिष्ठा में । सिंधिया स्कूल परिदर्शन ।
2 से 4 मई, 1961	इलाहाबाद में श्री नीरजनाथ मुखोपाध्याय के निवास पर जन्मोत्सव । प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू व श्रीमती इंदिरा गांधी का आगमन ।
16 मई, 1961	पं. गोपीनाथ कविराज जी का बम्बई टाटा कैन्सर इन्स्टीट्यूट में आपरेशन । माँ का पूर्ण ख्याल ।
9 जून, 1961	पूना में 6 सप्ताह । श्री भगवानदास नागपाल द्वारा आश्रम हेतु भूमि दान । राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद व महाराष्ट्र राज्यपाल श्रीप्रकाश माँ के चरणों में । पूना में बाढ़ का पूर्व संकेत ।
15 जुलाई, 1961	मैसूर हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एस. आर. दासगुप्त के आमन्त्रण पर बंगलोर में । मद्रास होते हुए कलकत्ता ।
21 सितम्बर से 7 अक्टूबर, 1961	दिल्ली आश्रम निवास काल में डॉ. राजेन्द्रप्रसाद के आमन्त्रण पर राष्ट्रपति भवन में भोग की व्यवस्था । पं. नेहरू के निमन्त्रण पर प्रधानमंत्री भवन में पधारना ।
15 से 20 अक्टूबर, 1961	कानपुर में जैपुरिया के निमन्त्रण पर दुर्गापूजा । श्री दयामाता पुनः माँ की सन्निधि में ।
9 से 15 नवम्बर, 1961	शुकताल में संयम महाव्रत व श्रीमद्भागवत सप्ताह ।
12 अप्रैल, 1962 हरिद्वार	पूर्ण कुम्भ में निरंजनी अखाड़ा द्वारा माँ को हाथी पर चढ़ाकर शोभायात्रा । चैत्र नवरात्रि की महाष्टमी तिथि ।
	चैत्र संक्रान्ति पर दीदीमाँ से तीन प्राचीन आश्रमवासियों का संन्यास ग्रहण ।
27 अप्रैल, 1962 देहरादून	पं. जवाहरलाल नेहरू का विजयलक्ष्मी जी के साथ आगमन ।
2 से 23 मई, 1962 देहरादून	माँ का जन्मोत्सव । कुष्ठरोगियों को भोजन कराना । साधन-आश्रम में रात्रिवास ।
9 जून,1962 देहरादून	जोशीमठ के शंकराचार्य श्री शांतानन्द जी का पधारना एवं प्रवचन ।
12 सितम्बर, 1962 देहरादून	दिल्ली में श्रीमती रैहाना तैयव, तारकेश्वरी सिन्हा, भगवान सहाय, पाकिस्तान के हाईकमिश्नर श्री एम. रहमान एवं उनकी पत्नी तथा प्रो. हुमायूँ कबीर आदि माँ के पास ।
21 अक्टूबर, 1962	कालीपूजा एवं कालीमन्दिर स्थापना के समय रांची आश्रम में ।
5 से 11 नवम्बर, 1962	पिलानी में श्री. जे. के. बिड़ला के आह्वान पर संयममहाव्रत का अनुष्ठान ।
14 नवम्बर, 1962 दिल्ली	पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन पर प्रधानमंत्री भवन में ।
23 जनवरी, 1963 मोदी नगर	रायबहादुर गूजरमल मोदी के आह्वान पर नवनिर्मित लक्ष्मीनारायण मंदिर के उद्घाटन में ।
16 मार्च,1963	करौली में माँ की राजसी अभ्यर्थना ।
3 से 12 मई, 1963	कलकत्ते में माँ का जन्मोत्सव, जोशीमठ शंकराचार्य शान्तानन्द की उपस्थिति ।

12 अगस्त, 1963 वाराणसी	वाराणसी आश्रम में चन्दन सिंहासन पर जन्माष्टमी तिथि को गोपालजी आरूढ़ । माँ के छोटे भाई (श्री यदुनाथ भट्टाचार्य) के आश्रम-संलग्न गृह में दुर्गोत्सव माँ की उपस्थिति ।
17 नवम्बर, 1963	राजमाता विजयाराजे सिन्धिया द्वारा पति के स्मरणार्थ बम्बई में अनुष्ठित श्रीमद्‌भागवत सप्ताह में माँ ।
23 से 29 नवम्बर 1963	अहमदाबाद में संयममहाव्रत का अनुष्ठान । जर्मन की प्रसिद्ध लेखिका मेलिटा मैक्समेन का मातृदर्शन । संयम के तीसरे दिन भयंकर आंधी तूफान । माँ के निर्देश से ध्यान के उपरान्त व्रतियों के पंडाल से निकलते ही पंडाल का गिरना ।
29 फरवरी, 1964 दिल्ली	श्रीमती इंदिरा गांधी के निवेदन पर प्रधानमंत्री पं. नेहरू को देखने जाना ।
3 से 30 मई, 1964	अलमोड़ा में माँ का जन्मोत्सव ।
15 जुलाई, 1964	देहरादून कल्याण वन में राममन्दिर स्थापना ।
25 से 27 अगस्त, 1964	देहरादून साधनआश्रम में तीन दिन ।
8 सितम्बर, 1964 ऋषिकेश	स्वामी शिवानन्द महाराज की शतवार्षिकी जन्मजयन्ती, स्वामी चिदानन्दजी के आह्वान पर माँ का वहाँ पधारना, माँ का भव्य स्वागत ।
11 अक्टूबर, 1964 वृन्दावन	आश्रम में दुर्गापूजा ।
16 अक्टूबर, 1964 वृन्दावन	मातृगतप्राणा महारतन जी का देहावसान । पार्थिव शरीर को दिल्ली से वृन्दावन लाना–माँ की सन्निधि में ।
11 से 18 नवम्बर 1964 वृन्दावन	संयम सप्ताह ।
27 नवम्बर, 1964 वृन्दावन	बुनीदी (यतीशगुह की कन्या यूथिका) माँ की उपस्थिति में चिरनिद्रा में लीन ।
14 दिसम्बर, 1964 वृन्दावन	मैसूर महारानी सत्यप्रेम कुमारी द्वारा निर्मित भवन राममन्दिर का उद्‌घाटन ।
14 जनवरी, 1965	वाराणसी में माता आनन्दमयी चिकित्सालय की नींव डालने के समारोह में ।
1 फरवरी, 1965	"निरामय" (टी. बी. अस्पताल) के पास नवनिर्मित शिवमंदिर प्रतिष्ठा में ।
28 फरवरी, 1965	राजगीर आश्रम में शिव प्रतिष्ठा ।
27 मार्च, 1965 भोपाल	सर दातार सिंह के आह्वान पर भोपाल , बैरागढ़ आश्रम में प्रथम पदार्पण । भूतपूर्व भोपाल नवाब की वड़ी बेगम का मातृदर्शन का अनुभव "जीवन का सबसे आनन्दमय दिन", माँ से एकान्तवार्ता एवं कुरान पाठ ।
2 से 19 मई, 1965	राँची आश्रम में जन्मोत्सव ।
30 जून, 1965	पुरी में जगन्नाथ जी के रथयात्रा-उत्सव में ।
23 सितम्बर, 1965	कॅलकत्ते में दुर्गापूजा ।
1 से 7 नवम्बर, 1965	श्री जगन्नाथ कुण्डू के आह्वान पर माँ का हजारीबाग पदार्पण, संयम महाव्रत ।
24 नवम्बर, 1965	वाराणसी आश्रम में उ. प्र. राज्यपाल श्री विश्वनाथदास, मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी तथा स्वास्थ्यमंत्री डॉ. सुशीला नायर माँ के पास ।
11 जनवरी. 1966	त्रिवेणीतट कुम्भ मेले में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी, गृहमंत्री गुलजारीलाल नंदा, स्वास्थ्यमंत्री डॉ. सुशीला नायर विधिमंत्री श्री जी. एस. पाठक का आगमन ।
13 अप्रैल,1966 दिल्ली	प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा आश्रम आकर माँ से प्रधानमंत्री निवास पर पधारने की प्रार्थना । अपने निवास पर प्रधानमंत्री द्वारा माँ का आतिथ्य ।

3 से 8 मई, 1966 देहरादून	श्री व श्रीमती एम. एल. खेतान् के विराट् गृहपरिसर में शुभ जन्मोत्सव ।
16 जुलाई, 1966 देहरादून	माँ के ख्याल से अभावनीयरूप से मोटर दुर्घटना का न होना । माँ के हाथों में चोट, आश्रमवासियों द्वारा दस दिनों तक अहोरात्र नाम-संकीर्तन ।
6 सितम्बर, 1966	वृन्दावन में छलिया मंदिर स्थापना ।
19 से 23 अक्टूबर 1966	बम्बई में श्री . बी. के. शाह के विलेपार्ले स्थित गृहपरिसर में दुर्गापूजा ।
20 से 26 नवम्बर, 1966	वृन्दावन में भावनगर के महाराजा एवं महारानी के आग्रह से संयम सप्ताह । ग्रीस की राजमाता एवं राजकन्या युवरानी ईरीन माँ के चरणों में ।
27 नवम्बर, 1966	देवघर के नरेन्द्र ब्रह्मचारी द्वारा वृन्दावन आश्रम में कात्यायनी पूजा का आयोजन ।
17 अप्रैल, 1967	कनखल में माँ की दिव्य दृष्टि में एक सुंदर भवन का प्रकाश जिसमें असंख्य महात्माओं का निवास, माँ के लिए कुटिया, माँ के श्रीमुख से इन पदों का कीर्तन "भवबन्धन मुक्तिकारण सर्वजय शिव, दुःखहारी भवबन्धन मुक्तिकारण लक्ष्मीनारायण दुःखहारी ।"
15 मई, 1967	कानपुर में जैपुरिया परिवार द्वारा जन्मोत्सव का आयोजन । रामकिंकर जी द्वारा रामायण पाठ ।
4 अक्टूबर, 1967 वृन्दावन	श्री सुरेश महिन्द्रा के आयोजन पर दुर्गापूजा, संयम महाव्रत, आंध्रप्रदेश के राज्यपाल श्री जी. एस. पाठक की धर्मपत्नी एवं एम. एस. शुभलक्ष्मी सपरिवार एवं उत्तर प्रदेश राज्यपाल गोपाल रेड्डी माँ के चरणों में ।
9 से 11 दिसम्बर, 1967	नैमिषारण्य पुराण मंदिर के उद्घाटन में । गुजराती भक्त मनुभाई भीमानी द्वारा मंदिर निर्माण का पूरा व्ययभार ग्रहण ।
24 अप्रैल 1968 वाराणसी	ब्र. मोहनानन्द माँ के पास । दिलीपकुमार राय की भजन सभा के बीच सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति निवास में । उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री सम्पूर्णानन्द को देखने जाना ।
30 अप्रैल, 1968	आनन्द ज्योतिर्मन्दिर का उद्घाटन ।
3 मई,1968	माँ का जन्मोत्सव । संत, महात्माओं की उपस्थिति ।
जून, 1968	देहरादून कल्याणवन में सत्संग के अवसर पर "नर तन पाया आओ प्यारे .... " इन पदों को गाते हुए एक बालक माँ की दिव्यदृष्टि में । हरिबाबा के सामने प्रत्यक्ष रूप से इन पदों का सर्वप्रथम कीर्तन ।
30 जुलाई, 1968	कल्याणवन संलग्न श्री खेतान के गृह परिसर में माँ के लिए नवनिर्मित वासभवन का उद्घाटन ।
25 अगस्त, 1968 वाराणसी	"इन्ट्रीगल योगा इन्स्टीट्यूट" न्यूयार्क के अध्यक्ष स्वामी सच्चिदानन्द का 25 लोगों की मण्डली के साथ मातृदर्शन
23 सितम्बर, 1968	देहरादून श्री खेतान के आवास में नवरात्र दुर्गा पूजा ।
29 अक्तूबर से 4 नवम्बर, 1968	देहरादून में संयम सप्ताह ।
21 नवम्बर, 1968	नैमिषारण्य में श्री अखण्डानन्द सरस्वती द्वारा पाक्षिक भागवत पारायण प्रारम्भ, हरिबाबा जी, शरणानन्द जी, गोविन्द प्रकाश जी आदि संतों का समागम ।

16 दिसम्बर, 1968 दिल्ली	"बृहत् हरि सम्मेलन" सुभाष मैदान दिल्ली में माँ की उपस्थिति ।
26 दिसम्बर, 1968 वाराणसी	प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा माता आनन्दमयी चिकित्सालय का उद्घाटन—माँ की उपस्थिति में ।
3 जनवरी, 1969 वाराणसी	सवा मन दूध से अन्नपूर्णा मन्दिर मे नारायण शिला का स्नान ।
15 फरवरी, 1969	दिल्ली आश्रम में शिवरात्रि पर भक्त समागम, माँ की उपस्थिति में रात्रि पूजन ।
15 फरवरी,1969 बाँध	बाँध पर हरिबाबा के नेतृत्व में अतुलनीय स्वागत समारोह, हाथी, घोड़े, तोप-ध्वनि, बैण्ड एवं संगीत, राजसी आयोजन ।
6 मार्च, 1969	ग्वालियर में शिवलिंग एवं महाराज की मूर्तिस्थापना में माँ ।
2 से 19 मई, 1969	बम्बई में श्री बी. के शाह के गृहपरिसर में माँ का जन्मोत्सव । रोमन कैथलिक एवं दो संन्यासिनियों की माँ से एकान्त वार्ता, कामूबाबा मुसलमान संत की माँ से मुलाकात ।
29 मई, 1969	अहमदाबाद में गुजरात के राज्यपाल श्रीमन्नारायण के आग्रह पर माँ का राजभवन में जाना ।
1 अगस्त, 1969	बैरागढ़ (भोपाल) आश्रम में राज्यपाल के. सी. रेड्डी सपरिवार, मुख्यमंत्री एवं उच्चाधिकारियों का मातृ दर्शन ।
31 अगस्त, 1969	साधन आश्रम देहरादून में माँ के ख्याल से अखंड रामायण ।
3 सितम्बर, 1969	देहरादून किशनपुर आश्रम में दिव्य जीवन संघ वेनेजुला दक्षिण अमेरिका से 15 जनों का माँ के दर्शनों को आना ।
16 अक्तूबर, 1969	वाराणसी में श्री हरिश्चन्द्र बनर्जी की प्रार्थना से उनके घर की दुर्गापूजा में ।
30 अक्तूबर, 1969	कानपुर में श्री पद्मपत सिंहानिया द्वारा निर्मित नवीन आवास में माँ ।
12 नवम्बर,1969 वृन्दावन	हिमालय एकादमी नेवादा यू. एस. ए. से 65 अमेरिकन भक्तों का गुरु श्री सुब्रह्मण्यम के साथ मातृ दर्शन ।
17 से 23 नवम्बर 1969 वृन्दावन	संयम महाव्रत
1 जनवरी, 1970 वाराणसी	माँ के निर्देश से डॉ. सैन गुप्ता के संरक्षण में अस्वस्थ हरिबाबा का माँ के साथ वाराणसी पधारना ।
3 जनवरी, 1970 वाराणसी	माँ की उपस्थिति में साधकोचित परिवेश में हरिबाबा का महाप्रयाण । जर्मन के 15 विद्वानों का मातृ दर्शन ।
13 जनवरी, 1970 वाराणसी	उपराष्ट्रपति श्री. जी. एस. पाठक सपत्नीक माँ के पास ।
16 जनवरी, 1970 वाराणसी	स्वामी गंगेश्वरानन्द महाराज माँ की सन्निधि में ।
21 फरवरी से 7 मार्च, 1970	वाराणसी अस्पताल परिसर के विशाल पण्डाल में स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती का श्रीमद्भागवत का पाक्षिक पारायण माँ की उपस्थिति में ।
13 अप्रैल, 1970 कनखल	शिवमंदिर प्रतिष्ठा ।
3 से 24 मई, 1970	पूना में जन्मोत्सव, बड़ौदा के महामहिम गायकवाड़ एवं डॉ. विक्रम साराभाई का मातृ दर्शन ।
2-3 जुलाई, 1970	ठाकुर भाई पटेल के आह्वान पर मिरज एवं चन्द्रशेखर स्वामी के निमंत्रण पर निपानी में ।
3 अगस्त, 1970 हरिद्वार	जैपुरिया भवन रामघाट में माँ । भागवत सप्ताह ।

9 अगस्त, 1970 हरिद्वार	मध्यरात्रि के डेढ़ बजे माँ के सान्निध्य में दीदी माँ (मुक्तानन्द गिरि) ब्रह्मलीन । कनखल स्थित आश्रम में आपके पूतदेह की भू-समाधि ।
20 अगस्त, 1970 हरिद्वार	गिरिजी के ब्रह्मलीन होने पर शिवानन्द आश्रम तथा कैलास आश्रम ऋषीकेश में आयोजित भण्डारों में माँ की उपस्थिति । स्वामी श्री विष्णुदेवानन्द जी से साक्षात्कार ।
23 अगस्त, 1970 हरिद्वार	गिरिजी के ब्रह्मलीन होने के सोलहवें दिन विशेष पूजा, अखण्ड जप, अखण्ड कीर्तन आदि अनुष्ठान । दूसरे दिन हर की पौड़ी पर 1000 दरिद्रनारायण सेवा ।
25 अगस्त, 1970	निर्वाणी अखाड़ा में 500. साधुओं का सवस्त्र भोजन । प्रायः सभी आश्रमों में इस अवसर पर साधुभोजन व दरिद्रनारायण सेवा की व्यवस्था ।
9 सितम्बर, 1970 ग्वालियर	राजमाता सिंधिया के आह्वान पर स्वामी अखण्डानन्द जी द्वारा भागवत पारायण के अवसर पर ग्वालियर में ।
7 से 10 अक्टूबर, 1970	दिल्ली में दुर्गापूजा का विशाल आयोजन, महात्माओं का सत्संग । प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी, उपराष्ट्रपति श्री जी. एस. पाठक सपत्नीक, कांग्रेस अध्यक्ष निजलिंप्पा, आचार्य कृपलानी, सुचेता कृपलानी, गुलजारीलाल नन्दा, महाराजा बड़ोदा,डॉ. करण सिंह, भावनगर महाराज आदि माँ के चरणों में । होशियारपुर सच्चिदानन्द आश्रम में तीन दिन ।
4 से 10 नवम्बर, 1970 शुकताल	दण्डी स्वामी विष्णु आश्रम जी के आह्वान पर शुकताल में संयम व्रत ।
14 से 29 नवम्बर, 1970	श्री पद्मपत सिंहानिया के हार्दिक अनुरोध पर कानपुर श्रीमद्भागवत पारायण में ।
11 जनवरी 1971, वाराणसी	कनाडियन प्रधानमंत्री श्री पीयर इलियट त्रुदो का हाईकमिश्नर श्री जेम्स जार्ज के साथ मातृ दर्शन ।
16 जनवरी, 1971 वाराणसी	स्वामी शिवानन्द सरस्वती के शिष्य करीब 25 ब्रेजेलियनों का मातृ दर्शन ।
19 जनवरी, 1971	अर्द्ध कुम्भ मेला प्रयाग में माँ ।
14 अप्रैल,1971 कनखल	ब्रह्मचारी महानन्द एवं दीदीमाँ की सेविका विमला दीदी का महन्त गिरधर नारायण पुरी से संन्यास ग्रहण ।
29 अप्रैल, 1971 वाराणसी	3 मई से होने वाले 75 वें जन्मदिवस के उपलक्ष में शिवशक्ति यज्ञ, चार वेद एवं अट्ठारह पुराणों का पारायण प्रारम्भ ।
7 मई, 1971 वाराणसी	उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी द्वारा समारोह का उद्घाटन, काशी नरेश द्वारा दो शब्द ।
12 जुलाई, 1971	देहरादून किशनपुर आश्रम में त्रिवेन्द्रम एलाया राजा सपरिवार माँ के पास ।
15 जुलाई, 1971	वाराणसी में अस्पताल के अन्तर्विभाग का खुलना, प्रथम रोगी स्वामी निर्गुणानन्द जी (मुक्तिबाबा) ।
25 सितम्बर, 1971	देहरादून श्री खेतान के गृहपरिसर में दुर्गा पूजा । महाष्टमी में पद्मनाभमूर्ति की पूजा प्रथम बार ।
26 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 1971	वृन्दावन में 22 वाँ संयम सप्ताह
23 से 30 नवम्बर, 1971 भोपाल	बैरागढ़ आश्रम में माँ की उपस्थिति में दण्डीस्वामी विष्णु आश्रमजी द्वारा श्रीमद्भागवत व्याख्या ।
13 से 28 दिसम्बर, 1971	कानपुर में श्री सिंहानिया द्वारा आयोजित श्री अखण्डानन्दजी की भागवत-व्याख्या में । उत्तर प्रदेश राज्यपाल गोपाल रेड्डी, डॉ. त्रिगुण सेन आदि का मातृ दर्शन ।

7 जनवरी, 1972	मद्रास में शुभलक्ष्मी द्वारा माँ की भावपूर्ण पूजा । प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल राजगोपालचारी की पुत्री तथा महात्मा गांधी की पुत्रवधू लक्ष्मी देवी का अपने पुत्र गोपाल के साथ मातृ दर्शन ।
9 जनवरी, 1972	त्रिवेन्द्रम रवाना । कालडी में शंकराचार्य मंदिर के पुजारियों द्वारा माँ की विशेष पूजा एवं आरती ।
14 जनवरी, 1972	पद्मनाभ मंदिर के लक्षदीपोत्सव में माँ, राजोचित अभ्यर्थना ।
17 मार्च, 1972 वाराणसी	वाराणसी में शिव मंदिर प्रतिष्ठा । नरेन्द्र ब्रह्मचारी का मातृदर्शन हेतु पधारना ।
26 मार्च, 1972 वाराणसी	उपराष्ट्रपति जी. एस. पाठक एवं राज्यपाल गोपाल रेड्डी माँ के पास ।
30 मार्च 1972 वाराणसी	नीमकरोलीबावा का मातृ दर्शन ।
29 अप्रैल से 31 मई, 1972	दिल्ली में माँ के लिए नवनिर्मित आवास का उद्घाटन । अक्षय तृतीया पर विष्णु यज्ञ । श्रीमती इंदिरा गांधी का माँ से आशीर्वाद माँगना । जन्मोत्सव का विशाल आयोजन ।
12 जुलाई, 1972	पूना आश्रम में मंदिर में राधा-कृष्ण प्रतिष्ठा ।
6 सितम्बर 1972, अहमदाबाद	राज्यपाल श्रीमन्नारायण के निमन्त्रण पर अहमदाबाद राजभवन में राजकीय स्वागत ।
7 अक्तूबर, 1972	नैमिषारण्य में दुर्गापूजा ।
11 नवम्बर, 1972	हरिद्वार में सुरत गिरि बंगाले में म. म. स्वामी ब्रह्मानन्दजी द्वारा संयम महाव्रत का आयोजन ।
10 दिसम्बर, 1972	वाराणसी में अन्नपूर्णा मंदिर के श्री विग्रहों का प्रायः 22 वर्ष के उपरान्त भव्य अभिषेक ।
17 जनवरी, 1973	नैमिषारण्य में स्वामी गंगेश्वरानन्द जी के आग्रह से वेद भगवान की प्रतिष्ठा ।
19 फरवरी, 1973	श्री रतिलाल नानावटी के निमन्त्रण पर महाबलेश्वर में ।
7 मार्च, 1973	देवघर नरेन्द्र ब्रह्मचारी के आश्रम में । कलकत्ते में निरामय अस्पताल उद्घाटन, माँ का दो दिन रात्रि वास ।
17 मार्च, 1973	गाजियाबाद में जैपुरिया परिवार के आमन्त्रण पर माँ । होलिकोत्सव में नवद्वीप से आये 112 मृदंगवादकों का मृदंग वादन ।
24 मार्च, 1973	वाराणसी में महाराष्ट्र के संत तानपुरा बाबा की माँ से अकालग्रस्त महाराष्ट्र जनता के लिए 100 बोरी गेहूँ की याचना । तत्क्षण व्यवस्था ।
9 मई, 1973	उत्तरकाशी कैलास आश्रम में म. म. विद्यानन्दजी के आग्रह से जन्मोत्सव का आयोजन ।
27 सितम्बर से 5 अक्टूबर, 1973	हरिद्वार में नाभा राज परिवार द्वारा दुर्गापूजा का आयोजन ।
3 से 10 नवम्बर, 1973	वृन्दावन आश्रम में संयम व्रत ।
23 नवम्बर, 1973	कानपुर में श्रीपद्मपत सिंहानिया के यहाँ 15 दिन सत्संग ।
11 दिसम्बर, 1973	बिठूर गंगा विहार धर्मशाला में निवास ।
26 दिसम्बर, 1973	नैनी स्थित जैपुरिया भवन में रहना ।
11 फरवरी, 1974	हरिद्वार कुम्भ मेले की पहली शोभा यात्रा ।
18 फरवरी, 1974	देहरादून साधन आश्रम में शिवलिंग-स्थापना ।
20 फरवरी, 1974 हरिद्वार	शिवरात्रि पर दूसरी शोभायात्रा ।

25 फरवरी, 1974 कलकत्ता	जोधपुर पार्क कलकत्ते में नारायण गोस्वामी की भागवत-व्याख्या में माँ ।
8 मार्च, 1974	होली (दोलोत्सव) पर वैष्णवों के आमन्त्रण पर शोभायात्रा में ।
25 अप्रैल, 1974	वाराणसी में अक्षय तृतीया पर नवनिर्मित शिवमंदिर में मुक्तानन्द गिरिजी की मूर्तिस्थापना ।
3 से 9 मई, 1974	बम्बई में श्री पी. एन. विशन जी के निमन्त्रण पर उनके निवास पर जन्मोत्सव का आयोजन ।
22 मई,1974	पूना में श्री अखण्डानन्द सरस्वती द्वारा पाक्षिक भागवत पारायण में । दिलीपराय, इंदिराजी, एवं दत्तबल जी का मातृ दर्शन । 'सेक्रेड हार्ट एण्ड क्राइस्ट' नामक संस्था की संन्यासिनियों का मातृ दर्शन ।
22 से 26 नवम्बर, 1974	देहरादून रामतीर्थ आश्रम में श्री गोविन्द प्रकाश जी के आमन्त्रण पर संयम सप्ताह का आयोजन ।
1 दिसम्बर, 1974	कानपुर के स्वदेशी हाउस में अतुल कृष्ण गोस्वामी जी के रामायण में ।
10 दिसम्बर, 1974 कान्पुर	श्री सिंहानिया के आश्रम पर श्री अखण्डानन्द जी द्वारा श्रीमद्भागवत् प्रवचन में माँ ।
14 जनवरी, 1975	नैमिषारण्य में नवनिर्मित यज्ञशाला के यज्ञकुण्ड में अग्नि स्थापन ।
6 मार्च, 1975	गोंडल में सौराष्ट्र परम्परा से माँ का भव्य स्वागत । राजपरिवार द्वारा आवाहन ।
7 मार्च, 1975	पोरबन्दर में गांधीजी के जन्मस्थान एवं गुरुकुल में भव्य स्वागत ।
14 अप्रैल, 1975	कनखल में सत्संग हाल का उद्घाटन ।
14 मई, 1975	नैमिषारण्य में अक्षय तृतीया पर पुराणपुरुष की शोभायात्रा, पुराणपुरुष प्रतिष्ठा ।
19 मई, 1975	कलकत्ते में 79वाँ जन्मोत्सव ।
11 जून, 1975	गौहाटी राममंदिर में रात्रिवास ।
13 जून, 1975	डिब्रूगढ़ में माँ के लिए आश्रम निर्माण ।
9 अक्टूबर, 1975 वाराणसी	शारदीय नवरात्र प्रारम्भ, दुर्गापूजा । गिरिजादेवी माँ की सन्निधि में ।
16 अक्टूबर, 1975	केन्द्रीय रेल मंत्री कमलापति त्रिपाठी का मातृ दर्शन, बंगाल की प्रसिद्ध लेखिका आशापूर्णा देवी माँ के चरणों में ।
3 नवम्बर, 1975	उत्तरकाशी में काली पूजा, 500 साधुओं का भोजन ।
5 नवम्बर, 1975	कनखळ में 24 अमेरिकी तीर्थयात्री तथा स्वामी क्रियानंन्द दर्शनार्थ ।
6 नवम्बर, 1975	श्रीमती इंदिरा गांधी का दिल्ली आश्रम आना, दीदी की अस्वस्थता ।
10 नवम्बर, 1975	कानपुर में संयमव्रत ।
25 दिसम्बर, 1975 वाराणसी	आनन्द ज्योतिर्मन्दिर में विदेशी भक्तों द्वारा अपनी देशीय प्रथा में रात्रि के बारह बजे माँ की उपस्थिति में बड़े दिन का समारोह ।
16 जनवरी, 1976 दिल्ली	प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी माँ के पास । स्वामी सच्चिदानन्द का अपने 40 शिष्यों के साथ माँ का दर्शन ।

19 फरवरी, 1976	वाराणसी कन्यापीठ पुरस्कार वितरण समारोह में । राज्यपाल डा. चेन्नारेड्डी विशिष्ट अतिथि ।
20 मई, 1976	रायवाला में गंगातट 'गंगालहरी' में आठ दिन । कनखल आश्रम में जन्मोत्सव ।
2 जून, 1976	कैलास आश्रम के म. म. स्वामी विद्यानन्दजी के आमन्त्रण पर उत्तरकाशी में ।
11 अगस्त, 1976	हरिद्वार शांतिकुंज के प्रतिष्ठाता श्रीराम शर्मा आचार्य एवं उनकी सहधर्मिणी का कनखल में मातृ दर्शन ।
21 सितम्बर, 1976	दिल्ली आश्रम में शारदीय दुर्गोत्सव, लक्ष्मी पूजा एवं काली पूजा ।
30 अक्टूबर से 6 नवम्बर 1976	गोंडल राजपरिवार द्वारा संयम महाव्रत का अनुष्ठान ।
7 नवम्बर, 1976 सौराष्ट्र	रानाभाव में ।
16 नवम्बर, 1976	करौली के कैला देवी (लक्ष्मी) मंदिर में अनुष्ठित शतचण्डी पाठ तथा मदनमोहन मंदिर में ।
23 नवम्बर, 1976 पटना	हथुआ राजपरिवार के आमन्त्रण पर हथुआ भवन में आयोजित भागवत सप्ताह में ।
29 दिसम्बर, 1976 वाराणसी	श्री सीतारामबाबा ओंकारनाथ माँ के सान्निध्य में वाराणसी आश्रम ।
7 जनवरी, 1977	प्रयाग कुम्भ मेले में निर्वाणी अखाड़े से शोभायात्रा सहित माँ का कुम्भ प्रवेश । महात्माओं के अनुरोध से 11, 19, 24 तीन मुख्यस्नान की शाही शोभा यात्रा में योगदान ।
14 फरवरी, 1977 कुरुक्षेत्र	श्री गुलजारीलाल नन्दा के आह्वान पर शिवरात्रि पर कुरुक्षेत्र में ।
16 फरवरी, 1977 कुरुक्षेत्र	ब्रह्मसरोवर के तट पर विशाल हाल में शिवरात्रि पूजन । संगमेश्वर मंदिर दर्शन ।
19 फरवरी, 1977 अहमदाबाद	महामण्डलेश्वर गीताभारती के आमन्त्रण पर अहमदाबाद में ।
8 मार्च, 1977 चित्रकूट	श्री जैपुरिया द्वारा आयोजित स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती की अष्टदिवसीय रामायण कथा के अवसर पर चित्रकूट में ।
19 मार्च, 1977 देवघर	श्री स्वामी अखण्डानन्द जी के साथ देवघर पदार्पण ।
28 मार्च, 1977 देवघर	नरेन्द्र ब्रह्मचारी के आश्रम में अनुष्ठित अन्नपूर्णा पूजा में माँ ।
14 अप्रैल, 1977	कनखल में श्री श्री मुक्तानन्द गिरि जन्मशती वर्ष प्रारम्भ ।
17 अप्रैल,1977 नैमिषारण्य	अक्षय तृतीया पर पौराणिक तथा वैदिक संस्थान की स्थापना में नैमिषारण्य ।
2 से 7 मई, 1977	देहरादून रामतीर्थ मिशन में जन्मोत्सव ।
14 मई, 1977	कनखल में महर्षि महेश योगी का मातृ दर्शन ।
19 मई , 1977	स्वामी शुकदेवानन्द जी द्वारा आयोजित भागवत सप्ताह के अवसर पर बरेली में ।
28 मई, 1977	13 वर्षों के अन्तराल पर अलमोड़ा में माँ ।
12 अक्टूबर, 1977	नरेन्द्रनगर टिहिरी में नवरात्र के अवसर पर देवी भागवत सप्ताह–माँ के ख्याल से, माँ की उपस्थिति ।
18 नवम्बर, 1977 बदरिकाश्रम	म. म. ब्रह्मानन्द जी के आग्रह पर नर्मदा तट बदरिकाश्रम में संयम महाव्रत ।
26 नवम्बर, 1977	प्रायः 13 वर्षों के अन्तराल पर भीमपुरा में ।
25 दिसम्बर, 1977	बैरागढ़ आश्रम में सात दिन ।
31दिसम्बर, 1977	मध्यप्रदेश के भूतपूर्व मुख्य अभियन्ता श्री एन.एन. शाह की प्रार्थना पर पंचमढ़ी में कुछ दिन ।

14 जनवरी, 1978 कनखल की नवनिर्मित यज्ञशाला में विधिपूर्वक अग्नि स्थापना ।

12 फरवरी, 1978 भीमपुरा में प्रथम सरस्वती पूजा ।

14 अप्रैल, 1978 कनखल में मुक्तानन्द गिरि जन्मशती वर्ष की परिसमाप्ति ।

10 मई, 1978 कनखल अक्षय तृतीया की पुण्यतिथि पर आदिगुरु शंकराचार्य की मूर्ति प्रतिष्ठा ।

19 मई, 1978 म. म. पूर्णानन्द जी के आह्वान पर श्री कृष्णनिवास आश्रम में जन्मोत्सव का आयोजन ।

7 अक्टूबर से 11अक्टूबर, 1978 गोंडल महाराज एवं महारानी के आह्वान पर गोंडल में दुर्गा पूजा ।

7 से 14 नवम्बर, 1978 नडियाद महन्त श्री नारायणदास जी के आमन्त्रण पर संतराममंदिर में विशाल संयम सप्ताह । 900 व्रती तथा दो हजार से अधिक लोगों का मातृ सत्संग में योगदान ।

4 दिसम्बर, 1978 मोर्वीराजमहल परिसर में राजमाता द्वारा आयोजित भागवत् सप्ताह में माँ की उपस्थिति ।

13 मार्च, 1979 वृन्दावन आश्रम के अष्टोत्तरशत मृदंग-वादनोत्सव में ।

22 अप्रैल, 1979 अक्षयतृतीया की पुण्यतिथि को दिल्ली आश्रम में कालीमूर्ति एवं दीदी माँ (गिरिजी) की मूर्तिप्रतिष्ठा ।

1 मई, 1979 आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चेन्नारेड्डी के आमन्त्रण पर हैदराबाद में तीन दिन ।

5 मई, 1979 कर्नाटक-राज्यापाल श्री गोविन्दनारायण एवं त्रिवेन्द्रम के एलायाराजा एवं रानी के आमन्त्रण पर बंगलोर में माँ का जन्मोत्सव ।

8 से 16 मई, 1979 बंगलोर द्वारिकापीठाधीश्वर शंकराचार्य द्वारा समारोह का उद्घाटन । दक्षिण की विशिष्ट गण्यमान्य हस्तियाँ माँ के सान्निध्य में ।

17 मई, 1979 मद्रास राजभवन में ।

21 मई. 1979 भुवनेश्वर में राज्यपाल भगवतदयाल शर्मा द्वारा माँ की अभ्यर्थना । वर्षों के उपरान्त स्वर्गद्वार आश्रम पुरी में । जगन्नाथ जी की रथयात्रा का दर्शन ।

27 सितम्बर से 1 अक्टूबर, 1979 कनखल में दुर्गापूजा का भव्य आयोजन माँ की उपस्थिति में ।

18 अक्टूबर, 1979 महाराजा के आमन्त्रण पर गोंडल, दीपावली व अन्नकूट में ।

28 अक्टूबर से 4 नवम्बर 1979 महन्त गणेशानन्द जी के आग्रह पर कुरुक्षेत्र में संयम सप्ताह का विराट आयोजम ।

4 दिसम्बर, 1979 दण्डी स्वामी श्री विष्णु आश्रम जी के निमन्त्रण पर बिहार घाट स्थित आश्रम में ।

20 जनवरी, 1980 अहमदाबाद श्री नानु भाई के वास भवन में आयोजित सरस्वती पूजा में ।

14 अप्रैल, 1980 राँची आश्रम में मुक्तानन्द गिरि की मूर्ति-प्रतिष्ठा में ।

2 से 4 मई, 1980 कनखल में माँ का जन्मोत्सव ।

29 मई, 1980 श्री व श्रीमती खेतान के गृहपरिसर देहरादून में अतिरुद्र महायज्ञ में ।

9 अगस्त, 1980 राजाप्रताप सिंह के आह्वान पर कूचामन में आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह में ।

12 सितम्बर, 1980 वृन्दावन भागवत सप्ताह में, बम्बई से गुरुप्रिया दीदी की संकटपूर्ण अवस्था का संवाद पाते ही मध्यरात्रि में बम्बई रवाना ।

14 सितम्बर, 1980 पूर्ण चिकित्सा संरक्षण में दीदी को लेकर मध्यरात्रि में वाराणसी । माँ का वृन्दावन प्रत्यावर्तन ।

15 सितम्बर, 1980 गुरुप्रिया दीदी का महाप्रयाण ।

16 सितम्बर, 1980 माँ का पुनः काशी प्रत्यावर्तन । दीदी की पवित्र देह की जल समाधि । षोडशभण्डारा ।

6 अक्टूबर, 1980 उदयपुर में नाथद्वार दर्शन ।

14 से 19 अक्टूबर, 1980 श्री बी. के. शाह के पुत्रों के आग्रह पर बम्बई दुर्गापूजा में ।

15 से 22 नवम्बर, 1980 म. म. विद्यानन्द जी के आमन्त्रण पर कैलास आश्रम ऋषीकेश में संयम महाव्रत ।

12 से 19 दिसम्बर, 1980 वाराणसी श्रीमद्भागवत सप्ताह में । दण्डी स्वामी विष्णु आश्रम जी द्वारा व्याख्या ।

7 जनवरी, 1981	श्री गंगेश्वरानन्द जी के शतवार्षिक महोत्सव बम्बई में माँ । डोंगरे महाराज के भागवत में ।
27 जनवरी, 1981	राज्यपाल डा. चेन्नारेड्डी के आमन्त्रण पर सिकन्दराबाद में ।
8 मार्च, 1981	ठाकुर श्री रामकृष्ण परमहंस जी के 145 वें जन्मोत्सव के सिलसिले में बेलूरमठ में पदार्पण ।
10 मार्च, 1981	वाराणसी में योगेशदादा का आतुर संन्यास, निरंजनानन्द तीर्थ नामकरण माँ की उपस्थिति में ।
2 मई, 1981	कनखल में शुभजन्मोत्सव ।
8 मई 1981	अतिरुद्र महायज्ञ का विशाल आयोजन ।
13 जुलाई, 1981	नैमिषारण्य शिवमंदिर-प्रतिष्ठा में ।
21 जुलाई, 1981	श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा माँ की उपस्थिति में पौराणिक शोध संस्थान का उद्घाटन ।
13 अगस्त, 1981	स्वामी श्री आशीषानन्द के आह्वान से पोरबन्दर में ।
23 अगस्त, 1981	मोर्वी राजपरिवार के पुरातन महल में प्रतिष्ठित आशापुरा देवी के मंदिर से संलग्न शिवमंदिर की स्थापना में ।
4 अक्टूबर, से 8 अक्टूबर 1981	कनखल आश्रम दुर्गा पूजा में ।
4 से 11नवम्बर, 1981	कनखल आश्रम में अनुष्ठित संयम महाव्रत में माँ का विशेष ख्याल । विराट् जन समागम ।
24 नवम्बर, 1981	पटना में आयोजित श्री अखण्डानन्द सरस्वती के भागवत प्रवचन में माँ ।
6 दिसम्बर, 1981	हथुआ राज्य में माँ का पदार्पण, राजकीय अभ्यर्थना ।
10 जनवरी, 1982	प्रयाग (अर्द्ध) कुम्भ मेला प्रवेश की शोभायात्रा में । कुम्भ के अवसर पर माँ की उपस्थिति में चार अखाड़ों के साधुओं का भण्डारा ।
14 जनवरी, 1982	मकर संक्रान्ति तथा मौनी अमावस्या के शाही स्नान की शोभायात्रा में । माँ के अपूर्व तेजोमय स्वरूप दर्शन हेतु जनता में उतावली । माँ का विन्ध्याचल आगमन ।
30 फरवरी, 1982	वाराणसी आश्रम में सरस्वती पूजा में माँ ।
26 जनवरी, 1982	श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा दिल्ली आश्रम के नये चिकित्सालय का उद्घाटन ।
7 मार्च, 1982 वृन्दावन	उत्तरप्रदेश राज्यपाल सर सी. पी. एन. सिंह वृंदावन माँ के दरबार में ।
8 मार्च 1982	शतवर्षीय म.म. गंगेश्वरानन्द जी महाराज जोधपुर जयसिंह, काश्मीर महाराज डा. कर्ण सिंह का मातृदर्शन ।
26 मार्च, 1982	दिल्ली होकर आगरतला रवाना ।
30 मार्च, 1982	आगरतला आश्रम में ।
31 मार्च, 1982	माँ के ख्याल से माँ के लिए निर्मित कक्ष में ब्रह्मविद्यारूपिणी सरस्वती तथा बरामदे में शिव प्रतिष्ठा । त्रिपुरावासियों के मातृ दर्शन की तीव्र अभिलाषा का हृदयस्पर्शी दृश्य ।
6 से 8 अप्रैल, 1982	आगरपाड़ा आश्रम में नवनिर्मित मंदिर में मुक्तानन्द गिरि की मूर्ति-प्रतिष्ठा ।

26 अप्रैल, 1982	अक्षय तृतीया के पुण्य पर्व पर माँ के लिए कनखल आश्रम परिसर में एक नवनिर्मित कुटीर का उद्घाटन ।
29 अप्रैल, 1982	सर पद्मपत सिंहानिया परिवार के विशेष आमन्त्रण पर कानपुर में ।
3 से 11 मई, 1982	कनखल में जन्मोत्सव ।
17 मई, 1982	प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी का मातृ दर्शन ।
16 जून, 1982	श्रृंगेरी के जगद्गुरु शंकराचार्य का गंगोत्री जाते हुए उत्तराधिकारी भारतीतीर्थ सहित कनखल में मातृ दर्शन ।
26 जून, 1982 देहरादून	किशनपुर भागवत सप्ताह में ।
30 जून, 1982 देहरादून	यात्रा से लौटकर श्री शंकराचार्य जी का पुनः मातृ दर्शन ।
2 जुलाई, 1982 देहरादून	ठाकुर श्री सीतारामदास ओंकार नाथ माँ की सन्निधि में, शरीर स्वस्थ रखने की प्रार्थना बार-बार ।
2 जुलाई, 1982 देहरादून	श्री शंकराचार्य जी की माँ से अपने शरीर को ठीक रखने की प्रार्थना। माँ की वाणी-"बाबा इस शरीर की कोई बीमारी नहीं है । जो कुछ देख रहे हो यह सब ही अव्यक्त की क्रिया ।"
5 जुलाई, 1982 देहरादून	किशनपुर आश्रम से खेतान के गृह परिसर में निर्मित कुटिया में माँ का विश्राम के लिए पधारना ।
11 जुलाई, 1982 देहरादून	माँ के शरीर की अस्वस्थता का प्रसंग सुनकर प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का सपरिवार मातृ दर्शन ।
20 जुलाई, 1982 देहरादून	अमेरिका से योगशक्ति माँ का भी आगमन ।
28 जुलाई, 1982	श्री खेतान के गृहपरिसर निर्मित कुटिया से माँ का किशनपुर आश्रम पधारना । प्रख्यात डा. उडुप्पा का माँ को देखने के लिए आना । चिकित्सा की दृष्टि में पथ्य व्यवस्था ।
23 अगस्त, 1982 देहरादून	बम्बई के डा. सेठ भी माँ की सेवा में ।
26 अगस्त, 1982 देहरादून	राधाष्टमी तिथि । शिवानन्द आश्रम ऋषीकेश से अन्तःप्रेरणा से प्रेरित होकर स्वामी कृष्णानन्द जी द्वारा राधारूप में माँ की पूजा । लौकिक दृष्टि से शायद यही आखिरी पूजा । मध्यरात्रि में माँ की वाणी-"जो जहाँ है बैठ जाओ"
शुक्रवार, 27 अगस्त, 1982 देहरादून	किशनपुर आश्रम में सान्ध्यवेला में 7 बजकर 45 मिनट पर माँ का व्यक्त स्वरूप अव्यक्त में विलीन ।

मातृवाणीशतकम्

(१)

अपने को पाने की दिशा एक मात्र दिशा । और सब वृथा एवं व्यथा ।

(२)

मनुष्य का ही तो कर्तव्य है अपने को जानना अपने को पाने की चेष्टा करना । मनुष्य का कर्त्तव्य है भगवत् प्राप्ति एवं सत्यानुसंधान ।

(३)

ऋषिपंथ से गृहस्थाश्रम की यात्रा में चलने का व्रत लेना ।

(४)

किसी को भी कुछ छोड़ना नहीं पड़ता, कर्म की पूर्णाहुति के साथ-साथ त्याग अपने से ही हो जाता है ।

(५)

यथार्थ में जो आलोक चाहता है, भगवान् उसे बिना दिये रह नहीं सकते ।

(६)

सत्यस्वरूप भगवान् का संग माने ही सत्संग, जिसका आश्रय लेने से सभी दोष दूर हो जाते हैं उनका ही आश्रय करना । वे ही पिता, वे ही माता, वे ही बन्धु-सखा सब हैं–यह ज्ञान रखना चाहिये ।

(७)

जब तक अपनी भोग वृत्ति व अभाव का बोध है तब तक दूसरों के अभाव को देखना चाहिये । ऐसा न होने से मनुष्यत्व लाभ नहीं होता ।

(८)

संसार यात्रा में कभी कोई सुखी नहीं होता, परमार्थ यात्रा ही परम सुख का मार्ग है । उसी अपने मार्ग पर स्वयं चलने की चेष्टा करो, जहाँ सुख-दुःख का प्रश्न नहीं है । अभिमानशून्य परमानन्द की ओर ।

(९)

अस्थिर होने से नहीं चलता, अस्थिर भगवान् के लिए होना पड़ता है । अभी तक उनकी आवाज सुनाई नहीं दी । अमूल्य समय बेकार चला जा रहा है । विषय वासना में अस्थिर होकर मन और शरीर को क्लेषित नहीं करना चाहिये ।

(१०)

स्वयं भगवान् का अनंत रूप घर-घर में है । आने से ही जाना पड़ता है, दो दिन आगे और पीछे । जिनकी सृष्टि, स्थिति, जिसमें लय उनकी शरण बिना ज्वाला-निवारण का रास्ता कहाँ ?

(११)

अन्तर संन्यास ही तो संन्यास, संन्यासी होना बड़े भाग्य की बात है । सर्व त्याग । संन्यास सर्व-नाश । संन्यास लेना और संन्यास होना एक बात नहीं है ।

(१२)

दुश्चिन्ता क्यों होती है जानते हो, भगवान् को दूर रखने से ही दुश्चिन्ता होती है ।

(१३)

हर समय तुम पास ही हो । दुर्बुद्धि दूर करनी होगी । तुम भीतर बाहर, नस-नस में, चारों ओर विश्व में विश्वातीत में हो ।

(१४)

सत्य स्वरूप, सुख स्वरूप, आनन्द-स्वरूप एक मात्र भगवान् । मानव जीवन का एक मात्र उद्देश्य है भगवान् का लाभ ।

(१५)

उन्हें पुकारना, उन पर निर्भर रहना । जहाँ भी रहो उनकी गोद में हो यह भाव रखना । जगत् में सुख पाना चाहते हो तो उनको पाने की कोशिश करो ।

(१६)

मन को उनके चरणों से अलग मत रखो । इससे हर प्रकार के प्रलोभन से बच सकोगे ।

(१७)

शुद्ध पवित्र फूल ही भगवान् के चरणों में चढ़ता है । अपने को भगवान् के चरणों में अंजलि देने के लिए सर्वदा शुद्ध पवित्र भाव को बनाये रखो ।

(१८)

संकुचित चित्त को बृहत् करके स्वार्थ और परार्थ का अभेद ज्ञान उत्पन्न करने के उद्देश्य से परोपकार, दान, दया इत्यादि द्वारा यथासाध्य सेवा करना ।

(१९)

किसी भी सत्कर्म में अनिच्छा या आलस्य बिल्कुल वर्जित है । किसी की किसी प्रकार की सेवा में जो कष्ट होता है, उसे आनन्द के साथ ग्रहण करो ।

(२०)

सत्य स्वरूप भगवान् तुम्हारे ही बीच हैं न ? इसीलिए निजी चिन्तन निजी ध्यान छोड़ना नहीं ।

(२१)

आनन्दमयी माँ कौन हैं ? आनन्दमय ही कौन ? घट पट सर्वहृदय में नित्य विराजित । सर्वत्र ही उनका वास, नहीं होता कभी नाश ।

(२२)

उनको देखने से उनको पाने से सब देखना हो जाता है, सब पाना हो जाता है । अपने को जानने से भय के लिए कुछ नहीं रहता । निर्भय, निश्चय, निर्द्वन्द्व, अव्यय, अक्षय और क्या ? मैं ही समस्त, मैं ही सर्वांश, केवल निर्भर, केवल स्मरण ।

(२३)

दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर इसे व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए । जैसे श्वास चलती है उसी प्रकार नाम को भी चलाने की चेष्टा करते रहो ।

(२४)

अमृत का संधान करो, दरवाजा बन्द करके रखने से रास्ता कैसे देखोगे ? किसी भी उपाय से दरवाजा खोलकर बाहर निकलो, देखोगे रास्ता दिखाई पड़ेगा ।

(२५)

तुम केवल उस लक्ष्य को पकड़ कर चलते रहो, देखोगे कोई न कोई आकर रास्ता दिखा जायेगा, जितनी शक्ति है तुमलोग केवल जाने की कोशिश करते जाओ सहायता पाओगे ही ।

(२६)

जब कोशिश में हो तब कोशिश करनी ही चाहिये । कब वह समय आयेगा कोई नहीं जानता है ।

(२७)

स्वभाव में, स्वरूप में, स्व-स्थिति में अवस्थान करने की क्षमता मनुष्य में ही है । अज्ञान का जैसा पर्दा है ज्ञान का दरवाजा भी वैसा ही है । ज्ञान के दरवाजे से ही स्वभाव में लौट जाते हैं, स्थिति लाभ करते हैं ।

(२८)

परमार्थ-पथ में सहन-शक्ति युक्त, धैर्यशाली, स्थिर, धीर, गम्भीर स्वयं को पाने की क्रिया में स्वयं व्रती रहने पर लहर आने से भी छू नहीं सकती । इसी स्थिति को पाने की चेष्टा करना मनुष्य का कर्तव्य है ।

(२९)

विश्वमंगल करुणासागर भगवान् की कृपा की वर्षा हर समय हो रही है । हर समय मंगल चिन्ता करना कर्तव्य है । मंगल माने भगवत् प्रकाश की जो आशा, पूर्णानन्द पूर्ण प्रकाश जो है ।

(३०)

मनमानी लेकर ही सुख दुःख । मनमानी के पार यदि जाना हो तब उनको मानो ।

(३१)

प्रत्येक जीवन में संयम आवश्यक है, सबसे पहले शरीर के प्रति यथासाध्य शासन दृष्टि से संयम का अभ्यास करना चाहिये ।

(३२)

मनुष्य स्वाधीन गति के अभाव से कर्मक्षेत्र में पंगु हो जाता है । धर्म-क्षेत्र में भी ऐसा होता है । अपनी-अपनी चिन्ताओं का प्रसार न मिलने से साधक की साधन चेष्टा संकुचित हो जाती है । अतएव जो जिस मार्ग पर अग्रसर हो रहा है, उसी मार्ग में शुद्ध-भाव की परिपुष्टि लाभ करने के लिए अपने-अपने पुरुषार्थ का प्रयोग करें । जब लक्ष्य प्राणमय हो जायगा तब जिसको जो आवश्यक हो–"आप से आप हो जायेगा ।"

(३३)

आकृष्ट होने का माने है परिवर्तन होना । तुम जब कभी किसी मनुष्य, किसी वस्तु या भाव के प्रति आकृष्ट होते हो, तभी तुम्हें अपना कुछ त्याग करना पड़ता है, यह स्वतः सिद्ध है कि जितना त्याग करो । उतना पाओगे ।

(३४)

सीमा के अन्दर एक ही भाव को लेकर रहने से जब लक्ष्य स्थिर हो जाता है तब सीमा-बन्धन खुल जाता है और एक ही अनेक और अनेक ही एक प्रतीत होता है । असीम तक पहुँचने की शक्ति प्राप्त करने के लिए सीमाबद्ध होकर चलना उचित है ।

(३५)

भव-यन्त्रणा के बिना भव-यन्त्र के यन्त्री के साथ परिचय की इच्छा जाग्रत नहीं होती । अतएव रोग, शोक, अभाव, अनुताप इत्यादि मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक हैं ।

(३६)

तुम कहते हो कि "हम भगवत् लाभ चाहते हैं" विचार कर देखो, क्या तुम मन-प्राण से चाहते हो ? वास्तव में यदि तुम चाहो तो उन्हें अवश्य पा सकते हो ।

(३७)

"बीज" का अर्थ विशेष परिचय; जैसे तुम्हारा नाम जाना हुआ है और कुछ परिचय जाना हुआ नहीं है पर नाम लेकर पुकारने से ही पास आते हो, उसके बाद सब परिचय ही पाया जाता है ।

(३८)

"नाम में ही बीज है । इसीलिए नाम करते-करते बीज स्फुरित होता है । बीज में भी नाम है । सब में ही सब; जिस भाव से जो भी पड़े हो प्रकाश होना वाञ्छनीय है । जो हो एक कुछ करो, वृथा समय या श्वास नष्ट नहीं करना ।

(३९)

शान्त भाव से बैठ कर जो श्वास प्रश्वास चल रहा है, उसे लक्ष्य करते रहो, और कुछ करने का प्रयोजन नहीं है । श्वास प्रश्वास ही तुम्हारा प्रतीक ।

(४0)

भगवत् प्राप्ति के लिए जो ताप सहन करना पड़ता है, वह ताप सहन ही त्रिताप-ज्वाला-निवारण का सहायक होता है । उसे ही तपस्या कहते हैं ।

(४१)

जैसे आग पानी को सुखा सकती है । पानी जैसे ठंडा कर सकता है, उसी प्रकार एकबार यदि उनका ताप या प्रताप ले सको तो ही त्रिताप की शान्ति ।

(४२)

चंचल मन लेकर उनका नाम जप इस चिन्ता से क्या फल ? ऐसा क्यों सोचते हो ? उनके लिए अशान्ति न होने से शान्ति नहीं होती ।

(४३)

दृढ़ संकल्प के साथ काम में लग जाना आवश्यक है । मरें या जीयें लक्ष्य नहीं छोड़ेंगे । नित्य नियमित आध्यात्मिक उन्नति के प्रयास में लग जाओ ।

(४४)

यह जो गाना हो रहा है, यही हम साधना कर रहे हैं । थोड़े समय के लिए भी गाने को सुनकर मन उदास हो रहा है, यह भी महा साधना ।

(४५)

"प्राणायाम का अर्थ है प्राण का आयाम, नाम जप यदि ठीक-ठीक कर सको, देखोगे, उसमें भी अपने आप ही प्राणायाम हो जाता है । श्वास की ओर लक्ष्य रखकर जप करने से खूब उपकार होता है ।

(४६)

जिसे जो नाम अच्छा लगता है उसको ही करते रहो । गुरु का आदेश, बिना विचार पालन करते जाओ । अपने को उनकी इच्छा पर छोड़ दो । अपनी कोई इच्छा प्रधान मत करो । देखोगे अपने से ही सब प्रकाशित हो जायगा ।

(४७)

कलियुग में सरल सीधे नाम साधन से ही सब होता है। तुम लोग यह नहीं सोचना कि संस्कृत शब्दों में दीक्षा न होने से भगवान् को पुकारा नहीं जा सकता एवं कोई काम ही नहीं होगा। इस शरीर को भी तो देख रहे हो और बातें सुन रहे हो। यह क्या केवल बात ही है। आवश्यकतानुसार सब अपने आप ही आ जायगा।

(४८)

केवल नाम। वे विपद देकर विपत्ति दूर करते हैं। यही अंतिम कष्ट सोचना, और तो कष्ट होगा नहीं। केवल सर्वावस्था में उनको ही पुकारते हुए रोना चाहिये।

(४९)

साकार अर्थात् स्वयं स्व-क्रियारूप में जो आकारान्वित वही आकार। आकार अर्थात् आ-कार। स्वयं ही कार्यरूप में आकार में तो हैं। निराकार माने कार नहीं अर्थात् कार्य नहीं जहाँ, अतः उसका आकार नहीं। और नीर माने जल, जहाँ रखते हो वही आकार धारण करता है। अपना कोई आकार नहीं। और बर्फ क्या ? बर्फ में क्या है ? वही पानी ही है। अतः आकार निराकार का प्रभेद कहाँ, ढूँढ लो।

(५०)

सत्संग क्या ? ना, स्व-अर्थात् वही भगवान्, सच्चिदानन्द स्वरूप, आत्मस्वरूप, जो कहते हैं। स्व का संग, स्व-अंग अर्थात् सर्व अंग ही भगवान् का नित्य प्रकाशित। वह संग होने के लिए, इसलिए ही कहा जाता है, अंग माने सत्संग करो, स्व-अंग होने के लिए।

(५१)

व्याकुलता ऐसी होनी चाहिए मानो घर में आग लगी है, बाहर निकलना ही पड़ेगा।

(५२)

भगवान् को प्यार कर सकने से और दुःख नहीं है। उनके लिए जो विरह वह भी सुख ही।

(५३)

धैर्य ही साधना का प्रधान अंग। धैर्य धारण करना चाहिये।

(५४)

कौन किसका दर्शन करता है, अपने ही अपने को दर्शन करने आये हैं।

(५५)

खाली मुँह बैठना नहीं चाहिये कुछ करना चाहिये। या तो नाम करो, पाठ करो, नहीं तो कुछ सदालोचना करो, कुछ करना आवश्यक है। बेकार बातों में समय नष्ट नहीं करना चाहिये।

(५६)

नाम जप से चित्त-शुद्धि होती है, वह स्थान भी पवित्र होता है। कीर्तन में भी जो कीर्तन करता है उसका चित्त शुद्ध होता है। जहाँ कीर्तन होता है वह स्थान पवित्र होता है। जो कीर्तन सुनते हैं वे भी पवित्र होते हैं।

(५७)

इस पति की चिन्ता जैसे दिन रात कर रही हो, पहले तो ऐसी चिन्ता थी नहीं, पहले विवाह हुआ, उसके बाद पति के लिए चिन्ता प्रारम्भ हुई । उसी प्रकार पहले उनके साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित कर सकने से ही उनके लिए चिन्ता प्रारम्भ होगी ।

(५८)

संसार में रहते हुए ही शान्तभाव से भजन करते रहो । तब जो छूटने का है वह छूट ही जायगा और जो कभी नहीं छूटता है, जाता नहीं है, वह रह ही जायगा ।

(५९)

मिश्री ही मुँह में रखो, मिश्री मुँह में रखने से उसका ऐसा गुण कि पानी अपने आप ही निकलेगा, अर्थात् नाम लेते-लेते नाम में रुचि होगी ही ।

(६०)

संसार में श्रद्धा व उपेक्षा की कोई वस्तु नहीं है, वे अनन्त भावों और अनन्त रूपों से अनन्त खेल खेलते हैं । बहु न होने से यह खेल कैसे चले ? देखते नहीं प्रकाश और अन्धकार सुख और दुःख, अग्नि और जल किस प्रकार एक ही श्रृङ्खला में बँधे हुए हैं । याद रखो, शुद्ध भाव के ही साथ साधना होती है ।

(६१)

संसार में सब एक ही पिता की सृष्टि हैं, इस कारण कोई भी किसी से भिन्न नहीं है ।

(६२)

संसार में जिनके आनन्द का कण मात्र लेकर सभी सुख से दिन बिताते हैं, उनको कोई जानने के लिए उत्सुक नहीं । सब विषय के मूल रूप में जो विद्यमान हैं, उसका अनुसंधान करो यही है तपस्या, यही साधना है ।

(६३)

अपने शरीर को स्वस्थ सुन्दर बनाने के लिए जिस तरह यत्न करते हो, उसी तरह मन को तैयार करने की व्यवस्था करो, देखना, भजन का भाव मन में अवश्य ही आयेगा ।

(६४)

मन का शत्रु और मित्र मन ही है । मन से मन की अज्ञानता दूर करनी होगी । मन को निर्मल करने का सबसे सरल उपाय साधु-सङ्ग और निरन्तर भगवत् नाम कीर्तन ।

(६५)

आत्मतत्व का अनुसंधान करो, नित्यानन्द का ध्यान करो । शुभ मुहूर्त के उदय होने पर देखोगे कि धीरे-धीरे सब ध्यान एक-मुखी होकर बाहर भीतर एक हो गया है ।

(६६)

तुम जो सौत्त्विक आहार के विषय में इतनी युक्ति तर्क करते हो, मेरा कहना है कि सात्त्विक आहार का अर्थ है–"सद्भावों का आहार, सत्य एवं भगवान् में प्रतिष्ठित रहना ।"

(६७)

पुकार तो केवल एक ही है । उसी पुकार के लिए नाना जातियों में नाना व्यवस्थायें हैं । जिस दिन किसी को वैसा पुकारना आ जाता है, उस दिन उसके लिए पुकारने या न पुकारने का छन्द मिल जाता है । वास्तव में तुम उसे पुकारते नहीं हो, वही सर्वदा तुम्हें पुकार रहे हैं ।

(६८)

जो अपने को सम्मान करना जानता है, वह दूसरे का उससे भी अधिक सम्मान करता है । सम्मान के बिना श्रद्धा नहीं आती है, श्रद्धा न होने से प्रेम जाग्रत नहीं होता, इसलिए प्रेम के अभाव के कारण प्रेम के ठाकुर (देवता) बहुत दूर रह जाते हैं । उनका कोई पता नहीं चलता ।

(६९)

एक लक्ष्य होकर एक रूप एक रस, एक-गन्ध स्पर्श अथवा एक शब्द में प्रतिष्ठित होने की चेष्टा करो, उस समय देखोगे इसी एक के भीतर सब हैं ।

(७०)

देखो, हम लोग एक में ही हैं । एक पैर एक पैर करके चलना पड़ता है, एक-एक ग्रास करके खाना पड़ता है । एक-एक करके अक्षर लिखना पड़ता है ।

(७१)

उसी दिशा में चलते रहो । रुकना नहीं । रुक कर मत देखना कि मैं कहाँ तक आया । उससे क्या होता है जानते हो ? जितना आगे बढ़ा जाता है उतना फिर से पिछड़ जाता है ।

(७२)

(अज्ञान का) पर्दा थोड़ा फटने से और जुड़ता नहीं है । जैसे अनार पकने पर किसी को कहना नहीं पड़ता, रंग और सुगंध से ही प्रकाश होता है और बाहर का पर्दा अपने आप ही फट जाता है । एक बार फटने से जुड़ता नहीं ।

(७३)

(बालक की जिद से माता सत्संग से उठने को बाध्य, इसे देखकर) इसी तरह होना चाहिये । तुम लोग भी तो शिशु हो । तुम लोग क्यों तुम लोगों की माँ (भगवान्) को ऐसे तंग नहीं कर सकते ? तुम क्यों नहीं कह सकते, "हे भगवान् जबतक आप हम लोगों को वह आनन्द नहीं दोगे, तब तक हम लोग आपको दिनरात तंग करेंगे; आपको नहीं छोड़ेंगे ।" हम तो बालक हैं । हम सेवा का क्या जाने ? हम केवल आनन्द के लिए उनको तंग करेंगे ।

(७४)

जमीन तैयार होनी चाहिये । इसीलिए तो जितना प्रयास । ऐसा तैयार होना चाहिये, बीज पड़ते ही पेड़ निकलकर फल और फूलों से शोभित हो जाय ।

(७५)

उनको प्यार कर सकने से ही उनके लिए विरह होगा । विरह माने क्या ? ना, वि-रह; विशेष भाव से रहना, अर्थात् भगवान् जिसमें विशेष भाव से रहते हैं उनको ही विरह हो सकता है ।

(७६)

यह जो जिज्ञासा, इसके मूल में संशय । यदि तुम्हारा स्थिर विश्वास रहता कि भगवान् ही सब कर रहे हैं तब जिज्ञासा नहीं आती । जिज्ञासा जब आती है तब समझना होगा कि स्थिर विश्वास नहीं है । इसलिए काम करना चाहिए ।

(७७)

यह भी तो देव मन्दिर, रोग रूप में भी वे ही । मन्दिर मन्दिर में देवता दर्शन दे रहे हैं ।

(७८)

तुम लोग सांसारिक सुख में दुःख में उनको पुकारने को भूलना नहीं । याद रखना यह समय उनको दे दिया गया है, शुद्धबन्धन लेने से अशुद्धबन्धन कट जाता है ।

(७९)

यह जो जागतिक सुख-दुःख की बातें लोग बोलते हैं–यह सब ही तो प्रलाप हैं । प्रलाप क्या है, प्रलय में जिसका लय होता है वही प्रलाप ।

(८०)

किसी से यदि कोई चीज लेनी हो तो जितनी आवश्यकता हो उतनी ही लेना एवं दूसरे को देते समय जितना पाकर वह सन्तुष्ट हो जाय यथाशक्ति उतना ही देना ।

(८१)

वासनाजनित जो कष्ट है, बाधा विघ्न से आता है । उसके भीतर उनका करुण हस्त सत्य है ।

(८२)

यही समय है अपने निर्माण का । आश्रय लेना होगा त्याग और धैर्य का ।

(८३)

दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर सत्य का अनुसंधान करना मनुष्य मात्र का ही कर्तव्य है । सत्य, त्याग, ब्रह्मचर्य एवं संयमादि की सहायता से श्री गुरुदत्त विषय के आश्रय में रहना ही कर्त्तव्य ।

(८४)

युद्ध कहाँ ? दो पक्ष कहाँ ? कौन जीतेगा ? उनकी जय सर्वत्र । युद्ध कहाँ ? वही–, दो हाथों से ताली नहीं बजाते, उसी तरह ताली बजा रहे हैं । उनका खेल उनकी लीला यह सब । तुम लोग चिन्ता क्यों करते हो ? बैठे-बैठे उनकी लीला देखते जाओ । जो होगा उसी में सन्तुष्ट रहने की कोशिश करो ।

(८५)

कृपा तो वे सर्वदा ही कर रहे हैं । समझने का अधिकारी होने के लिए ही उनकी ओर लक्ष्य करके बैठे रहना पड़ता है । थोड़ा ज्यादा समय दो ।

(८६)

सभी के गुरु रहते हैं सम्प्रदाय रहता है । मेरी बात तो यह है कि बचपन में माता-पिता गुरु थे । बाद में एक जन के हाथ में गोत्रान्तर किया था, वही गुरु । उसके बाद अभी देख रही हूँ कि तुम लोग सब ही, पेड़, लता, पत्ते सभी गुरु ।

(८७)

जो त्याग हो जाता है उसी को त्याग करने की बात उठती है । जो नित्य सत्य वही ग्राह्य ।

(८८)

मनुष्य का कर्त्तव्य है मनुष्यत्व का जागरण, पशुभाव का त्याग, श्रेय ग्रहण प्रेय का त्याग ।

(८९)

मेरा है समझते हुए सभी को पकड़े हुए हो । यह सब दुःख पाने की चेष्टा है । उन्हीं का सब कुछ है समझ कर उन्हें पुकारना ।

(९०)

कर्त्तव्य पालन करते जाओ धीर वीर होकर, वे ही सब करा रहे हैं इसे याद रखो ।

(९१)

जिसका मन सावधान तथा आत्मचिन्ता में रत है, उसे मनुष्य कहते हैं । मनुष्य न होने पर अतिमानव नहीं हुआ जाता । समाज और नीति के अनुशासन पर चलते-चलते मनुष्य को मनुष्यत्व लाभ होता है ।

(९२)

सब ही उनमें, वे ही अपने को लेकर । मनुष्य जन्म श्रेष्ठ है, जैसे शिशु रूपी मूर्ख मनुष्य को शिक्षा के फलस्वरूप विद्वान् किया जा सकता है पर वृक्ष या पशु को तद्रूप नहीं किया जा सकता । मनुष्य कें बीच ही भगवान् का विशेष प्रकाश होता है ।

(९३)

गुरु शिष्य का सम्बन्ध भी एक बंधन है सत्य, परन्तु इस शरीर का यह सब भाव नहीं होता । आत्मा आत्मा में तो सबके साथ बन्धन है ही–और नया क्या बन्धन करोगे ?

(९४)

गुरु वाक्य में विश्वास ही एक मात्र कर्त्तव्य । संसार का संग, उसके भीतर शान्ति कहाँ, सर्वक्षण ज्वाला ही रहती है ।

(९५)

२४ घण्टे में कुछ देर शून्य घर में बैठना । पूर्णमय के अनुसन्धान में प्राण मन उन्मुख करके कुछ समय देना ही पड़ेगा । कुछ समय के लिए मन को शून्य करके केवल गुरु का उपदेश साथ लेकर रहोगे । जहाँ शून्य वहाँ पूर्ण ।

(९६)

(नृत्य से भगवत् भाव की सहायता होती है इस प्रसंग में)–

यदि इस भाव को लेकर काम किया जाय तब सहायता होती है । यही नृत्य की तरंग उसके बाद निस्तरंग भाव से तरंग निस्तरंग के ऊपर चले जाना । जिससे यह सब आ रहा है उसी मूल में जाना चाहिये । क्या कहते हो ?

(९७)

अपना स्वरूप देखने के लिए शरीर की मैल धोने के लिए बदन पर साबुन मलते हैं । साबुन भी तो मैल ही है उसे न धोने पर अपना स्वरूप दिखाई नहीं पड़ेगा । देखो, इसी में ही ज्ञान, कर्म और भक्ति है, जैसे साबुन लगाने पर भी नहीं होगा उसे घिसना पड़ेगा फिर पानी से धोना पड़ेगा तभी न स्वरूप देखोगे । वहाँ किससे धोते हैं जानते हो ? ज्ञान गंगा में धुल जाते हैं ।

(९८)

भगवान् की चिन्ता करते करते साधक तद्भावापन्न हो जाते हैं । इसी लिए कहा जाता है, तुम लोग अपने को जानने का प्रयास करो तभी सब जान सकोगे ।

(९९)

प्रत्येक जागतिक वस्तु व्यक्त और अव्यक्त दो ही । उसी प्रकार ब्रह्म भी व्यक्त और अव्यक्त; ज्ञेय और अज्ञेय युगपत् दो ही ।

(१००)

हृदय ही सुख दुःख के अनुभव का स्थान है । वहीं पर भगवान् का आसन बिछाना चाहिये ।

●

"मैं भी भिक्षुक । जो मुझे जानता है, मैं और वह एक,
जो मुझे जानने की कोशिश करता है मैं उसके पास ।
जो मुझे नहीं जानता उसके लिए मैं भिक्षार्थी ।"

–श्री श्री माँ

दिव्य महिमान्विता–श्री श्री आनन्दमयी माँ

महामण्डलेश्वर श्री १००८ स्वामी विद्यानन्द
कैलास आश्रम, ऋषीकेश

विश्वस्रष्टा परमात्मा ने अनन्तानन्त ब्रह्माण्ड बनाया। उन ब्रह्माण्डों में से अन्यतम यह ब्रह्माण्ड भी है जिसके अन्तर्गत हम सब दिव्यातिदिव्य मातृलीला का दर्शन करते रहे हैं। प्रतिब्रह्माण्ड में अतलादि सप्त नीचे के लोक और भूआदि सप्त ऊपर के लोक माने जाते हैं। इन चतुर्दश लोकों में भूलोक मध्यवर्ती है जो सप्तद्वीपों में विभक्त है। उन सप्तद्वीपों के मध्यवर्ती जम्बू द्वीप है, जिसके नौ खण्ड माने जाते हैं, जो क्षार समुद्र से आवेष्टित है। अन्य द्वीपों का स्वरूप जैसा वैदिक साहित्य में बतलाया गया है वैसा आज के भूगोल में उपलब्ध नहीं होता, फिर भी उसे कल्पनामात्र कहना अनुचित होगा। क्या विज्ञान के द्वारा आविष्कृत टेलीविज़न और रेडियो आज यह सिद्ध नहीं कर रहे हैं कि सुदूर देश में स्थित शब्द एवं चित्र को आधुनिक यन्त्रों से सुना एवं देखा जा सकता है। इन आविष्कारों से पूर्व यदि कोई व्यक्ति बोलता तो उसे मिथ्यावादी ही कहते, किन्तु आज महानगर, गांव, गली-कूचे और पर्वत के शिखरों पर रहने वाले, सभी उसे अनुभव कर रहे हैं। जिस प्रकार भौतिक यन्त्रों के द्वारा भौतिक पदार्थों का आविष्कार, संग्रह और उपयोग सम्भव हो गया है उसी प्रकार आधिदैविक और आध्यात्मिक आविष्कार द्वारा अलौकिक पदार्थों का संग्रह और उपयोग हो सकता है, जिसका उल्लेख हमारे वैदिक साहित्य में किया गया है। सम्भव है जम्बूद्वीप के अतिरिक्त दिव्य द्वीप हों जिन्हें हम अपने इन चर्मचक्षुओं से नहीं देख सकते।

अस्तु, आज जम्बू द्वीप के रहने वाले लोगों के समक्ष हम जम्बू द्वीप के अन्तर्गत भारत भूमि की ही दिव्यतम शक्ति का गुणगान करने जा रहे हैं। इतना तो मानना ही पड़ेगा कि जम्बू द्वीप के अन्तर्गत भारतभूमि यज्ञस्थल है जिसका परिचय स्मृत्यादि धर्मग्रन्थों में दिया गया है। गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, क्षिप्रा आदि देवनदियों के मध्यवर्ती भू-भाग को यज्ञभूमि कहा गया है जहाँ पर किये गये वैदिक कर्मानुष्ठान का फल, स्वर्गादि लोक की प्राप्ति है। इसी भूमि में अग्निहोत्रादि श्रौत कर्मानुष्ठानों का विधान है। स्मार्तकर्म का अनुष्ठान तो जम्बू द्वीप के किसी भी खण्ड में कर सकते हैं किन्तु अग्निहोत्रादि श्रौतकर्म का अनुष्ठान इन्हीं स्थानों में विहित है। उपर्युक्त जिन देवनदियों के मध्यवर्ती भू-भाग में रुरु मृग स्वच्छन्दता से विचरते हों, जम्बूद्वीप का वह भू-भाग यज्ञस्थल माना गया है। यद्यपि राजनीतिक दृष्टि से आज सम्पूर्ण भारत एक शासन के आधीन नहीं है। हम सब के देखते-देखते ही भारत का पूर्ववर्ती भू-भाग कट गया जिसे आज बांगलादेश कहा जाता है और पश्चिम-उत्तर का भू-भाग कटकर पाकिस्तान के नाम से नया देश बन गया है। शास्त्र दृष्टि से नेपाल भी भारत ही है चाहे वह राजनीतिक दृष्टि से भिन्न राष्ट्र क्यों न हो। वहाँ के निवासी आज भी सन्ध्योपासनादि शास्त्रीय कर्म करते समय जब संकल्प-मन्त्र बोलते हैं तो उसे भरतखण्ड ही कहते हैं।

भारत का पूर्वी भाग जो आज बांगला देश कहा जाता है, वहाँ एक उच्च ब्राह्मण परिवार में श्री श्री माँ आनन्दमयी का प्रादुर्भाव हुआ था। माँ के दिव्य जन्म और दिव्य कर्म की अलौकिक गाथा अवर्णनीय है। यूँ

तो सम्पूर्ण विश्व सच्चिदानन्द ब्रह्मस्वरूप ही है जिसके आश्रित त्रिगुणात्मिका अनिर्वचनीया माया, उस परमेश्वर की अध्यक्षता में उसकी प्रेरणा से अनन्त ब्रह्माण्ड का सर्जन, पालन और संहार करती रहतीं है। तमः प्रधान माया भूत-भौतिक जगत्‌रूप से परिणत होती है, शुद्ध सत्व-प्रधान माया संसार के सर्जन एवं पालनादि कार्य में परमेश्वर की सहकारिणी बनती है। वही परमात्मा अपनी दिव्य शक्ति को अधीनकर राम, कृष्णादि रूप से समय-समय पर अवतरित हो लोकों के कल्याण के लिए लीला करता रहता है और कभी-कभी मातृरूप से भी अवतरित हो अपनी दिव्यलीला से लोक का मङ्गल करता रहता है। मलिनसत्वप्रधान-अविद्या, जीव की उपाधि है। उस उपाधि से युक्त जीव जन्म-मरणादि वाले संसार का अनुभव करता है किन्तु विशुद्ध सत्वप्रधान मायोपाधिक चैतन्य ईश्वर का अवतार होने पर उसे देहजनित संसारधर्म नहीं सताता, वह सदा अपने स्वरूप में ही स्थित रहता है एवं लोकमङ्गल के लिए अनेक शास्त्रविहित कर्मानुष्ठान की प्रेरणा मनुष्य को देता रहता है। इन्हीं अवतारों में से श्री श्री माँ आनन्दमयी भी मानी जाती हैं, जिनका समग्र जीवन-चरित्र दिव्यातिदिव्य रूप में देखा गया है।

माँ का प्रथम दर्शन हमें अपने अध्ययनकाल-विद्यार्थीजीवन में काशी में हुआ था। तत्पश्चात् दिल्ली आदि कई स्थानों में माँ का दिव्यदर्शन होता रहा। कैलास आश्रम के अष्टम पीठाचार्य महामण्डलेश्वर अनन्त श्री स्वामी चैतन्य गिरि जी महाराज (शास्त्री जी) श्री श्री आनन्दमयी संघ के आमन्त्रण पर उनके महोत्सवों में समय-समय पर भाग लेते रहते थे। सन् १९७२ के मई मास में अस्वस्थता के कारण वे दिल्ली-आनन्दमयी माँ आश्रम में समायोजित माँ के जन्म-महोत्सव पर स्वयं न जा सके और हमें उसमें भाग लेने के लिए उन्होंने प्रेरित किया। फलतः मुझे उस महोत्सव में भाग लेने के लिए जाना पड़ा और तब से मैं भी माँ का हो गया। ग्रीष्मकालीन मई मास की भीषण गर्मी में लोग कष्ट का अनुभव कर रहे थे। हमने सहज ही श्री श्री माँ से कहा कि माँ! यह उत्सव तो किसी ठंडे प्रदेश में अधिकारीगण मनायें तो बड़ा ही अच्छा होगा। माँ ने स्वामी परमानन्द जी की ओर देखा और कहा. "बाबा! मैं कुछ नहीं जानती, परमानन्द जाने।" हमने स्वामी परमानन्द जी से कहा कि अग्रिम वर्ष माँ का जन्म-महोत्सव उत्तरकाशी में मनायें तो बड़ा ही अच्छा हो। उसी समय स्वामी परमानन्द जी ने माँ के संकेतानुसार आगामी वर्ष माँ का जन्म महोत्सव उत्तरकाशी में मनाने का निर्णय कर लिया और यथासमय उसकी घोषणा भी कर दी। परिणामस्वरूप उत्तरकाशी में यथासमय माँ का जन्म-महोत्सव मनाया गया। इसमें हमारा एक निजी स्वार्थ भी था कि १९७३ ई. के मई मास में होने वाले उत्तरकाशीस्थं नवनिर्मित कैलास आश्रम में माँ के पावन करकमलों द्वारा देवप्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न हो, इसके लिए हमें माँ से पृथक् आवेदन नहीं करना पड़ा और वह काम सहज में ही हो गया। वैशाख शुक्ल त्रयोदशी २०३० वि. की पुण्य तिथि पर उत्तरकाशीस्थ नवनिर्मित कैलास आश्रम में माँ के दिव्य करकमलों द्वारा देवविग्रह की स्थापना हुई। इससे अन्य लोगों को क्या सुख मिला होगा उसे तो हम नहीं कह सकते किन्तु हमें अपार हर्ष हुआ। इस प्रसंग पर एक दिन माँ ने अनुग्रह की अपार वर्षा की। कैलास आश्रम के अन्तर्गत नवनिर्मित कक्ष में माँ विराजमान थीं। अन्य साधकों के साथ मैं भी माँ के पास बैठा था। उस समय माँ अपने जीवन की लीला स्वयं ही सुनाती गयीं और मैं मन्त्रमुग्ध हो सुनता रहा। माँ की लीला-विस्तार-श्रवणाभिलाषा से बीच-बीच में मैं कुछ प्रश्न करता जाता था और माँ सहज में उसका उत्तर देती थीं।

माँ ने कहा–"बाबा ! जब मैं छोटी-सी बच्ची थी तो मेरे विषय में मेरी माँ बहुत चिन्ता किया करती थीं कि यह भोली-भाली लड़की अपने घर में कैसे निर्वाह कर पायेगी ।" माता-पिता को अपनी सन्तान के विषय में ऐसी चिन्ता होना स्वाभाविक है, यद्यपि माँ की दिव्यता का अनुभव तो उन्होंने कई बार किया था । जैसे माँ यशोदा ने भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्यता का अनेक बार अनुभव किया था फिर भी श्रीकृष्ण की प्रेमानुरक्ता माँ यशोदा को उन बातों का स्मरण नहीं रहता था, ठीक वैसे ही अपनी बेटी निर्मला की दिव्यता का अनुभव करने पर भी माता मोक्षदासुन्दरी देवी को अपनी बेटी निर्मला के ऊपर सहज अनुराग के कारण सारी बातें विस्मृत हो जाती थीं और वे सहज रूप में अपनी बेटी निर्मला के विषय में चिन्ता करने लग जाती थीं । बांगलादेश में रहते समय अपनी लीला का एक प्रसंग माँ ने सुनाया था कि "बाबा ! मुझे किसी भी धर्म-सम्प्रदाय की प्रार्थना सुनने पर अपने शरीर की सुध-बुध भूल जाती थी और मैं उसमें तन्मय होकर पूर्वाभ्यास न होते हुए भी उन्हीं की भाँति प्रार्थना करने लग जाती थी । घर के पास एक मस्ज़िद थी । नियमानुसार उस मस्ज़िद में मुल्ला लोग नमाज़ पढ़ा करते थे । एक दिन जब नमाज़ के लिए नमाज़ियों का आह्वान किया तो मैं भी चली गई । यूँ तो मस्ज़िद में स्त्री शरीर को नमाज पढ़ने की प्रथा मुसलमानों में नहीं है फिर भी मुझे किसी ने रोका नहीं और जिस प्रकार घुटने टेक-कर वे लोग नमाज़ पढ़ते हैं, मैं भी पढ़ने लग गयी । मुझे पहले से अरबी, फारसी एवं उर्दू ज़ुबान का कोई पता नहीं था फिर भी नमाज़ के लिए निर्धारित आयतों को मैं उनसे भी अधिक शुद्धरूप में बोलती गयी और जैसे वे लोग घुटने टेककर तथा पुनः खड़े होकर प्रार्थना करते हैं वैसा ही मैं भी करती गयी । नमाज़ पढ़ते समय और बाद में भी उन मुल्लाओं ने केवल मेरे मुख की ओर ही देखा और वे आश्चर्यचकित हो चुपचाप देखते ही रहे । नमाज़ के समय हम नमाज़ियों के बीच में एक हिन्दू महिला आकर नमाज़ पढ़ रही है इस बात को देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ, पर वे लोग कुछ बोल नहीं पाये, केवल मेरे मुख की ओर देखते रहे ।" अपने जीवन की ऐसी ही अनेक दिव्य घटनाओं को माँ ने सुनाया । इसी बीच में मैंने एक-दो प्रश्न किये ।

१. माँ ! धर्मशास्त्रों में कन्याओं के लिए मौञ्जीबन्धन (उपनयन) संस्कार का विधान नहीं है फिर आप कन्याओं का उपनयन संस्कार कैसे करवाती हैं ?

माँ ने उत्तर दिया, "बाबा ! एक बार काशी के विद्वानों से पूछा था कि कन्याओं का उपनयन संस्कार हो सकता है या नहीं । काशी के विद्वानों ने कहा–

कहीं-कहीं ऐसा वचन है–'पुराकालेऽपि नारीणां मौञ्जीबन्धनमुच्यते' इति । इस वचन के आधार पर ऊर्ध्वरेता कन्याओं का उपनयन संस्कार पहले भी होता था और आज भी हो सकता है ।

लगभग एक घण्टे तक माँ बोलती रहीं और मैं प्रेमपूर्वक सुनता रहा । अन्त में माँ ने कहा–"बाबा ! मैं क्या-क्या बोल गयी, ख्याल नहीं । आप ने सब कुछ कहला दिया ।" इतना कहने के बाद माँ चुप हो गयीं । मैं माँ को नमस्कार कर अपने स्थान पर आ गया । मैं माँ की दिव्यता का अनुभव करते हुए अत्यन्त प्रसन्न हो रहा था ।

माँ ने यह भी कहा था कि "बाबा ! मुझे लिखना-पढ़ना नहीं सिखाया । मैं तो छोटी बच्ची हूँ ।" पर ऐसा कहने पर भी हमने माँ के पावन मुख से वेद-वेदान्त का सुधानिर्झर बहते देखा है । एक बार गोंडल के

महाराजा शिवराज सिंह के आमन्त्रण पर माँ आनन्दमयी संघ के अधिकारियों ने संयम सप्ताह महाव्रत का अनुष्ठान गोंडल में रखा था। यह स्थान सौराष्ट्र में है। वहां पर अनेक महात्मा पधारे हुए थे, मैं भी था। प्रतिदिन रात्रि-मौन के बाद मातृ सत्संग हुआ करता था। लोग प्रश्न पूछते थे, माँ उसका उत्तर देती थीं। एक ने पूछा–"माँ ! धर्म किसे कहते हैं ? अर्थात् धर्म का स्वरूप क्या है"? प्रश्न सुनते ही माँ ने महात्माओं की ओर देखा और हाथ जोड़कर कहा–"बाबा ! इसका उत्तर आप दे दो।" महात्मा चुप रहे क्योंकि यह समय मातृ सत्संग का था। कुछ क्षण के बाद महात्माओं ने कहा–"माँ ! इसका उत्तर तो आप को ही देना होगा।" यूँ तो महात्मा लोग इस प्रश्न का उत्तर दे ही सकते थे, कोई बहुत टेढ़ा प्रश्न नहीं था, फिर भी माँ ने जो उत्तर दिया वह एक विलक्षण था और शास्त्रानुमोदित भी। माँ ने कहा–"जीव को जो क्रिया-कलाप संसार से उठाकर परमात्मा की ओर लगावे और परमेश्वर के साथ जोड़ दे, बस उसी क्रिया-कलाप को धर्म कहते हैं।" माँ का यह उत्तर कितना सटीक था, उसकी व्याख्या विद्वान् लोग कर सकते हैं। मैंने जो समझा वह निम्नांकित है–

मनुष्य शरीर, मन और वाणी से जो कुछ भी व्यापार करता है वह विहित और निषिद्ध दो भागों में विभक्त करने योग्य है। निषिद्ध कर्म अधःपतन का कारण है, इसलिए कल्याणकारी पुरुष को उसका सर्वथा परित्याग करना ही चाहिए। विहित कर्म के भी चार भाग माने जाते हैं–नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और काम्य। इनमें नित्य, नैमित्तिक एवं साधारण प्रायश्चित्त सदा अनुष्ठेय हैं। इनके अनुष्ठान से साधक अनेक कालुष्य को धो डालता है और प्रत्यवाय से बचता रहता है। अपने किसी विहित कर्म के न करने और निषिद्ध कर्म के करने का पता लग जाने पर तदुचित असाधारण प्रायश्चित्त भी साधक को करना चाहिए। पर काम्य कर्म का परित्याग कल्याणकामी पुरुष कर दे, इसी में उसका मङ्गल है। इस प्रकार विचार करने के बाद यह निश्चित हो जाता है कि माँ का संकेत निषिद्ध एवं काम्य कर्म का सर्वथा परित्याग कर देने का है और विहित कर्म में से नित्य, नैमित्तिक तथा प्रायश्चित्तरूप कर्म का अनुष्ठान साधक को करते रहना चाहिए, वह भी भगवत्पूजा समझकर करना चाहिए। भगवदर्पण बुद्धि से किया हुआ कर्म परम्परा से मोक्ष का साधन बन जाता है और वही धर्म का स्वरूप है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है–

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि॥

(गी. ९/२७-२८)

गीतोक्त इस वाक्य से माँ के उपदेश का समर्थन हो रहा है जिसे माँ ने धर्म की परिभाषा करते हुए कहा था। कई बार माँ का उपदेश लोग समझ नहीं पाते थे क्योंकि माँ प्रायः समाधि भाषा में बोला करती थीं। जिस प्रकार महाभारत के कूट श्लोक सामान्यतः लोग नहीं समझ पाते, ऐसे ही माँ का उपदेश हुआ करता था। पर वे धन्यवाद के पात्र हैं जिन्हें माँ का सान्निध्य प्राप्त हुआ एवं उपदेश श्रवण का अवसर भी मिला।

हम माँ की जन्मशताब्दी के पावन अवसर पर उनके दिव्य गुणों की चर्चा द्वारा अपनी प्रणत श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। इत्यों शम्।

श्री माँ

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि

(निवर्तमान जगदगुरु शंकराचार्य)

ब्रह्मतेज सम्पन्ना, हिमवत शान्त करुणामूर्ति मां आनन्दमयी विश्व की अनुपम विभूति थीं उनका सानिध्य जिन्हें प्राप्त हुआ वे सभी साधक, सन्त, गृहस्थ, राजनेता धन्य हैं । माँ की सन्निधि का महत्व कृपण के धन की भांति प्रतिपल स्मरणीय है ।

मुझे ब्रह्मचारी जीवन में प्रथम दर्शन नैमिषारण्य में प्राप्त हुआ था । हिमालय कीं उपत्यकाओं में तप, साधना एवं आत्मविचार करने का संकल्प उनके प्रथम दर्शन से ही स्फुरित हुआ था । विश्वविद्यालय का शिक्षण समाप्त कर मौन रहकर तपस्या करते हुये कई वर्ष व्यतीत हुये तब प्रारब्धवश 'जगद्गुरु शंकराचार्य' के पावन पद पर प्रतिष्ठित होने का अवसर आया । श्री माँ का अप्रत्यक्ष संरक्षण बल प्रदान करता रहा । एक बार माँ ने कहा "बाबा ! पदारूढ़ व्यक्ति अनजाने विमूढ़ हो जाते हैं इस बात का ध्यान रखना" । यह वाक्य सदा मेरी स्मृति में रहा और दस वर्ष शंकराचार्यपद का दायित्व निभाने के बाद श्री माँ ने पदत्याग का बल प्रदान किया ।

कनखल स्थित माँ के आश्रम में अनेक बार साधन सप्ताह में उनके दर्शन हुए । श्री माँ बड़े मनोयोग से सन्तों के प्रवचन श्रवण करती थीं यद्यपि उन्हें सब ज्ञात था तो भी 'लघु' पर प्रीति और अनुग्रह श्री माँ का सहज स्वभाव था ।

श्री माँ रायवाला जंगल (ऋषिकेश) में एक भक्त के भवन में विश्राम कर रही थीं वहाँ भी मैंने श्री माँ के दर्शन किये और उन्हें उपनिषद् के मंत्र सुनाये । माँ ने उनका जो रहस्य मुझे समझाया माँ उनके अनुभवगम्य शास्त्रबोध से मैं अत्यंत प्रभावित हुआ ।

श्री माँ का चरित्र तो सागर की गहराई की भांति मापरहित है ।

उनका आध्यात्मिक तेज अमर एवं शाश्वत है । सब साधकों को आज भी उनकी ऊर्जा का अनुभव होता है । श्रद्धा और निष्ठा जितनी प्रबल होगी उतनी ही अनुभूति भी अनुपम होगी ।

श्री मां के चरणों में सहस्रशः वंदन ।

●

श्री श्री माँ के दिव्य संस्मरण

म. म. श्री १००८ ब्रह्मानन्द गिरि महाराज
संन्यास आश्रम, बम्बई

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीम् ।
नानालङ्कृति राजमान वपुषं बालोडुराड् शेखराम् ॥
हस्तैरिक्षुधनुः सृणी सुमकरां पाशं मुदा विभ्रतीम् ।
श्री चक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥

ब्रह्मलीन परम पूज्य श्री १००८ महामण्डलेश्वर श्री स्वामी महेश्वरानन्द गिरि जी महाराज के साथ श्री श्री माँ का बहुत प्रेम था । श्री श्री माँ ने हमारे साथ भी वही प्रेम बनाए रखा, जिसका मैं हार्दिक आभारी हूँ ।

योग-सिद्धिसम्पन्न करुणामयी माँ शरणागत भक्तों का कल्याण करने वाली थीं ।

१. एक बार की बात है कि श्री श्री माँ के पास एक तान्त्रिक अपने कई भक्तों के साथ आए । उनके भक्तों ने श्री श्री माँ से कहा कि हमारे महाराज जी चामत्कारिक रूप से मिस्री, लौंग, इलायची इत्यादि जो चाहें–अपनी सिद्धि से निकाल देते हैं । इतना कहने पर भी माँ ने कहा–अच्छा बाबा ! बहुत अच्छा बाबा !! निकालो बाबा ! फिर उस तान्त्रिक ने अपनी तन्त्र विद्या का भरपूर प्रयोग किया, किन्तु श्री श्री माँ की दिव्य शक्ति के सामने उसकी तन्त्र विद्या कुछ काम नहीं कर सकी ।

इससे क्षुब्ध होकर वह बहुत क्रोधित हो उठा और नीचे उतर कर कहने लगा कि आनन्दमयी को मैं देख लूँगा । इन्होंने हमारी सिद्धि को हमारे भक्तों के बीच बाँध दिया है ।

२. पण्डित गोपीनाथ जी कविराज काशी के मूर्धन्य आगमविद् तथा श्री श्री माँ के अनन्य भक्त थे । एक बार कविराज जी के सम्पर्क में एक दिव्य प्रतिभासम्पन्न बालक आया जिसे पूर्वजन्म की स्मृति थी तथा लोक लोकान्तरों में भ्रमण की क्षमता भी थी । श्री श्री माँ के योग वैभव का भी उसे अनुमान था । उसने श्री माँ से कहा–माँ रात को मैं प्रायः लोकान्तरों में भ्रमण के लिए जाता हूँ । माँ आज रात आप भी साथ चलें । श्री माँ ने उत्तर दिया कि तुम लोकान्तरों में चलना, तुम इस शरीर को जहाँ भी याद करोगे, मैं वहीं मिलूंगी । इस शरीर को जाना–आना नहीं पड़ता है । रात्रि में जब वह बालक सूक्ष्म शरीर से लोकान्तरों में भ्रमण कर रहा था उसने जहाँ भी श्री माँ को स्मरण किया, वहीं उसे श्री माँ के दर्शन प्राप्त हुए । फिर अनेक स्मृतियों के आधार पर उसने श्री माँ की व्यापकता की पुष्टि की । यह जानकर श्री कविराज जी को अत्यन्त हर्ष का अनुभव हुआ । ऐसे अनेक प्रसंग हैं जिनसे श्री माँ की सर्वव्यापिनी शक्ति एवं उनके योग-ज्ञान का परिचय मिलता है ।

३. गुजरात में गंगनाथ के समीप नर्मदा तट पर, भीमपुरा में माँ का एक बहुत ही सुरम्य आश्रम है । श्री श्री माँ बद्रिकाश्रम संयम सप्ताह के बाद अपने संत एवं भक्तों के साथ उस आश्रम में पहुँचीं । श्री माँ के सभी आश्रमों के अध्यक्ष श्री वी. के. शाह सपत्नीक उनके साथ थे, किन्तु एक सप्ताह के बाद श्री माँ

एकाएक बिल्कुल अस्वस्थ सी हो गयीं और उन्होंने सभी भक्तों से बोलना चालना तथा भोजन आदि भी त्याग दिया। सभी आश्रमवासी बहुत चिन्तित रहने लगे। दैववशात् मैं बद्रिकाश्रम पहुँचा। यद्यपि मुझे ज्ञात हुआ कि श्री माँ भीमपुरा आश्रम में पधारी हुई हैं। हम पहले से विचार कर ही रहे थे कि श्री माँ के दर्शनार्थ जाना चाहिए। तभी माँ की तरफ से एक दो संत बद्रिकाश्रम आए और बोले कि श्री माँ ने आप को याद किया है। हम माँ के दर्शनार्थ जब भीमपुरा पहुँचे उस समय भी श्री माँ अस्वस्थता की ही लीला में थीं। किन्तु हमारे पहुँचते ही श्री माँ ने हमें आनन्दमयी रूप में दर्शन दिया। मैंने पूछा माँ आपका यह शरीर स्वस्थ-प्रसन्न है न ?

उसी समय श्री श्री माँ आनन्दमयी भाव से प्रसन्न चित्त एवं मधुर मुसकान बिखेरते हुए बोलीं– बाबा सब ठीक है। इसी प्रकार श्री श्री माँ से मेरी और वार्ता होती रही। उसी समय वी. के. शाह कहने लगे कि महाराज जी आपसे मिलने के बाद ही श्री माँ इतने दिनों के बाद इस प्रसन्न मुद्रा में हम लोगों को दर्शन दे रही हैं। हम सब बहुत प्रसन्न हुए। ऐसे अनेक प्रसंगों की प्रतीति द्वारा हम श्री माँ की दिव्य महिमा का स्मरण एवं उनकी चिन्मयी लीला का चिन्तन करते हुए उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर अपने को धन्य मानते हैं।

●

"कौन किसका पिताजी ? हमलोग धर्मशाला में हैं।
समय होने पर कोई किसी के लिए बैठा नहीं रहेगा।
विदेश में रहने से ही दुःख।
अपने घर में अपने लोगों के पास रहने से ही दुःख।
अपने घर में अपने लोगों के पास रहने से ही आनन्द।
इसीलिए अपना घर अपने जन को ढूँढो।
विदेश में कितने दिन कष्ट पाओगे ?
उनकी ओर लक्ष्य रखो।"

–श्री श्री माँ

श्री श्री माँ आनन्दमयी का जीवन दर्शन

आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी मंगलानन्द,
गीता मंदिर, कनखल

भारत भूमि पवित्र संतो की भूमि है- जिस भूमि में परमात्मा के अनेक अवतार हुए जैसे राम कृष्ण आदि तथा विशेष विभूतियों का भी आविर्भाव हुआ ।

"बहुरत्ना वसुन्धरा"

इन्हीं विभूतियों में श्री श्री माँ आनंदमयी थीं । आपका प्रादुर्भाव पवित्र भूमि बंगाल में हुआ जो हमारी संस्कृति की जननी है ।

आप का जन्म तथा कर्म दिव्य था तथा ज्ञान विज्ञान से पूर्ण था । माँ में दैवी गुणों की प्रधानता थी । गीता के १६ वें अध्याय प्रथम २ श्लोकों में २९ गुणों का वर्णन है । अभयं से लेकर नातिमानिता, वे सभी गुणों से पूर्ण थीं । उनकी लीलायें भी दिव्य थीं एक एक क्षण परमार्थ से जुड़ा था, जीवन का प्रारम्भ-पूर्व से हुआ जैसे सूर्य पूर्व से उदय होकर दक्षिण पश्चिम की तरफ जाता है वैसे उस दिव्य ज्योति रूपी तेज का पवित्र संस्कारी कुल में प्रादुर्भाव हुआ । यह दिव्य ज्योति जगद् के कल्याण के लिए प्रकट हुई । बाल अवस्था से ही विलक्षणता के दिग्दर्शन होते थे । उनका विज्ञान स्वरूप अलौकिक था, एक में अनेक का दर्शन–

"एकं सद्विप्रावहुधा वदन्ति"

वे अनेक रूपों का दर्शन करातीं–"जाकी रही भावना जैसी हरिमूरत देखी तिन तैसी" जो जिस भाव को लेकर आता था वह पूर्ण होता, उसे उसी भाव के दर्शन होते । "ये यथा मां प्रपद्यन्ते तां स्तथैव भजाम्यहम्" लौकिक पारलौकिक तथा निष्काम भावना भी पूर्ण होती, आने वाले जिज्ञासु धार्मिक हो भक्त हो योगी-ज्ञानी या राजपुरुष सभी को समाधान मिलता था ।

श्री माँ का स्वभाव सहज अवस्था वाला था ब्रह्म चितंन तथा समाधि की अवस्था-माँ अपने आसन में विराजमान होती थीं उस समय अनेक भाव प्रकट होते, किसी को समाधि में किसी को ध्यान में चितंन में कोई सिंहपर आरूढ़ अन्य वाहनों पर भी दर्शन होते, शक्ति के रूप में भक्ति के रूप में मुक्ति के रूप में तथा योगी के रूप में दर्शन होते, यह सब माँ का विज्ञान रूप था । माँ का आशीर्वाद सभी को फलता था, चाहे वह संत हो भक्त हो या राजपुरुष । यह चमत्कार नहीं था परन्तु माँ की सत्य-प्रतिष्ठा और सिद्ध वाणी का प्रभाव था । जैसा योग दर्शन में उल्लेख है–

"सत्य प्रतिष्ठायां क्रिया फलाश्रयत्वम्"

माँ का मौन आशीर्वाद सिद्ध था–

"गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयम्"

संशयो का छेदन करना ही मौन व्याख्या थी । पूर्व दिशा में अनेक साधनाकेन्द्रों की स्थापना की, जिसमें साधक साधना कर सकें । इस दिव्य विभूति ने दक्षिण दिशा में अनेक केन्द्रों की स्थापना की । पश्चिम में नर्मदा तट इत्यादि में भी प्रचार-प्रसार साधना के केन्द्र बने, तत्पश्चात् उत्तर दिशा हिमालय की गोद में अनेक केन्द्रों की स्थापना हुई, जिसमें देहरादून हरिद्वार प्रधान हैं ।

जिस तरह से भगवान आद्य शंकराचार्य ने चार मठो की स्थापना की, उसी तरह माँ की प्रेरणा से चारों दिशाओं में दिव्य धाम बने ।

माँ के संयम सप्ताह भारत के नगर, उपनगर, गांव, तीर्थो में होते थे इस ज्ञान यज्ञ में बड़े-बड़े महात्मा प्रचारक योगी ज्ञानी साधक भाग लेते थे । योगदर्शन में बताया है–

"त्रयमेकत्र संयमः"

पवित्र हिमालय के देहरादून नगर में भौतिक शरीर का त्याग किया, वह दिव्य ज्योति हरिद्वार आई । भगवान दक्षेश्वर के सान्निध्य में ज्योति की स्थापना मन्दिर के रूप में हुई । माँ का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा हैं ! इससे हमें बहुत खुशी है क्योंकि माँ के जीवन से प्रेरणा मिलेगी उनका स्मरण हमारे जीवन में कल्याणकारी होगा । श्री श्री माँ के प्रति हमारी श्रद्धाञ्जलि भावञ्जलि प्रेमाञ्जलि के सुमन अर्पण करते हुए अपने को धन्य मानते हैं ।

●

प्रश्न – सम्प्रदाय सम्प्रदाय का विद्वेष हमारे यहाँ है । आपका किस सम्प्रदाय से विद्वेष है ?

माँ – विद्वेष के साथ विद्वेष

श्री श्री आनन्दमयी माँ : एक संस्मरण

म. म. श्री १००८ स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती
जगद्गुरु आश्रम, कनखल

माननीया श्री श्री आनन्दमयी माँ को मैंने जितना जाना, अपने अनुभवों के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि वे ब्रह्ममूर्ति थीं । वे स्त्री-पुरुष के शरीरभेद से परे थीं । शारीरिक संरचना के कारण लोग भले ही उन्हें स्त्री-शरीरधारिणी के रूप में देखते रहे हों, लेकिन मुझे उनके सान्निध्य में जो अद्‌भुत अनुभूति हुई, उससे ज्ञात हुआ कि वे न स्त्री थीं, न पुरुष । यह तो शरीर धर्म है और उनमें तो देहाध्यास था ही नहीं । देहात्म तादात्म्याध्यास न होने के कारण वे स्वस्वरूप ब्रह्मरूपता में ही सदा अवस्थित रहा करती थीं । अतः उनके सम्बन्ध में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा 'गीता' में कहा यह कथन पूर्णरूप से चरितार्थ होता है–

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छत्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ॥

वे परमात्मा की तेजोंऽशसम्भूत दिव्य विभूति थीं । पुष्प से भी कोमल और वज्र से भी कठोर उनका चरित था । जैसा कि भवभूति ने उत्तररामचरित में लिखा है–

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति ॥

अर्थात् लोकोत्तर महापुरुषों के चरित्र को कौन जान सकता है । वे वज्र से भी अधिक कठोर फूल से भी अधिक सुकोमल होते हैं । वे महान् योगी भी थीं । कभी-२ अपने आपको पर्वत के समान भारी बना लेती थीं, जिसे बीसियों व्यक्ति मिलकर भी हिला-डुला नहीं पाते थे तथा कभी इतनी हल्की हो जाती थीं कि बच्चा भी उठाकर सिंह पर बिठा दे ।

वे "ज्ञात वेद" थीं । अर्थात् जैसे देवताओं को बिना अध्ययन के ही सब विषयों, शास्त्रों का ज्ञान होता है, वैसे ही उन्हें अध्ययन के बिना ही सब वेद और वेदार्थ ज्ञात था, अतः उन्हें हम 'जन्मान्तर ज्ञातवेद' कह सकते थे । जब उनके साथ हमारा विचार-विमर्श होता था, तो वे कहती थीं, वेद तो अपौरुषेय हैं, साक्षात् ईश्वर के वचन हैं, आदेश रूप हैं, हमारे हिन्दू समाज के सर्वप्रमाणों के प्रमाणभूत हैं । समस्त प्रमाणों का प्रामाण्य भी वेद से ही है । वेदों का स्वाध्याय ही मानवमात्र के लिए मङ्गलकारक है । "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" अर्थात् समस्त वेद धर्म का मूल स्रोत है । इसीलिए कहा है–"वेदविहितो धर्मः ।" अर्थात् धर्म क्या है ? जो वेद में विहित है, वही धर्म है ।

शक्तिस्वरूपिणी माँ आनन्दमयी

महामण्डलेश्वर स्वामी संतोषपुरीजी (गीताभारती)

श्री-श्री माँ आनन्दमयी स्वयं आनन्द स्वरूप होते हुए सबको आनन्द प्रदान करती हैं । आनन्द शब्द ब्रह्म का वाचक है । वेद में कहा गया है कि आनन्दाध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते आनन्देन जातानि जीवन्ति आनन्दं प्रयन्त्यभि संविशन्ति अर्थात् आनन्द रूपी ब्रह्म से समस्त जीव पैदा हुए हैं, आनन्द की इच्छा से ही इस संसार में जीवित रहते हैं और अन्त में आत्मानन्द रूपी शक्ति को पाकर आनन्दरूपी ब्रह्म में ही लीन हो जाते हैं । यह आनन्द रूप ब्रह्म व आनन्दमय शक्ति ही जीव की उत्पत्ति - स्थिति और लय का प्रधान कारण मानी जाती है । शक्तितत्व का ज्ञान उतना ही सूक्ष्म है जितना ब्रह्म तत्व का । ये दोनों ही दुर्ज्ञेय हैं । दोनों को यथार्थरूप से समझने के लिए अनेक दर्शनों का प्रपञ्च हुआ । एक का यथार्थ बोध दूसरे को ठीक-ठीक ज्ञान कराने के लिए काफी समर्थ है अथवा इन दोनों में से किसी एक का ज्ञान कर लेना ही दूसरे को अच्छी प्रकार समझ लेना है । दोनों में से किसी एक को जानना - पहचानना और उसे स्वीकार करके उसकी तह तक पहुँचना ही परम पुरुषार्थ है । इसी परम प्रयोजन को दृष्टि में रख कर ही शास्त्रों की आगमों की तथा दर्शनों की भी प्रवृत्ति हुई है । इन दोनों में से किसी एक की आराधना न करके जीवन व्यतीत करना बुद्धि को पाकर भी पशु तुल्य रहने के समान है ।

इसी ज्ञान के लिए ही धर्म - अर्थ - काम - मोक्ष - यह चतुर्विध पुरुषार्थ प्रवृत्त हुए हैं । मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य इन दो में से किसी एक का ज्ञान जिसने ठीक से कर लिया, समझो वह दोनों को ही जान चुका है । क्योंकि शक्ति का सीधा सम्बन्ध ईश्वर से है । प्रकृति की जितनी भी शक्तियाँ हैं, वे सब ईश्वरीय शक्ति की ही अभिव्यक्तियाँ हैं । इसी से उस मूलशक्ति को सामर्थ्ययुक्त कहा गया है जो आनन्दमय ब्रह्म अथवा आनन्दमयी शक्ति के नाम से जाना व पुकारा जाता है, जो परमसुख - परमशान्तिमय आनन्द ही आनन्द प्रदान करने वाला या करने वाली है । इसीलिए आनन्दमय या आनन्दमयी कहा जाता है ।

विश्व में जहाँ भी शक्ति का स्फुरण दीखता है वहाँ सनातन प्रकृति की ही सत्ता है । उस शक्ति को पिता न कह कर माँ कहना ही युक्तिसंगत प्रतीत होता है क्योंकि जननी की भाँति वह सृष्टि को विकास के पूर्व अपने उदर में रखती है, उसकी वृद्धि एवम् पोषण करती है, उसका प्रसार करती है तथा उत्पन्न हो जाने पर उसका संरक्षण करती है । इसीलिए वह समस्त क्रियाशील जगत की मूल है । उत्पत्ति में ब्राह्मीशक्ति के नाम से, पालन में वैष्णवी शक्ति के नाम से तथा संहार में रौद्रीशक्ति के नाम से जानी जाती है । एक होते हुए भी अनेक रूपों में भासने वाली - वह शक्ति एक ही है जो जगज्जननी माँ - नाम से पुकारी जाती है । यदि वह अपने जगत का सम्पूर्ण रूप से सर्वग्रास करले तो फिर किसकी मजाल है जो क्षण भर भी जीवित रह सके । यह उस जगज्जननी माँ की ही देन है जो हम जीवन धारण करते हैं और अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं । हमारे में इच्छाशक्ति - क्रियाशक्ति - व ज्ञानशक्ति के रूप में वही माँ विराजमान है, उसका बराबर बोध होने पर हृदय उस माँ शक्ति की आराधना करता है कि हे जगज्जननी माँ तुम्हीं सनातन शक्ति हो तुम्हीं विश्व की अनन्त मूल स्रोत हो । तुम्हीं संसार के तुच्छ पदार्थों में सुख का अनुभव कराती हो और तुम्हीं आत्मानन्द रूपी सागर की लहरों के समान हृदय में आनन्दरस को प्रवाहित करती हो । इसीलिए तुम आनन्दमयी हो, माँ हो और करुणानिधि हो । इति शुभम् ।

●

जीवों की उद्धारकर्त्री श्री श्री माँ

महन्त श्री १०८ स्वामी गिरधरनारायण पुरी
श्री पञ्चायती अखाड़ा, महानिर्वाणी (कनखल)

परम पूजनीयां आनन्दमयी माँ इस युग की विभूति थीं । मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ कि माँ का प्रेम, वात्सल्य, नैकट्य, विश्वास और अहेतुकी कृपा मुझे सहज ही उपलब्ध थी । विश्वविख्यात विद्वान् महामहोपाध्याय पण्डित गोपीनाथ कविराज को मैंने निकट से देखा और यह देखकर अभिभूत हुआ कि वह माँ को साक्षात् पराम्बा की कृपामूर्ति, करुणामय विग्रह तथा समस्त शब्दराशि का प्रकाशमय सिंधु मानते थे । दोनों का कालातीत संवाद भी सुना और उस दिव्य भावभूमि का स्पर्श करने का अवसर भी मिला जब माँ ने आचार्यश्री की गूढ़ जिज्ञासाओं का हँसते हँसते समाधान कर दिया । माँ से मेरा परिचय १९३९ में कुंभ मेले में हुआ और माँ की कृपा से वह निरन्तर प्रगाढ़ से प्रगाढ़तम होता चला गया ।

अतीत के झरोखे से झाँकता हूँ तो वे दिन कपूर की सुगन्ध की तरह उड़ते हुए मेरे सामने से गुजरने लगते हैं । परम सिद्ध तपस्वी स्वामी मंगलगिरि जी महाराज ने श्री श्री आनन्दमयी माँ की माता श्री स्वामी मुक्तानन्द जी को इसी कुंभ मेले में संन्यास-दीक्षा दी थी । स्वामी जी महाराज पहले तो दीक्षा देने के पक्ष में न थे पर जब उन्हें ज्ञात हुआ कि वह श्री माँ की जननी हैं तथा साधना की उच्च भूमि पर अधिष्ठित हैं तो दीक्षा के लिए तैयार हो गये । मैं इस घटना के साथ जुड़ा हुआ था । अतः इस दुर्लभ संयोग पर मेरा हर्षित होना स्वाभाविक ही था । यों माँ निर्वाणी अखाड़े से जुड़ीं और सदा सदा के लिए श्री श्री कपिलाचार्य की परम्परा से जुड़कर हम लोगों का आदर भाजन बनीं । माँ निरन्तर अखाड़े में आती रहतीं । उनकी कृपा की अमोघ वर्षा अखाड़े पर होती रही ।

मध्ययुग के सन्तों ने अपनी जीवनचर्या से यह सिद्ध कर दिया कि संन्यास के लिए अरण्यवास आवश्यक नहीं । निरन्तर कर्म करते हुए निःसंग और निर्लिप्त भाव से भजन करते हुए संसारी प्राणियों के कल्याण की कामना से संसार में रहना जीवन साधना का आदर्श है । मन में चरम वैराग्य बसाकर चलने वाले के लिए वन और भुवन में कोई भेद नहीं । विश्वामित्र के मन में मेनका का संस्कार न होता तो वन में वह क्यों मिलती ? जनक यदि सहज वैराग्य-सम्पन्न न होते तो मिथिला के सिंहासन को तिनके से भी तुच्छ क्यों समझते ? शाक्त जीवन दर्शन आन्तरिक फकीरी पर जोर देता है । माँ के श्री चरणों में ऋद्धि-सिद्धि धूल की तरह लोटती रहती थीं पर जो कुछ उनके पास था वह जन कल्याण के लिए था । दुर्गा सप्तशती में कहा गया है कि वह पराम्बा जगन्मूर्ति है, उसी से सब कुछ ओत-प्रोत है, उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है । अतः प्राणिमात्र की सेवा से उसकी विश्वमूर्ति की उपासना होती है ।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ।

श्री माँ ने दीन, हीन, धनी, निर्धन, साक्षर, निरक्षर, ऊँच, नीच, संत, असंत, तपस्वी, तपहीन, साधक, असाधक तथा साधनसम्पन्न और विपन्न का भेद किए बिना सबको समान वात्सल्य दिया । वह माता, पिता,

गुरु, सुहृद, आराध्य, आराधक सब कुछ थीं । मुझे उन्हें देखकर आचार्य अभिनवगुप्तपादाचार्य की यह पंक्ति स्मरण हो आती थी–

त्वामात्मरूपं संप्रेक्ष्य तुभ्यं मह्यं नमोनमः ।

माँ के श्रीचरण भगवती सती की तपःस्थली और भगवान दक्षेश्वर के निकट सदैव बने रहें, यह सोचकर मैंने माँ की सेवा में एक छोटासा स्थान निवासार्थ अर्पित किया । इस स्थान पर एक बरगद का पेड़ था । एक दिन मैं, श्री माँ तथा श्री माँ की सेविकाएँ घूमते हुए उस वट वृक्ष के नीचे आईं । माँ कुछ क्षण के लिए अनन्त आनन्द में लीन हो गईं । हम भी आत्मविस्मृत-से स्तब्ध हो गए, जैसे जड़ हो गये हों । माँ बोलीं, बाबा जैसे इसके बीज में अनेक महावृक्ष छिपे हैं, वैसे ही परम प्रकृति की गोद में अनेक ब्रह्माण्ड और जीव लीला-विलासरत हैं । बाबा, उस लीला को देखो, वह महाचिति सब दृश्य-अदृश्य को अपने में समेटती भी है, व्यक्त भी करती है, जो कुछ भी स्थिर-गतिशील है, वह उसका संकेत मात्र है । वहीं एक तुलसी का पौधा भी है, माँ ने कहा, बाबा, तुलसी को वृन्दा कहते हैं । वृन्दावन में तुलसी के वृक्षों की अधिकता ने भगवान् श्यामसुन्दर को मोह लिया था । माँ बोलीं–काली और कृष्ण, कृष्ण और काली में कोई भेद नहीं । आज इसी वट वृक्ष के स्थान पर माँ की समाधि बनी है । यह स्थान माँ की करुणा के अवतरण के कारण साधकों के लिए पवित्र प्रेरणा का स्रोत है । पता नहीं कितनी देवशक्तियां यहां माँ के पास आईं और कितनी देवशक्तियों से माँ का संवाद हुआ ।

एक घटना मैं कभी नहीं भूल पाता । मेरी इच्छा हुई कि मैं शाकंभरी देवी के दर्शन के लिए जाऊँ । माँ के श्रीचरणों में पुष्पहार अर्पित कर मैंने जाने की आज्ञा मांगी । माँ बोलीं–बाबा ये पुष्प तो मुरझा जाते हैं परन्तु श्रद्धा सुमन कभी नहीं मुरझाते । भगवान को हृदय का पुष्प चढ़ाना चाहिये । तुम्हारा हृदय-सुमन भगवान के चरणों में चढ़ा हुआ है । अतः अब किसी पुष्पहार की तुम्हें आवश्यकता नहीं । मैं आनन्दविभोर होकर लौटा । उसी रात मेरे साथ एक विचित्र घटनी घटी । मै रात्रि के चतुर्थ प्रहर में क्या देखता हूँ कि माँ त्रिशूल लिए एक बालिका के रूप में मेरे सम्मुख खड़ी हैं और मैं उनसे बात कर रहा हूँ । मेरे निकट सोए हुए अर्जुनपुरी बोले आप किसे देख रहे हैं और किससे बात कर रहे हैं ? कमरे में एक आभा का पुंज बिखर गया और उसमें माँ का चिन्मय विग्रह प्रकट हो गया । उस मुख की चन्द्रोपम आभा से सब ताप शान्त हो गए । फिर नींद कहाँ आनी थी । मैं प्रातः अर्चन कर माँ के दर्शनार्थ गया । माँ स्मिति के साथ मुझे देखते ही बोलीं–बाबा इतनी सुबह, रात क्या देखा ? वहाँ कई लोग उपस्थित थे, मैं वह लीला कहना चाहता था, माँ बोलीं बाबा मौन रहो । मौन की भाषा, समाधि की भाषा, बड़ी शक्तिशाली होती है, वाणी वहाँ से अशक्त होकर लौट आती है । अधरों पर अंगुली रखकर उन्होंने दृष्टि आकाश में गड़ा ली । मैं प्रणाम कर लौट आया । मेरे जीवन में ऐसी अनेक घटनाएँ घटी हैं । मैं कहां तक उन्हें लिखूँ ? माँ की महिमा कहना मेरे लिए कठिन है । सच है, वाणी की पहुँच वहाँ नहीं है । माँ संसार से परे थीं फिर भी जीवों पर अनुग्रह करने के लिए संसार में अवतरित हुई थीं । भगवती का अवतरण अनुग्रह के लिए ही होता है । मैंने ही नहीं, अनेक सिद्ध महापुरुषों ने श्री माँ के अनुग्रह को प्रत्यक्ष देखा है । माँ की जन्म-शताब्दी पर मैं शतशत नमनपूर्वक अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ, श्री माँ के उन शब्दों को याद करते हुए कि ये कभी मुरझाते नहीं कभी बासी नहीं होते ।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।

●

वाङ्ग पुष्पाञ्जलि

म. म. श्री १००८ स्वामी निरञ्जनानन्द गिरि
जलन्धर पीठाधीश्वर

आद्य भगवान् शंकराचार्य जी महाराज का कथन है–

"दुर्लभं त्रयमेवेतद् देवानुग्रह हेतुकं
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयम्
(विवेकचूड़ामणि)

प्राणी मात्र में मनुष्य शरीर दुर्लभ है, मनुष्य शरीरधारियों में मुमुक्षुत्व अर्थात् मोक्ष की इच्छावाला दुर्लभ है और मोक्ष की इच्छा वालों में से दुर्लभ ज्ञान की जिज्ञासा वाला तत्वदर्शी श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्य के दुर्लभ आश्रय को प्राप्त होता है, जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज के इस वाक्य के अनुसार ये तीनों दुर्लभ श्री श्री माँ आनन्दमयी के जीवन में साक्षात् उपलब्ध थे ।

मनुष्य को सोचना चाहिये कि सृष्टि में परम श्रेष्ठ मैं हूँ । बहुत से प्राणी मनुष्य जीवन प्राप्त होने पर भी समझते हैं–मैं पापी हूँ, अधम हूँ गृहस्थी में फंसा हुआ बड़ा ही दीन हूँ । वे बड़ी ही हीन भावना में जीते हैं । परन्तु गर्व से मस्तक ऊँचा करके जीने का यदि कोई जीवन है तो मनुष्य जीवन ही है, पशुओं का तो सिर भी नीचे की ओर झुका होता है ।

ईश्वर नित्यज्ञान स्वरूप है और ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को जानता है, वही गुरुभाव, आचार्य भाव का अधिकारी होता है । देहधारी को इस यथार्थ का बोध आवश्यक है– तुम्हारा जीवन ईश्वर के लिये है–ज्ञानार्थ आचार्यों के पास जाने के लिए है । ईश्वर के पास इसलिए नहीं कि ऐश्वर्य मिल जाय– गुरुओं के पास भी इसलिए नहीं कि और कुछ मिल जाय । मात्र अपने स्वरूप की पहचान के लिए ।

सृष्टि में सब नश्वर है, तुच्छ है, एक मात्र ज्ञान ही उपार्जन करने योग्य है । मातृऋण, पितृऋण, शास्त्रऋण, आचार्यऋण इन सबसे यदि उऋण होना हो तो ज्ञान की जिज्ञासा वाला होना चाहिये । यह भी जान लेना चाहिये कि ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं होता । ज्ञान के बिना अज्ञान निवृत्त नहीं होता । अज्ञान यदि निवृत्त नहीं होगा तो कर्मफलभोग बना रहेगा । अनादि काल से अनेक योनियों में भटकने का कारण अज्ञान ही रहा है ।

सो परत्र दुःख पावई सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहिं कर्महिं ईश्वरहिं मिथ्या दोष लगाइ ॥

कोई समझते हैं काल के वशीभूत चक्करमें हैं, कोई समझते हैं, कार्य के वशीभूत चक्कर में हैं । परन्तु जन्म-मरण फलभोग का कारण ईश्वर है, न कर्म है, न काल है, केवल अज्ञान है ।

अज्ञान ही चौरासी लाख योनियों में भटकने का कारण है और अज्ञान की निवृत्ति का उपाय ज्ञान है ।

सारी सृष्टि में एक ही महान् पवित्र सम्बन्ध है गुरु और शिष्य का, आचार्य और जिज्ञासु का । इसी सम्बन्ध को कहते हैं आचार्य का आश्रय ।

यह महान् भारत भूमि है । इसमें श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्य हैं– कोई लाभ न ले तो गलती उसकी है । गंगा हरिद्वार में बहती हैं–त्रिवेणी प्रयाग में यदि कोई स्नान करने ही न जाए तो दोष किसका है ?

माँ आनन्दमयी ऐसी ही ब्रह्मनिष्ठ विभूति थीं जिनके पावन आश्रय में लाखों नर-नारी सन्मार्ग की ओर, ज्ञान और प्रकाश की ओर उन्मुख हो सके । प्राणिमात्र पर दयाभाव और करुणा की वर्षा उनका सहज भाव था । उनका समग्र जीवन आचार्य की महिमा से मंडित था; गुरु का, माता का, जननी का आदर्श स्वरूप था ।

●

माँ की कृपा

श्री १०८ कैवल्यानन्द सरस्वती (कोठारी महाराज)
सूरतगिरि बंगला, कनखल ।

श्री श्री माँ आनन्दमयी का जन्म शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है यह अत्यन्त हर्ष का विषय है । माँ जगदम्बा पराम्बा स्वरूपा हैं । माँ के अद्भुत प्रभाव तथा अलौकिक चमत्कार से मैं भी वंचित न रहा । मुझे स्वयं उनके दिव्य चमत्कार के दर्शन हुए ।

१९७७ में नर्मदा तट बदरिकाश्रम में महामण्डलेश्वर स्वामी ब्रह्मानन्दजी की अध्यक्षता में श्री माँ की छत्रछाया में संयम महाव्रत मनाया गया । मैं भी उस संयम सप्ताह के उपलक्ष में हरिद्वार से कुछ सन्त भक्तों के साथ बदरिकाश्रम गया था ।

उसी संयम सप्ताह के मध्य काल में मेरी तबीयत ऐसी बिगड़ गयी कि मैं बेहाल सा हो गया और मुझे कुछ स्मृति नहीं रही, मैं बेहोश पड़ा था । महामण्डलेश्वर स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज श्री श्री आनन्दमयी माँ के पास संवाद ले गये कि हमारे हरिद्वारस्थ श्रद्धेय श्री कोठारी जी महाराज (स्वामी कैवल्यानन्दजी महाराज) गंभीर रूप से अस्वस्थ हैं ।

सुनते ही माताजी मेरे सिरहाने पहुँच गयीं । उनके साथ बम्बई के डा. सोमानी भी थे । मैं तो बेहोश था । सब आश्रमवासी वहाँ उपस्थित थे और मेरे स्वास्थ्य के लिए चिन्तित थे कि कोठारी जी की संयम सप्ताह के मध्य यह कैसी अवस्था हो गयी ।

श्री श्री माँ ने अपने चमत्कारपूर्ण करकमलों से मेरे मस्तक से पैरों तक स्पर्श किया और उसी क्षण मेरी आँखें खुल गयीं । मैंने उठकर माँ को ओम् नमो नारायणाय किया । जय माँ, जय माँ करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किये । वहाँ पर रहने वाले आश्रमवासी एवं माँ के भक्तगण अत्यन्त हर्षित हुए ।

सबने यही अनुभव किया कि श्री कोठारी जी महाराज ने माँ की अनुकम्पा से पुनः जीवन धारण किया । ये बातें बिलकुल सत्य हैं ।

हम सब यही चाहते हैं कि दुर्गास्वरूपा श्री श्री आनन्दमयी माँ इसी प्रकार सब के ऊपर अनुकम्पा बनाये रखें । शत वार्षिकी के लिए हमारे शुभकामनाएँ हैं ।

●

मातृशक्ति श्री आनन्दमयी माँ

महामण्डलेश्वर डॉ. स्वामी श्यामसुन्दरशास्त्री

बंगाल की भूमि भारतवर्ष की वह पवित्र भूमि है जिसने सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण व्यक्तियों को जन्म देकर भारत का गौरव बढ़ाया है। साहित्यिक क्षेत्र में विश्वविख्यात नोबल पुरस्कार विजेता कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर को जन्म दिया। इसी प्रकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय तथा शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय बंग साहित्य के उत्कृष्ट साहित्यकारों में गिने जाते हैं। विद्वत्ता के क्षेत्र में दूसरे सागर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को जन्म दिया। बंग भूमि विद्वत्प्रसविनी मात्र न होकर वीरप्रसविनी भी है– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी सेनानी थे, जिन्होंने आजाद हिन्द फौज का सुन्दर गठन किया। आध्यात्मिकता के पथ पर चलने वाले सिद्ध महापुरुष श्री रामकृष्ण परमहंस तथा श्रद्धेया श्रद्धा माता को स्वामी विवेकानंद जी जैसे शिष्य मिले, जिन्होंने पाश्चात्य देशों में भी भारतीय आध्यात्मिक दर्शनों का उत्कर्ष बढ़ाया एवं अपना चार दशक का अमूल्य जीवन अपने गुरुदेव के नाम के प्रचार-प्रसार के लिए तथा सामाजिक सेवा के लिए पूर्ण रूप से समर्पित किया। बंगाल की ऐसी पवित्र भूमि में 19 वीं शताब्दी के अन्त में (वर्तमान बांगला देश के खेओड़ा ग्राम में) भारत की आध्यात्मिक विभूति श्री श्री माँ आनंदमयी ने अवतार लिया।

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।
श्री आनन्दमयी देवीं मातरम् परमेश्वरीम्,
तपस्त्याग दयामूर्तिं वन्दे सर्वहितैषिणीम्॥

श्री श्री आनन्दमयी माँ भारत की एक ऐसी तपस्त्याग विभूति करुणावतार मातृशक्ति थीं जो सदा स्वयं प्रसन्न मुद्रा में रहती थीं और दूसरों को भी अपनी दयादृष्टि से प्रसन्नवदन कर देती थीं। त्रिविधताप से संतप्त शरणागत मातृभक्त प्राणियों पर अपनी प्रेममयी अमृतवर्षा कर उनके दुःखों को तत्काल दूर कर देती थीं। माताजी के एक बार के दर्शन मात्र से ही व्यक्ति गद-गद कृत्यकृत्य एवं आनन्दविभोर हो जाता था और माताजी की मूर्ति को अपने हृदय-मंदिर में सदा के लिए विराजमान कर लेता था। माताजी आध्यात्मिक, धार्मिक, समाजसेवी आदर्शों की प्रतिमूर्ति थीं। अतः शिक्षा, चिकित्सा, संयम, सेवा, साधना, सत्संग, सद्भावना को भारत के कोने-कोने में प्रचारित प्रसारित किया था। यत्र-तत्र सर्वत्र साधनालय, महिला विद्यालय, चिकित्सालय, मठ, मंदिर, गौशाला, यज्ञशाला, सत्संग भवन, आदि सेवा केन्द्रों व ज्ञान केन्द्रों की स्थापना की थी।

इस मातृ शक्ति ने कोटि कोटि प्राणियों का उपकार किया था। मातृशक्ति आनंदमयी माँ के मुखाम्बुज से निःसृत सूक्तिधारा "हरि कथा ही कथा और सब वृथा व्यथा" वेद मन्त्र के समान सदा जीवन में घटने वाला मन्त्र है।

●

शक्तिस्वरूपा श्री श्री माँ आनन्दमयी

श्री १००८ स्वामी दयानन्द वेदपाठी महाराज
वेदाश्रम, चान्दोद

दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ भक्तों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं । दुःख, दरिद्रता और भय हटाने वाली देवि ! आपके सिवा दूसरी कौन है जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दयार्द्र रहता हो ।

नित्य सत् चित् आनन्द स्वरूप परिपूर्ण परब्रह्म के जैसे राम-कृष्ण आदि अनेक अवतार होते हैं, वैसे ही महादेवी जगदम्बा के भी अनन्त अवतार होते हैं । भगवान् की दिव्य विभूतियों का कहीं अन्त नहीं है । विश्वकल्याण एवं विश्वशान्ति तथा धर्मोद्धार के लिए, दुष्टों के दमन के लिए, सज्जनों की रक्षा के लिए भगवान् की दिव्य विभूतियों का प्राकट्य समय-समय पर होता ही रहता है । **नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसकः । यद्यत् शरीरमादत्ते तेन तेन स युज्यते"** परमात्मा न स्त्री है न पुरुष है न नपुंसक ही है वह तो जीवरूप से जिस स्त्री या पुरुष शरीर को ग्रहण कर लेता है उसी के अनुसार यह 'स्त्री' है 'पुरुष' है ऐसा कहा जाता है । वस्तुतः ये सब आत्मा की उपाधियाँ हैं । उपाधि आती है उपाधि चली जाती है उपाधि कर्म करती है उपाधि ही फलभोग करती है । आत्मा तो सर्वथा असंग तथा निर्लिप्त है । यही शुद्ध आत्मा ब्रह्मरूप है, ऐसा वेदान्त शास्त्र का सिद्धान्त है ।

माया की उपाधि से विनिर्मुक्त चेतन, शुद्ध ब्रह्म है तथा मायोपाधिक चेतन, अपर ब्रह्म ईश्वर या अन्तर्यामी कहा जाता है । ईश्वर चेतन ही माया को अपने आधीन कर के स्वतन्त्र सर्वज्ञ, सर्वशक्तिसम्पन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, वासुदेव, गणेश, शक्ति, सूर्य आदि रूप होकर विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, प्रंलय रूप कार्य करता है तथा प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों का द्रष्टा साक्षी होकर फल-विधान करता है, नियमन करता है । कभी स्त्री रूप से तथा कभी पुरुष रूप से प्रकट होता है । वही शक्ति महिषासुरमर्दिनी चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी,शुंभ-निशुंभादि दैत्य-विमर्दिनी महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती रूप में प्रकट होकर देवों, सज्जनों, यति-सती धर्मशील भक्तों की रक्षा करती है ।

श्री श्री माँ आनन्दमयी भी एक विशिष्ट भगवद्विभूति के रूप में प्रकट हुई थीं जो **"पाण्डित्यं निर्विद्य बाल्येन तिष्ठासेत्"** श्रुति के अनुसार आत्मज्ञान से पूर्ण हृदय होते हुए भी एक बालिका के समान राग-द्वेष रहित द्वन्द्वातीत आत्मभाव में स्थित रहती थीं । श्री श्री आनन्दमयी संघ मई १९९५ से मई १९९६ तक माँ के विविध आश्रमों, धार्मिक एवं आध्यात्मिक केन्द्रों में माँ का जन्म-शताब्दी-महोत्सव मनाने जा रहा है यह अति हर्ष का विषय है । माँ की पुण्य स्मृति पापनाशक, पुण्यवर्धक एवं ज्ञान विज्ञान प्रदान करके यम-नियम-संयम के साथ वैराग्य युक्त भगवद्भक्ति देने वाली है । माँ का लोकपावनकारी शरीर तप, त्याग,

तितिक्षा, क्षमा, दया, अहिंसा, सदाचार, सरलता, नम्रता, शौच, संतोष, सत्य, निरभिमान, विवेक, वैराग्य, शान्ति आदि दिव्य दैवी गुणों का भण्डार था। साधकों के प्रति स्नेह, सद्भाव, व्रतपालन की दृढ़ता का लक्ष्य तथा महापुरुषों के प्रति श्रद्धा तथा सम्मान का अद्भुत भाव उनमें विद्यमान था। माँ की ममता, वात्सल्यभाव, सेवा, स्नेह, सौजन्य जैसे शुभ गुण आज भी प्रेरणा के स्रोत हैं। माँ हमेशा धार्मिक उत्सव कराती रहती थीं। प्रति वर्ष संयमसप्ताहसम्मेलन, यज्ञ, दान, व्रत, पर्वमहोत्सव आदि का अनुष्ठान करती-कराती रहती थीं। इससे साधकों को पुण्य प्राप्ति तथा सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती थी। आज भी श्री श्री आनन्दमयी संघ माँ के बतलाये हुए मार्ग पर चलकर एक दिव्य आदर्श स्थापित कर रहा है, जो स्तुत्य है, अनुकरणीय है।

इन पंक्तियों के लेखक को माँ का सान्निध्य दीर्घ काल तक प्राप्त हुआ है। माँ सिद्ध योगिनी, विदुषी, व्यवहार में शुद्ध, परमार्थ में सिद्ध, निश्छल, निर्लिप्त-निःसंग, आत्मभाव में स्थित थीं। "यतेन्द्रिय मनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः। विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥" गीता के इस श्लोक में व्यक्त लक्षण के अनुसार नित्यमुक्त, जीवन्मुक्त थीं। 'विमुक्तश्च विमुच्यते' श्रुति सिद्धान्त के प्रमाण से जीवन्मुक्ति का आनन्द प्राप्त करके, पांच भौतिक देह की लीला का संवरण करके विदेह मुक्त हो गईं। हम माँ को हार्दिक भावाञ्जलि-श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं। संघ के द्वारा माँ के जन्म-शताब्दी-महोत्सव मनाने की संकल्पना की सर्वतोभावेन सफलता की कामना करते हैं। माँ के श्रीमुख से सुने हुए 'बाबा' तथा 'पिताजी' ! ये दोनों शब्द आज भी स्मृतिपथ को प्रकाशित कर रहे हैं। माँ के आश्रम में संयम सप्ताह आदि उत्सवों में मैं प्रायः भाग लेने जाया करता था, उसकी अनेक मधुर स्मृतियाँ हैं। माँ ने बहुत सम्मान दिया। वे कहा करती थीं-बाबा, इस बच्ची का ध्यान रखना। माँ मुझे पिताजी कहती थीं और मैं उन्हें माँ कहता था। इस प्रकार माँ का सरल व्यवहार बड़ा ही आनन्दप्रद था। आज भी माँ का स्मरण, उनके गुणों का चिन्तन, उनकी धार्मिक वृत्ति तथा आध्यात्मिक साधना सबको प्रेरणा प्रदान कर रही है। ईश्वर के गुणों के समान माँ के गुणों का अन्त नहीं है, परन्तु माँ के अनन्त गुणों में से कुछ गुणों का चिन्तन ही मानवमात्र को पावन करने में समर्थ है। हम तो माँ को महाशक्तिस्वरूपा ब्रह्ममयी मान कर वन्दना करते हैं।

ॐ शिवः सर्वं सर्वत्र।
शिवोऽहम् महादेव! हर! ॥

पूज्य माँ आनन्दमयी

अवधूत स्वामी आनन्द देव (टाट बाबा)
(वृन्दावन)

प्रभु की विराट् प्रकृति में कभी-कभी ऐसे कुसुम खिलते हैं, जिनकी सुगन्ध से समाज सुवासित हो उठता है । उसी श्रृंखला में हैं पूज्य माँ आनन्दमयी ।

पूज्य माँ से हमारा बहुत पुराना परिचय है, जब माँ का नैमिषारण्य का आश्रम नहीं बना था । माँ सहगल क्षेत्र (नारायण क्षेत्र) में आकर अपनी दिव्य प्रभा से उसे आलोकित किया करती थीं । वहाँ माँ के पावन स्पर्श से जीवन-दान की एक घटना घटी । माँ के आवास के निकट ही एक आँवले का वृक्ष था । वह सूख गया था, मृत्यु को प्राप्त हो गया था । श्री प्रयागनारायण सहगल माँ के अनन्य भक्त थे । उनके पुत्र श्री त्रियुगी नारायण सहगल व अजय सहगल माँ के श्री चरणों में श्रद्धा तो रखते ही थे, हमसे भी प्यार के सूत्र से जुड़े थे । श्री प्रयागनारायण सहगल के प्रेमपूर्ण आग्रह पर हम भी एकान्त अनुष्ठान के लिए उक्त क्षेत्र में कभी-कभी आवास किया करते थे । वह हमारे लिए दूध फल आदि की समुचित व्यवस्था कर देते थे ।

श्री माँ को सहगल साहब व हम लोगों ने आँवले का वृक्ष दिखाया और माँ से निवेदन किया कि माँ इसे स्पर्श कर दें । माँ ने कहा 'बाबा' आप । हमने कहा 'नहीं माँ आप' । श्री माँ ने वृक्ष को स्पर्श कर दिया साथ में माँ की आज्ञापूर्ति के लिए हमने भी उसे छू दिया ।

श्री माँ के द्वारा वृक्ष स्पर्श करने से हम सब बहुत आनन्दित थे । रात्रि भोजन के उपरान्त माँ से चर्चा प्रारम्भ हुई । श्री माँ आनन्द से आपूर थीं, मानों आनन्द की गंगा में बाढ़ आई हो । भरत मिलाप की कथा माँ प्रेम से सुन रही थीं और गदगद हो रही थीं । मुझे साफ लग रहा था कि कथा हम नहीं कह रहे हैं, कोई धारा उतर रही है । माँ की दृष्टि भगवत्मय थी बार-बार कहती थीं-"राम के मुंह से राम की कथा" ।

रात्रि काफी गहरी हो रही थी । सन्नाटा बढ़ता जा रहा था । उधर माँ के मुखमण्डल पर एक अद्वितीय आभा उतर रही थी । फिर हम लोग अपने-अपने विश्रामकक्ष में चले गये ।

कुछ समय बाद आँवले का वृक्ष जीवन्त हो गया । आज भी वह वृक्ष हरा है और माँ के पावन स्पर्श की याद दिलाता है । श्री माँ में समाधि के सौरभ का सौष्ठव था । उन्हें घटने वाली घटनाओं का आभास हो जाता था । एक बार हम लोग माँ के आश्रम हरिद्वार पहुँच गये । भोजन का समय था हमने सोचा भोजन यहाँ नहीं करेंगे । उन दिनों बिना नमक का और उबला भोजन लेते थे । माँ ने भोजन की व्यवस्था करायी । माँ की कुर्सी पड़ गई, माँ आकर आसीन हो गईं । हमारे आश्चर्य का ठिकाना न था जब बिना नमक का उबला हुआ भोजन हमारे समक्ष आया । माँ मन्द-मन्द मुस्करा रही थीं ।

श्री माँ के जन्मोत्सव पर अक्सर जाना होता था । माँ हमारे लिए उसी प्रकार के भोजन की व्यवस्था कराती थीं । एक बार की घटना है हम लोग श्री माँ के पास जा रहे थे । रास्ते में कार की भयंकर दुर्घटना हुई । कार की खिड़की टूट कर दूर जाकर गिरी । जो महिला कार में बैठी थीं, वह दूर सड़क के निकट कंकड़ों की ढेरी पर जाकर गिरीं । उन्हें ऐसा लगा मानों वे माँ की कोमल गोद में हों । सच में माँ में अद्भुत शक्तियाँ निवास करती थीं ।

वर्ष में एक बार जन्मोत्सव की बेला पर माँ के समाधिस्वरूप के प्रत्यक्ष दर्शन तो सभी को हुआ करते थे । रात्रि के दो बजे से ही संकीर्तन की यमुना बहने लगती थी । श्री माँ पलंग पर जाकर समाधिस्थ हो जाती थीं । शरीर पलंग पर पड़ा होता था । श्री माँ समाधि के सागर में समाहित रहती थीं । प्रभात तक पूजा का क्रम चलता रहता था । प्रणाम, परिक्रमा, प्रसाद वितरण के कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते थे । श्री माँ आनन्दमयी आनन्दमय कोश में विहार करती थीं । वैसे माँ तो नित्य सहज समाधि में रहती ही थीं ।

संकीर्तन की धारायें माँ के भावावेश को उद्दीप्त किया करती थीं । रात्रि में मातृ सत्संग में जब माँ के पावन स्वर गूँजते थे तो प्रभुनाम की रसधार बहने लगती थी । आनन्द-वर्षा के बिन्दुओं से भक्तजन भींग जाते थे ।

पूज्य माँ समाधि से लेकर व्यवहार जगत् तक प्रत्येक क्षेत्र में कुशल थीं । जब माँ भोजन कराते समय स्वयं भोजन का निरीक्षण करती थीं तो वात्सल्य भाव टपकता था ।

माँ के सान्निध्य में आनन्द का एक अपूर्व सौरभ विद्यमान था । माँ के निकट बैठने पर चेतना ध्यान की गहराई को सहज में छू लेती थी । एक बार हम लोग जन्मोत्सव पर वाराणसी गये । वहाँ महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज से भेंट हुई । हमने माँ की चर्चा प्रारम्भ की । उंनकी वाणी से माँ के प्रति श्रद्धा-सुमन झर रहे थे । उनका कहना था माँ तो महाभावस्वरूपा हैं ।

पूज्य माँ जनमानस के मध्य आनन्द की यमुना थीं जो निरन्तर शान्ति की तरंगों से जनजीवन की अशान्ति का हरण किया करती थीं । पूज्य माँ का पार्थिव शरीर हमारे बीच अब नहीं है फिर भी माँ नित्य ही उपस्थित हैं । धन्य हैं माँ और उनके सपूत जो अपनी माँ का, अपने गुरु का कार्य पूर्ण समर्पण भाव से सम्पन्न कर रहे हैं ।

सौभाग्यशाली हैं माँ के बच्चे जो गुरु सेवा में समर्पण की ज्योति जगाये बैठे हैं । ये माँ के बच्चे, माँ की जीवन्त ज्योति का निरन्तर अनुभव करते हैं । उन्हें साफ लगता है कि सब माँ करा रही हैं ।

माँ की सूक्ष्म चेतना भारत में ही नहीं विदेशों में जाकर भक्तों को दर्शन देती है उनकी मुसीबत में सहायता करती है । हमारे विदेश भ्रमण में माँ के विदेशी भक्त मिले जिन्होंने माँ की महिमा का गुणगान किया ।

माँ की शक्ति अनूठी है । गुरु तो शक्ति की सरिता होते हैं । शिष्य अपनी श्रद्धा और समर्पण के सूत्र जोड़ लें तो उपलब्धि के कृपाभाजन बन जाते हैं ।

पूज्य माँ का दर्शन भाव की दृष्टि से होता है जिनके पास भाव नहीं हैं वे माँ को पहचान नहीं पायेंगे । माँ से, गुरु से प्रार्थना करो कि हमें वह दृष्टि दो जिससे हम तुम्हारा वास्तविक दर्शन कर सकें ।

पूरे हृदय की प्रार्थना अवश्य सुनी जाती है । कौन कहता है कि माँ नहीं हैं–आज भी वह मीठा स्वर गूंजता है 'बाबा' 'बाबा' ।माँ की जन्मशताब्दी की पावन बेला पर माँ के श्री चरणों में मेरा शत-शत प्रणाम ।

●

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

श्री स्वामी परमेश्वरानन्द सरस्वती
साधना सदन, कनखल

पावन भारत भूमि ऋषि मुनि सिद्ध और सन्तों की प्राकट्य भूमि है । जैसे खान में नाना प्रकार के दिव्य रत्न प्रकट होते हैं, वैसे ही इस भूमि पर न जाने कितने सिद्ध मुनीश्वर प्रकट हुए हैं । इतना ही नहीं, साक्षात् परमात्मा को भी यह भूमि अति प्रिय है, तभी तो उनका बार-बार अवतार लेने का मन इसी भूमि पर होता है ।

इसी श्रृङ्खला में प्रातःस्मरणीया श्री श्री माँ आनन्दमयी दिव्य-चिन्तामणि रत्न रूपेण इस शताब्दी में प्रकट हुई हैं । दिव्य गुण, दिव्य शक्ति से युक्त माँ का यह प्राकट्य भी अलौकिक था । माँ की उस शान्तमुद्रा पूर्ण झांकी का दर्शन जिस भाग्यशाली साधक ने किया उसके जीवन में एक विलक्षण आनन्दानुभूति हुई । जिन साधकों को माँ का सान्निध्य दीर्घकाल तक मिला, उनको माँ की दिव्य शक्ति की अनुभूति किन-किन रूपों में और किस किस प्रकार हुई, इसको तो वे ही जानें । परन्तु हमने जो देखा या सुना उसका स्वल्प उल्लेख यहाँ क़र रहा हूँ–उस समय हरिद्वार आश्रम में माँ विराजमान थीं, भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी माँ के दर्शनार्थ आयीं । हम लोग सोचते थे माँ प्रधानमन्त्री को बैठने के लिए अपने समीप कुर्सी देंगी । परन्तु हमारा विचार निराधार निकला, कुर्सी देना तो दूर माँ ने यह भी नहीं पूछा आप कैसी हैं जो कि साधारण बात होती है । हमको बड़ा आश्चर्य हुआ, इतने बड़े पद पर प्रतिष्ठित महिला का जरा भी आदर नहीं हुआ ? दूसरा कोई होता तो न जाने सत्कार की क्या सामग्री लाता । पर उस समय देखा, माँ की दृष्टि में जो स्थान सभी भक्तों के लिए था वही प्रधानमंत्री के लिये भी था, अर्थात् सत्संग भवन में जो दरी बिछी थी उसी पर प्रधानमन्त्री जी बैठीं ।

उस समय माँ की शान्त मुद्रा़ देखने योग्य थी । भारत की प्रधानमन्त्री के आगमन पर भी माँ की शान्तमुद्रा में जरा भी हल-चल नहीं थी । यह था माँ का अद्भुत समदर्शन मानो 'पण्डिताः समदर्शिनः' का पाठ आज सबको प्रत्यक्ष करवा रही हों ! व्यक्ति में थोड़ी विशेषता आने पर वह अपने स्वरूप को भूल जाता है, पर माँ के समीप धनी, निर्धन, राजा, रंक, विद्वान्, मूर्ख सब एक ही थे । माँ की दृष्टि में आत्मा के अतिरिक्त किसी की स्वतन्त्र सत्ता थी ही नहीं । यह माँ की एक विशेषता देखी ।

माँ की दूसरी विशेषताओं में यह देखा–माँ के मुखारविन्द से निकला शब्द बहुत छोटा होता था, अर्थात् उसे सूत्र रूप वाक्य कह सकते हैं । परन्तु अर्थ-गाम्भीर्य बहुत होता था । साधक लोग माँ से बहुत प्रश्न करते थे । उस समय यदि कोई सन्त महापुरुष माँ के समीप बैठे हों तो माँ कहती थीं बाबा मैं तो बच्ची हूँ पढ़ी लिखी नहीं, इसका उत्तर आप दें–यह माँ का अपना स्वभाव था दूसरों को सम्मान देना । माँ को प्रश्न का उत्तर नहीं आता हो यह बात नहीं, किन्तु साधक भक्त इससे निरभिमानता का पाठ सीखें इसीलिए माँ ऐसा बोलती थीं ।

यदि माँ को ही कहीं उत्तर देना पड़े तो बहुत कम शब्दों में ही बड़े से बड़े प्रश्न का उत्तर दे देती थीं। यह भी माँ की एक विशेषता रही। एक समय हमने निश्चय किया कि एक प्रश्न का उत्तर माँ से ही लें, देखें तो वे कितना लम्बा उत्तर देती हैं। हरिद्वार आश्रम में एक भक्त के साथ मैं माँ के दर्शन के लिए गया था। भाग्य से थोड़ी देर बाद सब भक्त चले गये। तब मैंने सोचा अब मौका है प्रश्न करने का, मैंने कहा– माँ ! बहुत से सन्त भक्त आप को सिद्ध मानते हैं, आप को चमत्कारी बताते हैं क्या यह सही है ?

माँ ने कहा–"बाबा भावना में सब संभव है"। बस इतना ही उत्तर था, इन्हीं शब्दों में माँ ने सब कह दिया। ऐसा प्रश्न मेरे मन में क्यों आया इसका भी एक कारण है। ऋषिकेश कैलास आश्रम में विद्यार्थी रूप में रहते समय, शायद सन् १९६३ या ६४ की बात है, कैलासाश्रम के बड़े महाराज अर्थात् पूज्य स्वामी श्री विष्णु देवानन्द गिरि जी महाराज दर्शन के लिए हिमांचल प्रदेश के सोलन के राजा कभी-कभी आया करते थे, जो माँ के अनन्य भक्तों में एक माने जाते थे। एक समय जब मैं गिरि जी महाराज के पास बैठा था तभी सोलन के महाराज दर्शन के लिए आये। बड़े महाराज ने पूछा "राय साहब ! क्या आपने माँ का दर्शन किया", उत्तर दिया "हाँ"। पूज्य महाराज ने कहा आप को क्या-क्या अनुभव हुए बताओ। उन्होंने जो अनुभव पूज्य महाराज जी को बताये वे इस प्रकार हैं, उन्होंने कहा–मैं एक समय माँ के पास बैठा था अचानक मन में शंका हुई। माँ तो काली का अवतार हैं फिर इनका गौर वर्ण क्यों ! मैंने मन को समझाया इस प्रश्न से तेरे को क्या लेना है परन्तु शंका बार-बार उठती ही रही। पूछने का साहस नहीं हो रहा था। इतने में माँ ने बहुत जोर से अट्टहास किया। अट्टहास भी थोड़ा नहीं बहुत देर तक चलता रहा। अकारण इतना हँसना कभी नहीं देखा था। मन में डर भी लगा कि आज माँ को क्या हो गया। हँसते-हँसते माँ का रंग इतना काला हो गया जैसे कोयला होता है। जब हंसना बन्द हुआ तो धीरे-धीरे रंग बदला। माँ अपनी शान्त मुद्रा में विराजमान हुईं, तब माँ ने हमसे कहा–"राय साहब ! मन में संकल्प-विकल्प अधिक मत किया करो।" इतना सुनते ही मैं समझ गया, माँ ने मेरी शंका का उत्तर देने के लिए ही यह लीला की थी।

राय साहब ने पूज्य बड़े महाराज को अपनी यह अनुभूति सुनायी। हमारे मन में भी था, माँ से साक्षात् प्रश्न पूछें। जब पूछा तो माँ ने अपनी सूत्र भाषा में उत्तर दिया। इससे विज्ञ जन समझ सकते हैं कि माँ के अल्प शब्दों में कितना सार था और माँ में कितनी शक्ति थी। माँ के स्वरूप को समझना साधारण व्यक्ति का काम नहीं।

कोई माँ जैसा महापुरुष ही माँ के स्वरूप को समझ सकता है। इस शताब्दी के सब से मूर्धन्य विद्वान्, सम्पूर्ण एषणाओं से सर्वथा विरक्त, तत्त्ववेत्ता स्वामी श्री शङ्कर चैतन्य भारती जी महाराज जैसे महापुरुष ही माँ के स्वरूप को जान सकते हैं, अन्य नहीं जान सकते, जिन्होंने वाराणसी में स्वयं जाकर माँ के दर्शन किये।

कुछ अनुभूतियाँ

श्री ज्योतिषचन्द्र राय (भाईजी)

अखण्ड भाव-घन मातृमूर्ति श्री श्री माँ की तुलना केवल विराट आकाश के साथ ही सम्भव हो सकती है। उनके विराट स्वरूप का वर्णन मनुष्य की शक्ति से परे है। तो भी भावग्राही भक्त उनके अलौकिक भाव विलास का मधुमय करुण स्मृतिजाल रचना करते हैं–अपने ही प्रयोजन से मातृ-स्मृति कैसी अमूल्य संपद् है भावग्राही भक्त ही उसके यथार्थ पारखी हैं।

१९१८ ई. में बंगाल के 'ढाका' शहर में मैं नौकरी के सिलसिले में आया। सन् १९२४ के अन्तिम भाग में सुना कि शहर के निकट शाहबाग के बगीचे में एक माता जी ठहरी हैं। बहुत दिनों से तो मौन हैं फिर भी कभी योगासन में बैठ कर मन्त्रोच्चारण करते हुए कुण्डली भर कर बातचीत कर लेती हैं। एक दिन प्रातःकाल जिसे मैं सुप्रभात ही कहूँगा, अपनी आकुल प्रार्थना मन में रख शाहबाग गया और बाबा भोलानाथ के सौजन्य से माँ के श्री चरणों के दर्शन भी प्राप्त हुए। उनकी शान्त योगावस्था तथा कुलवधू-सा भाव, इन दोनों का सुन्दर सामञ्जस्य देख मैं आश्चर्य में पड़ गया और यह भी देखा कि जिनकी प्रतीक्षा में इतने दिनों से बैठा हूँ, जिनकी खोज में देश-विदेश फिरा वही आज मेरे सम्मुख हैं। मेरे मन और प्राण आनन्द से भर उठे, शरीर रोमाञ्चित होने लगा। इच्छा हुई कि चरणों पर गिर पड़ूँ और रो कर कहूँ 'माँ इतने दिन दूर क्यों रखा ?

पहले दिन के साक्षात् में ही माँ ने संकेत किया था कि 'भूख होनी चाहिए' । किन्तु विषयवासना में फँसे प्राणी के लिए यह भूख होनी ही कठिन है जब तक कि हृदय की उद्दाम सांसारिक तरंगें उन्हीं के चरणों में जाकर शान्त न हो जायें। इसीलिए सदैव ही मन ही मन प्रार्थना करता कि माँ, मूर्तिमयी क्षुधा तो तुम्हीं हो, भूख दो। किस प्रकार माँ ने अनेक लीला-रहस्यों द्वारा अपनी अहैतुकी कृपा प्रकट कर मेरे चञ्चल लक्ष्य को अपनी विराट सत्ता की ओर आकर्षित किया, इस सम्बन्ध की कुछ घटनाओं का संक्षेप में उल्लेख करता हूँ।

× × × × ×

एक दिन रात को मैं अपने घर के खुले बरामदे में टहल रहा था, सारा संसार चाँदनी से प्लावित हो जगमगा रहा था। मैंने मुँह घुमाते ही देखा कि माँ मेरे साथ छायामूर्ति की तरह चल रही हैं। उनके बदन पर लाल जम्पर और लाल चौड़े किनारे की साड़ी है। मैं कुछ घण्टे पहले माँ को आश्रम में सफेद जम्पर और लाल फीता किनारे की साड़ी पहने घूमते देख आया था। दूसरे दिन सुबह जाने पर माँ को वही दोनों चीजें पहने देखा और यह भी पता लगा कि मेरे चले आने के बाद किसी ने उनको यह वस्त्र पहनाये थे।

एक दिन शाम को आफिस से लौटने पर मैंने सुना कि कोई आदमी १२ बजे एक बड़ी मछली हमारे घर में रख फिर आने को कह कर चला गया है। उसके बाद फिर वह नहीं देखा गया। मछली पड़ी ही थी। जब शाम तक कोई भी नहीं आया तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर शाहबाग भेज दिये गये। दूसरे दिन सुबह

शाहबाग पहुँचते ही पिता जी ने कहा, "तुम्हारी माँ कल रात हँसते-हँसते कह रही थीं कि 'ज्योतिष तो हमारा भगवान् ही है ।' कल सुबह यहाँ कुछ भक्तों ने प्रसाद पाया था, शाम को जो कीर्तन करने के लिए आये थे उन्होंने भी सुबह के प्रसाद की बात जान प्रसाद के लिए आग्रह किया । घर में उस समय कुछ नहीं था, किन्तु तुम्हारी माँ ने मसाला आदि ठीक कर रखा था उसी समय तुम्हारे घर से खगा मछली ले आया । इसीलिए तुम्हारी माँ ने ऐसा कहा।" मैं तो अवाक् हो गया, कहाँ से कौन व्यक्ति मेरे घर मछली रख गया और उसी से शाहबाग में भक्तों की परितृप्ति हुई ।

× × × × ×

एक दिन बारह बजे के समय मैं आफिस में काम कर रहा था । भूपेन ने आकर कहा–"माँ ने आपको शाहबाग बुलाया है । मैंने माँ को बता दिया था कि आज बड़े साहब छुट्टी से लौटकर अपना चार्ज लेंगे । माँ ने कहा 'जिसकी बात है उससे जाकर कहो, वह जो चाहे सो करे ।' बिना कुछ शंका किये कागजपत्रों को वैसा ही छोड़, बिना किसी से कहे-सुने मैं शाहबाग जा पहुँचा । माँ ने कहा सिद्धेश्वरी आसन में चलो ।' पिताजी, माँ और मैं वहाँ गये । जिस स्थान पर अब स्तम्भ और शिवलिंग है, वहाँ उन दिनों एक कुण्ड था, उसमें माँ जा बैठीं । माँ का खूब, हास्योत्फुल्ल भाव और आनन्दमयी मूर्ति थी । सहसा मैं पिताजी से बोला 'माँ को हम सब श्री श्री माँ आनन्दमयी कहेंगे ।' वे बोले 'अच्छा, ऐसा ही होगा ।' माँ स्थिर दृष्टि से कुछ देर तक मेरी ओर देखती रहीं ।

लगभग साढ़े पाँच बजे हम लौटे । माँ ने मुझसे पूछा 'अब तक तो प्रसन्न था अब देख रही हूँ कि तेरे चेहरे का रङ्ग कुछ बदल रहा है' । मैंने कहा 'घर की ओर मुँह करने से ही आफिस की बात याद आ रही है ।' माँ ने कहा 'कोई चिन्ता की बात नहीं' । दूसरे दिन आफिस जाने पर बड़े साहब ने उस दिन की बात ही नहीं उठायी ।

मैंने माँ से पूछा था, 'ऐसी अवस्था में माँ ! आपने क्यों बुला भेजा ?' माँ ने कहा 'देखा कि इतने महीनों में कहाँ तक पहुँचे हो और सिद्धेश्वरी न जाते तो इस शरीर का नामकरण कैसे होता, यह कहकर वे खूब हँसने लगीं ।

× × × × ×

मेरे हाथ 'साधु-जीवनी' नामक एक पुस्तक आयी । उसमें एक जगह एक उक्ति थी, "वे दरिद्र को अन्नदान करने के लिए सर्वदा अपने भक्तों को उपदेश देते हैं ।" इस उक्ति के पास ही एक नोट मैंने लिख रखा था– "केवल अन्नदान से ही तृप्तिसाधन नहीं होता है ।" घटनाक्रम से यह पुस्तक शाहबाग जा पहुँची और मेरा मन्तव्य भी माँ के कान में पड़ा । इसके कई दिनों बाद मैं सुबह शाहबाग गया । एक आदमी पागल-सा माँ से आकर बोला, "मुझे कुछ खाने को दो, नहीं तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे ।" यह सुन माँ ने रसोईघर तथा भण्डार घर में जो कुछ पाया वह उसको दे दिया । उस आदमी के पानी माँगने पर माँ ने मुझसे कहा, "इसे पानी दो" । पानी देते समय मुझे पता लगा कि वह मुसलमान है तथा तीन दिनों से उसे खाना नहीं मिला था, उस दिन भूख-प्यास की असहनीय ज्वाला से विकल होकर बगीचे की दीवार फाँद

कर आया था । माँ ने मुझसे कहा, "देखा, अन्नदान भी कितना आवश्यक है । यह आदमी तेरी भूल बताने के लिए ही आया था । पात्र और समय के अनुसार सब कुछ ही जरूरी है । इस जगत् में कुछ भी व्यर्थ नहीं होता ।"

× × × × ×

श्री श्री माँ के स्वरूप की धारणा करना हमारी बुद्धि की पहुँच के बाहर है । यद्यपि माँ हर समय कहती रहती हैं, "मैं तो तुम लोगों ही की पगली लड़की हूँ ।" फिर भी इस पगली लड़की के चलने-फिरने की ओट में, उनके क्रीड़ा-कौतुक के पीछे भागवती शक्ति का मूर्तिमय प्रकाश रहता है ।

पश्चिमी मनीषी एमरसन ने कहा है, "संसार में रह कर गृहधर्म अकुण्ठित रूप से निर्वाह करना अथवा निर्जन गिरिकन्दरा में साधन करना सहज है । किन्तु यथार्थ में प्रकृत सत्य और महत्व में वे ही प्रतिष्ठित हैं जो जनता के जीवन के घात-प्रतिघातों में भी निराशा की स्वतन्त्रता और पूर्ण माधुर्य के साथ रह सकते हैं ।"

श्री श्री माँ लोक के कोलाहलपूर्ण अशान्त वातावरण में भी रात-दिन रहती हुई, अपने अक्षय आनन्द का भण्डार सबके लिए उन्मुक्त रखती हैं, उनकी निर्मल शान्त दृष्टि, पवित्र हास्ययुक्त पूर्ण जीवन की स्वच्छन्द गति प्राणिमात्र की अनेक वासनाओं की पूर्ति करती है । इस कारण उनको विश्वजननी का मूर्तिमय रूप कहना अनुचित न होगा ।

●

"मैं सबसे बड़ी भिखारी हूँ । तुम्हारे लोभ मोह अभिमान की भिक्षा माँग रही हूँ तुम्हारे मन्दिर के देवता के चरणों में अर्पण करने के लिए ।"

—श्री श्री माँ

माता आनन्दमयी के दिव्य संस्मरण

पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि माता आनन्दमयी की जन्मशती इस वर्ष मनायी जा रही है । माँ आनन्दमयी एक अलौकिक विभूति थीं । वे आनन्द की साक्षात् मूर्ति थीं । दिव्य भगवती आनन्दमयी के रूप में विराजमान थीं । बचपन से ही उनकी विलक्षण प्रतिभा की कीर्ति इस काशी क्षेत्र में फैल गयी थी । महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जी माताजी की कीर्ति से पूर्णतया परिचित थे । मैं कविराज जी के माध्यम से ही उनके विषय में प्रारंभ से ही जानकारी प्राप्त करता रहा । जब माताजी बंग प्रदेश से काशी आयीं और उनका यश यहाँ फैलने लगा, तभी से मैं उनकी विलक्षण आध्यात्मिक प्रतिभा को जानने लगा ।

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि पण्डित और सन्त में क्या अन्तर है ? शास्त्र पढ़कर अध्यात्म चिन्तन को उद्‌बुद्ध करने वाला व्यक्ति पण्डित कोटि में आता है और स्वतः अपने अन्तःकरण से गम्भीर अध्यात्म चिन्तन को उद्‌बुद्ध करने वाला व्यक्ति सन्त कोटि का होता है । माता आनन्दमयी पढ़ीं-लिखी तो नहीं थीं किन्तु उन्हें गम्भीर अध्यात्म चिन्तन में अलौकिक तथ्यों का सम्यग् ज्ञान था । अध्यात्म तत्त्व का बोध उन्हें बाल्यकाल से ही था । गम्भीर से गम्भीरतर अध्यात्म तत्त्व विषयक जिज्ञासाओं का समाधान वे बड़े ही सहज भाव से करती थीं ।

मुझे एक प्रसङ्ग स्मरणपथ में आता है । एक बार ढाका में विद्वानों की एक सभा में भारतवर्ष के प्रतिष्ठित विद्वान सम्मिलित हुए थे । उस समय माता आनन्दमयी का आध्यात्मिक यश फैल रहा था । बंगाल के विद्वानों ने अन्य प्रान्तीय विद्वानों से माँ आनन्दमयी से मिलने का आग्रह किया । जिज्ञासावश कुछ लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान माताजी से मिले और उनसे दर्शन विषयक अनेक गम्भीर प्रश्न किए । माताजी ने उनके कठिन से कठिन प्रश्नों का भी उत्तर अत्यन्त सरल एवं सुबोध भाषाशैली में देकर उन्हें सन्तुष्ट किया । यह थी उनकी विलक्षण आध्यात्मिक प्रतिभा ।

आचरण की शुद्धता पर माताजी विशेष बल देती थीं । एक बार मैं अपने एक शिष्य के आग्रह पर गीताजयन्ती में सम्मिलित होने के लिए टाटानगर जमशेदपुर गया । वहाँ माताजी का भी पदार्पण हुआ था । वहाँ उन्होंने अपने भक्तों को उपवास करने का निर्देश दिया । कोई भी भक्त चाय, धूम्रपान आदि नहीं कर सकता था । भक्तों ने उनके आदेश का श्रद्धापूर्वक पालन किया । फिर उनका गीता पर प्रवचन हुआ, कीर्तन-भजन हुआ । वहीं मुझे माताजी ने कहा-"जब आप काशी रहते हैं तो जब मैं काशी आऊँ तो आप मुझसे मिलें" । उसके बाद माताजी जब भी काशी पधारती थीं तो मैं उनका दर्शन करता था ।

माताजी में अलौकिक चमत्कार शक्ति थी । एक बार मैं दिल्ली गया । वहाँ मैं एक स्वामीजी से मिलने गया । स्वामी जी रुग्णावस्था में थे । उनके डाक्टर का कहना था कि स्वामी जी चन्द घण्टों के मेहमान हैं । उसी समय माताजी भी स्वामीजी को देखने आयीं । माताजी के आने से लोगों को कुछ आशा बँधी, किन्तु डाक्टर ने कहा-"माताजी क्या करेंगी ? स्वामीजी तो इतने रुग्ण हैं कि उनका बचना असंभव है" । माताजी स्वामी जी को आशीर्वाद देकर चली गयीं । स्वामीजी स्वस्थ हो गये । दो दिनों के बाद वही डाक्टर स्वामीजी को स्वस्थ देखकर विस्मित हुए । यह था करुणामयी माताजी का आध्यात्मिक चमत्कार ।

माताजी दया की प्रतिमूर्ति थीं । महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जी असाध्य रोग से ग्रस्त हो गये थे । ममतामयी माताजी ने ही उनका विधिवत् उपचार कराया, जिससे उन्हें जीवनदान मिला । माताजी से उपकृत कविराज जी अन्ततः उन्हीं के आश्रम में रहने लगे और वहीं उन्होंने चिरसमाधि भी ली ।

माताजी का संस्कृत के प्रति अगाध अनुराग था । उन्होंने संस्कृत प्रचार के लिए अपने आश्रम में संस्कृत कन्या विद्यालय की स्थापना की । यह विद्यालय कन्याओं के संस्कृत अध्ययन का प्रमुख केन्द्र है । शिक्षा के विषय में माताजी की दृष्टि उदार थी । उनकी मान्यता थी कि संस्कृत के ज्ञान से ही कन्यायें दक्ष एवं सुसंस्कृत गृहिणी बन सकती हैं । उनके आश्रमस्थ सं. विद्यालय में दूर-दूर से आकर कन्यायें शिक्षा ग्रहण करती हैं । बहुत सी छात्रायें आश्रम में ही रहकर विद्याध्ययन करती हैं । उन्हें वहाँ सदाचार की समुचित शिक्षा दी जाती है ।

माताजी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की पक्षधर थीं । उन्होंने अपने आश्रम में उसी प्राचीन शिक्षापद्धति को प्रश्रय दिया, जिसमें गुरु-शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त उदात्त था । एक गुरुकुल में रहकर वहाँ के आचार्य से सम्पूर्ण विद्या को प्राप्त करने की प्राचीन परम्परा में माताजी का विश्वास था । इसीलिए उन्होंने अपने आश्रम में आवासीय विद्यालय की व्यवस्था की । जो छात्र एक गुरु और पीठ को छोड़कर अन्य गुरु और पीठ का आश्रय लेता था, वह तीर्थ काक कहा जाता था, यह प्राचीन मान्यता थी । महाभाष्य में कहा भी गया है– **"यथा तीर्थे काका न चिरं स्थातारो भवन्ति एवं यो गुरुकुलानि गत्वा न चिरं तिष्ठति, स उच्यते तीर्थ काक इति"** (पाणिनि सूत्र 2।1।42 पातञ्जलभाष्य) ।

माताजी की आध्यात्मिक शक्ति से पं. जवाहरलाल नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी दोनों बहुत प्रभावित थे । इन्दिरा गान्धी माताजी का आशीर्वाद लेने प्रायः आती थीं । माताजी ने उन्हें एक माला और आसन देकर भगवद् भजन करने का निर्देश दिया था । माताजी के आदेश से ही इन्दिरा जी ने अपने आवास में एक पूजागृह की व्यवस्था की थी । वहाँ जो पण्डित पूजा करते थे, वे हमारे परिचित थे । इस प्रकार माताजी के उपदेश ऐसे लोग भी ग्रहण कर अपने को धन्य मानते थे, जो राजनीति में नितान्त व्यस्त और धर्म से विशेष जुड़े नहीं थे । यह माताजी के सन्त स्वभाव का ही प्रभाव था कि नास्तिक भी आस्तिक बन जाते थे ।

दुखी प्राणियों के प्रति माताजी के हृदय में अपार करुणा थी । दीन-असहाय लोगों की समुचित चिकित्सा के लिए उन्होंने एक चिकित्सालय की भी स्थापना की थी, जिसका उद्घाटन श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने किया था ।

यह है माता आनन्दमयी की अध्यात्मपरायण लोकोपकार भावना, जिसकी शीतल छाया में सभी को परम विश्रान्ति का अनुभव होता है । माताजी का दिव्य आध्यात्मिक संदेश सबके लिए कल्याणकारी हो, यही हमारी मंगल कामना है ।

●

स्वरूप प्रकाश

'परिव्राजक'

माँ की स्वमुख-निःसृत वाणी से श्री श्री माँ के स्वयं प्रकाश स्वरूप का आभास मिलता है ।

1. माँ के श्रीमुख से निःसृत **"पूर्ण ब्रह्मनारायण"** ।

2. **यह शरीर तो तुम्हारे पास सदा के लिए है । तुम लोग भूल जाते हो । इस छोटी बच्ची को हटाने से भी नहीं हटेगी ।"**

कुछ प्रत्यक्ष घटनाओं में माँ ने स्वरूप निर्देश किया है:

कई वर्ष पहले की बात है । वृन्दावन आश्रम में एक रासमंच है, उसके सामने खुली जगह है–वहाँ माँ घूम फिर रही थीं । दोनों ओर कुछ आश्रमवासी और गृहस्थ भी थे । अचानक माँ खड़ी हो गयीं और कहने लगीं–**"आँख में उँगली डालकर चलते फिरते आत्मपरिचय, यही भगवान हैं । फिर भी जीव स्वभाव, दूसरे क्षण भूल जाते हैं । इससे ज्यादा प्रकाश क्या हो सकता है, लेकिन एक अभय आश्वासन है–पारस के संग से लोहा भी सोना हो सकता है तो ब्रह्म के संग से अवश्य ही कल्याण होगा, अभी भी कल्याण करते हैं और कल्याण होता रहेगा ।"**

× × × ×

श्री श्री माँ के परम अनुगत भक्त श्री उपेन महाराज के अनुभवः–

पूज्य उपेन बाबा दीर्घकाल तक श्री श्री माँ के निर्देशानुसार विभिन्न आश्रमों में रहते थे । आपकी हार्दिक इच्छा यही रहती थी कि किसी प्रकार माँ की कुछ सेवा कर सकें । एक बार जब आप राजगृह में माँ के साथ थे, तो नित्य प्रातः चार बजे माँ के लिए बाहर से आप गाय का दूध लाया करते थे । इतने प्रातः ठंड में बाबा को कष्ट होता होगा विचार कर स्वामी चिन्मयानन्द जी ने आप से कहा–'बाबा अब दूध मैं ले आया करूँगा ।' ऐसा ही हुआ । बाबा उस समय कुछ नहीं बोले ।

तीसरे दिन आप अपना बिस्तर बाँधने लगे । यह देखकर स्वामी परमानन्द जी ने पूछा, "बाबा बिस्तर क्यों बाँध रहे हैं"? बाबा ने, अत्यन्त उदास होकर उत्तर दिया–'महाराज, अब तो माँ की कोई सेवा नहीं कर सकता, अब मैं यहाँ रहकर क्या करूँगा ?'

स्वामी परमानन्दजी के कहने पर स्वामी चिन्मयानन्दजी ने बाबा से कहा–"बाबा ! मैंने तो आप को ठंड में कष्ट न हो इसी लिये दूध लाने से मना किया था, पर अब से आप ही लावें ।" इतना सुनते ही बाबा का उदास चेहरा खिल उठा ।

× × × ×

एक बार श्री श्री माँ ने बाबा के विषय में किसी बात को लेकर कहा कि, "बाबा का भाव बिल्ली के बच्चे जैसा है । बाबा एक दो दिन कुछ विचार करते रहे एवं जाने के लिए बिस्तर बाँधने लगे । यह देखकर

स्वामी परमानन्दजी ने पूछा–"बाबा ! कहाँ जा रहे हो ? बाबा ने खिन्न मन से उत्तर दिया–"महाराज, यह ब्राह्मण शरीर है आज तक माँस मछली का स्पर्श भी नहीं किया है । अब अगले जनम में बिल्ली का बच्चा बनकर चूहे खाने पड़ेंगे, माँ की बात तो असत्य हो नहीं सकती ।" यह सुनकर स्वामी परमानन्द जी हँसने लगे एवं माँ से जाकर कहा–"माँ ! बाबा जा रहे हैं " । माँ के पूछने पर स्वामीजी ने पूरी बात बतायी । माँ ने बाबा को बुलाया और उनको समझाते हुए कहा–"बाबा यह शरीर तो तुम्हारे शरणागत भाव के विषय में कह रहा था " तब जाकर बाबा का समाधान हुआ ।

× × × ×

पूज्य उपेन बाबा माँ से कुछ कहते नहीं थे । एक बार जब माँ विन्ध्याचल में थीं, तब उन्होंने पूछा, "माँ श्रीमद्भगवत गीता में जो विश्वरूप दर्शन की बात है वह क्या है ?" सुनकर माँ ने कहा– "बाबा ! तुम तो इस शरीर से कुछ पूछते नहीं । आज यह प्रश्न कैसे ?" बाबा मौन रहे ।

इसके चार पाँच दिन पश्चात् बाबा प्रातः काल शौच के लिए जंगल में गये थे । उन्होंने देखा कि माँ सामने पत्थर पर बैठी हैं । बाबा संकोच से खड़े हो गये एवं कुछ दूर जाकर पुनः शौच के लिए बैठे । परन्तु पुनः देखा कि माँ वहाँ भी सामने बैठी हैं । अब तो बाबा जहाँ भी देखते वहीं उन्हें माँ दिखाई देने लगीं । भूमि, जल, सूर्य, किरण, आकाश, वायु सर्वत्र मातृ दर्शन करके उन्हें लगा कि मुझे कुछ हो तो नहीं गया । ऐसा विचार करके उन्होंने अपने हाथ पर चिकोटी काटी, वहाँ भी उन्हें माँ के दर्शन हुए । जब वे चलने लगे तो मिट्टी पत्थर सब में उन्हें माँ के दर्शन होने लगे । बाबा को संकोच हुआ माँ के ऊपर पैर कैसे रखें ? अन्त में किसी प्रकार आधे नेत्र बन्द करके आश्रम में पहुँचे । माँ उस समय बरामदे में बैठी थीं । बाबा के मुख पर विशेष भाव देखकर माँ ने मुस्कुराते हुए पूछा–"बाबा, क्या हुआ ?

भावावेग के साथ बाबा ने प्रत्युत्तर में माँ से कहा "माँ विराट् रूप होकर भी बच्ची बनकर हम अज्ञ जीवों को क्यों भुलावे में रखती हो" । माँ सुनकर हँस पड़ीं ।

●

श्री श्री माँ के अनुग्रह-महाह्रद में पैठने का सुखद क्षण

प्रो. विष्णु दत्त राकेश

हरिद्वार पूज्य माँ की सन्निधि में हरिद्वार आश्रम में संयम सप्ताह के दौरान मैं शिवपुराण का प्रवचन कर रहा था । अपार भीड़ माँ के दर्शनों के लिए उमड़ी हुई थी । उस दिन भगवान् शिव के वर वेश का वर्णन करते हुए मैंने कहा कि मैना को वर वेश में छिपे कंकाल रूप का दर्शन कराना भगवान् शिव का विशेष अनुग्रह था । वह तारक मंत्र दाता हैं, क्योंकि चिरन्तन सत्य का प्रत्येक क्षण साधक को अनुभव कराते रहना उनका सहज स्वभाव है । शरीर पर भस्म धारण कर वह 'भस्मान्तं शरीरम्' श्रुति की सार्थकता प्रतिपादित करते रहते हैं । कुमारिल भट्ट जी ने इसीलिए उन्हें 'विशुद्ध ज्ञान देह' कहा है । विशुद्ध ज्ञान देह की दृष्टि त्रिवेद होती है । अतः 'विशुद्ध ज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे' वन्दना अपने भीतर वेदान्त तात्पर्य को बड़ी सुन्दरता के साथ समाहित किए हुए है । प्रवचन समाप्त हुआ और माँ प्रभात की अरुणाभा की तरह पवित्र मुस्कान विखेरती हुई सभामण्डप से विश्रामकक्ष की ओर चली गईं । मैं भी आत्मविभोर होकर अपने आवास पर चला आया ।

सहसा रात्रि 10 बजे माँ की आज्ञा से बम्बई के सुप्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डा. सोमानी अपने मित्र श्री भीमानी के साथ गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय परिसर स्थित मेरे आवास पर पधारे और बोले, आपको सपरिवार श्री माँ ने अभी बुलाया है, मेरे साथ तुरन्त चलें । मैं अपनी पत्नी तथा छोटे पुत्र के साथ माँ के दर्शनार्थ डा. साहब के साथ चल दिया । आश्रम में जाकर देखा, माँ अपने कक्ष में दुग्धधवल वस्त्र पहने तखत पर बैठी हुई थीं । तखत पर सफेद चादर बिछी हुई थी, स्वच्छ चाँदनी की तरह फर्श के कालीन पर भी सफेद चाँदनी फैली हुई थी । दूधिया बल्व से मद्धिम-मद्धिम रोशनी बिखर रही थी । श्री माँ का मुख श्वेत पुण्डरीक की तरह खिला हुआ था और श्यामल केशराशि मधुकरों की तरह छितराई हुई सुशोभित हो रही थी । हमें सपरिवार माँ के चरण-स्पर्श करने का दिव्य अवसर माँ की करुणा से सहज उपलब्ध हो गया । यों माँ के चरणस्पर्श करने की मनाही थी और उनकी सेविकाएँ इस बात का सदैव ध्यान रखती थीं । महाशक्ति की करुणा तत्त्वज्ञान का भी मूल कारण है, ऐसा माँ का मानना था । वह बोलीं-बाबा यह दिव्य करुणा का जो भाव है यह पराम्बा की उपासना के अधीन समझना चाहिए और उपासना भी स्वतंत्र नहीं, वह भी उनकी करुणा का विशेष फल होती है । जब तक वह कृपा नहीं करती तब तक साधक उपासना में भी प्रवृत्त नहीं हो सकता । वह जिसे चाहती हैं, उसी को ऋषित्व, देवत्व, तत्त्वज्ञान, मेधा प्रदान करती हैं । श्रुति कहती भी है–

यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तं ऋषिं सुमेधाम् ।

कामना प्राप्ति के लिए राजा सुरथ तथा मुक्ति प्राप्ति के लिए समाधि वैश्य की उपासना करुणा सिद्ध कही जा सकती है। मातृरूप से स्वयं को अभिन्न समझने की वृत्ति उपासना का उत्कृष्ट रूप है। महर्षि अंभृण की कन्या वाक् तथा महर्षि वामदेव की उपासना इसी कोटि की रही है। 'अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि' तथा 'गर्भेनु सन् नन्वेषामवेदहम्' श्रुतियाँ इस का समर्थन करती हैं। यह 'परम साम्य' की अनुभूति या परमशक्ति से एकत्व भाव की सिद्धि मोक्ष कहलाती है। इसी को आगमों में स्वरूपाद्वैत कहा गया है।

श्री माँ ने कुछ देर मौन होकर पुनः नैमिषारण्य पुराणपीठ की चर्चा की। उन्होंने पुराण पुरुष का सांगोपांग चित्रण किया। आचार्य पण्डित बलदेव उपाध्याय के 'पुराण विमर्श' में श्लोक सहित पुराण पुरुष का चित्र दिया गया है। मेरे सुखद आश्चर्य का क्षण था वह, जब श्री माँ ने उस चित्र के प्रतीकों का रहस्योद्घाटन प्रारंभ किया। श्रुति-स्मृतियाँ सब माँ की वाणी पर विराजमान थीं। श्री माँ की इच्छा थी कि मैं उस पीठ पर जाकर पुराणों के अनुसन्धान का कार्य करूँ, पर तब मेरे अध्यापक डा. धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री यह कार्य कर रहे थे। उनके द्वारा सम्पादित मार्कण्डेयपुराण की विस्तृत अनुशीलनात्मक भूमिका मैंने लिखी थी। श्री माँ ने इस सिलसिले में महामहिम डा. चेन्ना रेड्डी तथा आचार्य गौरीशंकर जी की भी प्रशंसा की। इसी अवसर पर उन्होंने बताया कि वह निर्वाणी अखाड़े के महन्त श्री गिरिधर नारायण पुरी जी से दश महाविद्याओं के शास्त्रोक्त मन्दिर-निर्माण कराने का आग्रह कर चुकी हैं तथा मुझे दश महाविद्याओं के स्वरूप पर स्वतंत्र पुस्तक लिखनी चाहिए। श्री माँ के पावन आदेश का पालन हुआ और ये दोनों कार्य भव्य रूप से सम्पन्न हुए।

श्री माँ अक्षमाल को जप के लिए सर्वोत्तम मानती थीं। माँ का कथन था कि सब मंत्र वर्णात्मक होते हैं और समस्त वर्ण शिवात्मक होते हैं, अतः जहाँ तक वर्ण या नाद का प्रसार है, सब शिव रूप ही है।

मंत्र वर्णात्मकाः सर्वे, सर्वे वर्णा शिवात्मकाः।

क्योंकि सम्पूर्ण वर्णराशि 'अ' से लेकर 'क्ष' पर्यन्त सिमट जाती है, अतः अक्ष कहने से सम्पूर्ण वर्णात्मक मंत्रों का कथन हो जाता है। सम्पूर्ग शक्ति चक्र अक्ष में निहित है। मैंने श्री माँ से पूछा–'माँ, समयाचार तथा वामाचार में कौन मार्ग श्रेष्ठ है ?' श्री माँ ने कहा –बाबा, यह भेद तात्विक नहीं, प्राप्य तो दोनों का एक है। भगवती जब विश्व का वमन करती हैं, वामेश्वरी कहलाती हैं। अतः सृष्टि क्रम का उपासक वामाचारी कहलाता है पर जब संहार क्रम दृष्टि में रहता है तब समयाचारी कहलाता है। समय शब्द का अर्थ है 'समं साम्यं याति प्राप्नोति इति समयम्।' भगवती त्रिपुरसुन्दरी से 'परमं साम्यं' प्राप्त करना ही उसका पुरुषार्थ होता है।

तब तक श्री माँ की सेविकाएँ वहाँ आ गईं और श्री माँ ने उन से कहा–बाबा को प्रसाद दो। माँ ने कहा–बाबा कहो क्या चाहते हो ? मैंने कहा–आपकी कृपा पाकर पाने को बचा ही क्या है ? माँ बोलीं–बाबा तुम पर भगवान की कृपा है। उस दिन मेरे, मेरे बेटे वागीश तथा मेरी पत्नी डा. शैलजा के सिर पर अपना कृपाहस्त रखकर माँ ने वह सब कुछ दे दिया, जिसे पाने के बाद कुछ पाने की इच्छा नहीं रह

जाती। कुछ कहने या सुनने को नहीं रह जाता। उस आनन्द की स्थिति का हमने उस दिन अवाक् अनुभव किया, लगा, मेरा ही यह सारा वैभव है–'सर्वो ममाऽयं विभवः' । और तुरन्त शैवागम का यह श्लोक स्फुरित हुआ-

सर्वो ममाऽयं विभव इत्येवं परिजानतः
विश्वात्मनो विकल्पानां प्रसरेऽपि महेशता ।

डा. सोमानी मुझे सपरिवार गुरुकुल छोड़ने आए। इस के बाद अघटित घटनाएँ मेरे परिवार में घटित हुईं। एक घटना से तो मैं अत्यन्त विचलित हो गया पर उस संकट की घड़ी में श्री माँ को अपने समीप सशरीर उपस्थित देखकर मैं चकित हो गया। यह वटना अर्धरात्रि को अपने बड़े पुत्र डा. विधुशेखर के अत्यन्त अस्वस्थ हो जाने पर चण्डीगढ़ अस्पताल में मैंने अनुभव की। माँ की कृपा से उसे जीवनदान मिला। देवशक्तियों का वह समेधित प्रभाव था। आज वह बालक एम.डी. कर जीवन के सार्वजनिक क्षेत्र में पदार्पण कर रहा है। १४ जनवरी, १९९५ को महन्त गिरिधर नारायण जी पुरी के योगी शिष्य श्री अर्जुन पुरी जी ने माँ द्वारा प्रदत्त रेशमी उत्तरीय तथा रेशमी धोती अकस्मात् डा. विधुशेखर के लिए जब पत्र लिख कर मुझे भिजवाई तब श्री माँ का नैकट्य पुनः अनुभव हुआ। श्री माँ करुणा रूप में निरन्तर हमारे मध्य हैं, कौन कहता है कि वह अब नहीं रहीं ? काय तथा कालसापेक्ष अनुभूति से वह दूर कहीं जा सकती हैं पर आनन्द रूप में उनकी नित्य सत्ता है। सुन्दर न होने पर भी उनकी सत्ता विश्व को अपने जैसा बना देती है अर्थात् जड़ता में चेतनभाव ला देती है, प्रपंच में जड़ता के स्थान पर वैसे ही चेतनभाव की प्रतीति होने लगती है जैसे कोयले के धधकते अंगारों में अग्नि का अनुभव होता है। शिवसूत्र कहता भी है–'अललामे विश्वमात्मसात्करोति।'

घटनाएँ तो और भी हैं पर उन सब को लिखने का समय नहीं है। उस एक रात का अनुभव ही यहाँ लिख सका हूँ जिसके कृपा-प्रकाश से अंधकार में अग्नि प्रज्ज्वलित ईंधन दृष्टिगोचर हो सका और यह विश्वास दृढ़ हो सका कि चित्त ही अन्तर्मुखी ध्यान द्वारा चेतनाभिमुख ऊपर उठकर चिति रूप हो जाता है–

तत्त्व परिज्ञाने चित्तमेव अन्तर्मुखीभावेन चेतनपराध्यारोहात् चितिः।

●

स्वागत

मुक्तेश

रामनगर से हरिद्वार आते वक्त माँ को काली कमलीवाले के यहाँ हो रहे सत्सङ्ग में ले जाया गया। हरि बाबाजी, शरणानन्दजी आदि साधु भी माँ के साथ गये थे। वहाँ बहुत सुन्दर प्रबन्ध था। वहाँ माँ के बारे में एक गीत बनाकर प्रस्तुत किया गया था। वह यों है–

आज कोई शुभ कारण है,
वायु में सुगन्धि आती है।
गङ्गा की हर लहर आज,
इठलाकर चलती जाती है ॥

साधु महात्मा ऋषि-मुनि,
सुन्दर प्रवचन सुनाते हैं।
इस तपोभूमि के भक्त आज
मिल कर कुछ कहना चाहते हैं ॥

कानों से सुनते थे महिमा,
आँखें दर्शन को अकुलाईं।
हुए आज हमारे धन्य भाग्य,
आनन्दमयी माँ यहाँ आयीं ॥

ध्यानावस्थित बुद्ध के समान
मस्तक पर तेज दिखाता है।
महिमा कवि क्या बखान करे,
कुछ वर्णन में नहीं आता है ॥

यहाँ राम भरत ने तप किया,
मधु कैटभ यहाँ पर मारा है।
यह तपोभूमि ऋषियों की है,
माँ यह स्थान तुम्हारा है ॥

भारत के कोने-कोने में,
तेरे नाम का आदर करते हैं।
सत्सङ्ग भवन में आज सभी,
हृदय से स्वागत करते हैं ॥

गङ्गा जी पाप को हरती हैं,
चन्द्रमा ताप को हरता है ।
आनन्दमयी माँ का दर्शन
सब पाप ताप को हरता है ।।

यह सारा विश्व आपका है,
हृषिकेश को भूल न जाना तुम,
सत्सङ्ग भवन में कृपा कर,
पग धर सुधा बरसाना तुम ।।

जय काली कंमलीवाले की,
सङ्ग हो गङ्गे माता की जय ।
'मुक्तेश' बोले फिर एक बार
आनन्दमयी माता की जय ।।

●

शत-शत प्रणाम

आशा शिवपुरी

दिये तुमने अनेक अवसर
जब कर रही थी कृपा वितरण
अज्ञान-अभिमानवश यह देह
दूर खड़ी रही विमूढ़तावश ।

नत मौलि कर प्रणाम शत-शत
कृपा-वर्षण की चाह अनवरत
प्रारब्ध कटे, कर्म छूटे, चक्र घटे
देह-अवसाने विलय असत-घट

शतवर्ष के शतदल कमल
कर रही माँ अर्पित तव चरण,
शत सहस्र पंकज पिरोकर
चाह रही तव भक्ति विमल ।

तुम दृष्टि से हो अगोचर
ढूँढ़ता हृदय है तुमको खोकर
जब थी तुम पास हमारे
पहचान न सके तुमको मोह कर ।

●